बाग़े-जन्नत यानी ख़ुदाई बाग़

मुसन्निफ़

मौलाना इनायत अली शाह

ख़लीफ़ा

हज़रत मौलाना अब्दुल अली गंगोही रह.

हरफ़े आग़ाज़

अमा बाअद, बाग़-ए-जन्नत यानी खुदाई बाग़। हकीमुल उम्मत मुजद्दिद उल मिल्लत, क़ुतबे दौरां, क़ुतबुल अलूम, शेख़ उल मशाइख़ हज़रत हाफ़िज क़ारी अलहाज शाह मौहम्मद अशरफ़ अली साहब थानवी क़ुद्स सरा के ख़लीफ़ाए ख़ास हज़रत हाफ़िज़ सैय्यद इनायत अली शाह साहब मद ज़िल्ला-उल आला हैं और यह किताब ज़ेरे नज़र उन्ही की लाज़वाल तसनीफ़ है जिसमे राक़िमउल हरुफ़ के मुर्शिदी ने अपने दौर के मुताबिक़ ज़िन्दगी के हर शोबे में इस्लामी तालीमात की तौज़ीह फ़रमायी है। मुसलमानो की अमली ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नही है जिसमें वो अपने दीने इस्लाम की असली तालीमात से दूर न हटते चले गये हो।

हज़रत मम्दूह ने इस किताब में अमल की इन कोताहियों की इन्तेहाई हमदर्दाना तौर पर निशानदही फ़रमायी है और फिर उन्हें दूर करने की मौअस्सिर तदाबीर भी बतायी हैं। यह किताब दरहक़ीक़त एक सिलसिलाए मज़ामीन है जो सबसे पहले खुदाई बाग़ के नाम से इज़मालन शाये हो चुके हैं। चुनांचे मेरे पीर भाई सूफ़ी शमीम अहमद एडमिनिस्ट्रेटर मार्कीट कमैटीज़ नेज़ दूसरे पीर भाई सूफ़ी ज़मान अल्लाह बख़्श साहब पेंशनर पोस्ट मास्टर मुकीम फ़ैसलाबाद, गली नं० 11, मौहल्ला गुरु नानक पुरा की भी यही आरज़ू थी कि यह मज़ामीन तफ़सीलन शाये हों। आख़िर पीर-ओ-मुर्शिद हाफ़िज़ साहब ने राये ज़ाहिर की, कि इसकी तबाअत व अशाअत का एहतमाम किया जाये, जिसकी किताबत सूफ़ी शमीम अहमद एडमिनिस्ट्रेटर के तआवुन से मेरे रूहानी भाई मुर्शिद-ज़ादा साहब-ज़ादा सैय्यद जमील उल हसन मज़लूम ने अपने अख़बार नवाये गूजरॉवाला के खुशनवीस मिस्टर रफ़ीअल्लाह से करायी जिसकी अग़लात की तसही दूसरे साहबज़ादे सैय्यद मौहम्मद अहसन बैंक आफ़ीसर ने की।

यह किताब पीर-ओ-मुर्शिद हज़रत हाफ़िज साहब ने अपनी उम्र के आख़िरी हिस्से में मुकम्मल की। हज़रत मम्दूह की उम्र इस वक़्त एक सदी के क़रीब है और अवाम ख़सूसन मुरीदीन इस अन्दाज़ बयान से बहुत ज़्यादा मानूस हो चुके हैं। इसलिए ज़रूरत महसूस हुई कि इसको जल्द शाये कराया जाये। बहरकैफ यह बेमिसाल और नायाब तोहफ़ा की सूरत किताबे हाज़ा आपके सामने है। इन्शाअल्लाह तआला किताब की तहरीर और ज़रूरी मसाईल नेज़ नग़मों को आम उर्दू खुवाँ हज़रात पूरी तरह समझ सकेंगे।

खादिम हक़ीर फ़क़ीर "अमीरउद्दीन"

16/1 आर्डिनैन्स रोड, रावलपिंडी कैन्ट

विषय सूची

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
1	ईमान लाने और मुसलमान होने की ख़ूबियाँ	1
2	ईमान किस तरह मज़बूत होता है	5
3	ईमान न लाने की सज़ा और अज़ाब	6
4	सवाल—फरिश्ते कौन होते हैं	7
5	रसूल और नबी किसको कहते हैं, मौजज़ा और मैराज क्या है ?	8
6	अल्लाहतआला की किताबों का बयान	10
7	क़यामत, पुलसिरात, कौसर क्या चीज़ हैं	11
8	सहाबा कौन लोग होते हैं	12
9	दीन पर चलने का सही रास्ता बतलाओ	13
10	इमामों का बयान	15
11	हज़रत इमाम आज़म के हालात-ए-शरीफ़ा	16
12	हज़रत इमाम आज़म की वफ़ात शरीफ़ा	17
13	हज़रत इमाम शाफ़ेई के हालात-ए-शरीफ़ा	18
14	हज़रत इमाम मालिक के हालात-ए-शरीफ़ा	19
15	हज़रत इमाम अहमद के हालात-ए-शरीफ़ा	19
16	हज़रत इमाम यूसुफ के हालात-ए-शरीफ़ा	20
17	हज़रत इमाम मौहम्मद के हालात-ए-शरीफ़ा	21
18	हज़रत इमाम बुख़ारी के हालात-ए-शरीफ़ा	21
19	हज़रत इमाम मुस्लिम के हालात-ए-शरीफ़ा	21
20	इमामों की तक़लीद करने का मसला	22
21	उलमा-ए-बाअमल की बुज़ुर्गी	23
22	मौलवी किसको कहते हैं ?	23
23	बैअत करना सुन्नत है	24
24	मशाइख़ यानी पीरों का तरीक़ा कैसा है ?	24
25	वली किसको कहते हैं ?	26
26	कामिल पीर की पहचान	27

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
27	अल्लाह तआला को याद करने की बुज़ुर्गी	28
28	जिन और शैतान क्या बला हैं	34
29	हज़रत आदम का दुनिया में तशरीफ़ लाना	35
30	हज़रत आदम की तौबा का क़बूल होना	38
31	हज़रत आदम अ० की वफ़ात शरीफ़	39
32	जन्नत किस चीज़ का नाम है ?	41
33	जन्नत कहाँ पर है ?	42
34	जन्नत में नहरें	43
35	जन्नत में हूरें और ख़ादिम	43
36	जन्नत में औलाद से मिलना	44
37	जन्नत में फल और गोश्त	44
38	जन्नत में अल्लाहतआला का दीदार	44
39	दोज़ख़ क्या चीज़ है ?	46
40	दोज़ख़ कहाँ पर है ?	46
41	दोज़ख़ में आग के जूते	47
42	दोज़ख़ का एक बड़ी भारी साँप	48
43	दोज़ख़ की चीख़	48
44	हज़रत जिबराईल का आना और दोज़ख़ की ख़बर लाना	49
45	बड़े-बडे गुनाहों का बयान	53
46	अच्छे काम करने से अच्छे नाम मशहूर हो जाते हैं	55
47	बुरे कामों की सज़ा दुनिया में भी मिलती है	56
48	ज़लज़ला क्यों आता है ?	58
49	ज़ालिम को ज़ुल्म करने की सज़ा	58
50	मज़लूम की मदद करने की बुज़ुर्गी	60
51	मुसलमान भाइयों के हक़ूक़ अदा करने की बुज़ुर्गी	60
52	शिर्क करने की सज़ा	62
53	नाहक़ ख़ून करने की सज़ा	63
54	शराब पीने का सज़ा	63

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
55	शराबी से मेल-जोल रखने की सज़ा	64
56	सूद लेने की सज़ा	64
57	माँ-बाप को तकलीफ़ देने की सज़ा	65
58	इन बातों में वलिदैन की ताबेदारी नही	67
59	औलाद को ज़्यादा मारना-पीटना ज़ुल्म है	68
60	यतीमों का माल खाने की सज़ा	68
61	यतीमों पर रहम करने की बज़ुर्गी	69
62	ग़ीबत करने की सजा	70
63	तकब्बुर करने की सज़ा	71
64	ज़िना करने की सज़ा	72
65	ज़िना करने वालों के लिए दोज़ख़ का तनूर	73
66	दय्यूस किसको कहते हैं?	73
67	पर्दे का बयान	74
68	मसला ग़लत बतलाने की सज़ा	75
69	दूसरे के घर में झाँकने की सज़ा	77
70	बेअमल नसीहत करने की सज़ा	77
71	झूठ बोलने की सज़ा	77
72	झूठी गवाही देने की सज़ा	78
73	किसी की ज़मीन दबा लेने की सज़ा	78
74	चुग़ली खाने की सज़ा	78
75	वादा पूरा न करने की सज़ा	79
76	मुसलमान का ऐब खोलने की सज़ा	79
77	हमसाये को तकलीफ़ देने की सज़ा	79
78	ग़ैर मुस्लिम पड़ौसी के हक़ूक	81
79	कंजूस की सज़ा	81
80	हराम माल खाने की सज़ा	82
81	बोहतान लगाने की सज़ा	82
82	डाकू और चोर की सज़ा	83

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
83	लड़कियों को मीरास का हिस्सा न देने की सज़ा	83
84	काफ़िरों के तरीक़े अख़तियार करने की सज़ा	84
85	बेवा के निकाह को ऐब समझने की सज़ा	85
86	कुत्ता और तस्वीर रखने की सज़ा	87
87	टख़नों के नीचे तहबन्द लटकाने की सज़ा	87
88	रिश्तेदारों को छोड़ देने की सज़ा	88
89	अपनी जान के हक़ूक़	89
90	मज़लूम को तकलीफ़ देने की सज़ा	90
91	गुस्सा करने की सज़ा	90
92	पूरा मुसलमान किसको कहते हैं?	91
93	निकाह करने का बयान	92
94	निकाह करने की बज़ुर्गी	93
95	हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) का ज़िक्रे शरीफ़	93
96	हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) के निकाह का बयान	94
97	हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) का जहेज़	96
98	हज़रत अली का वलीमा	97
99	मिस्वाक करने के फ़ायदे	97
100	हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) के मोटे कपड़े	97
101	हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) का चक्की पीसना	98
102	बीवी के हक़ूक़ जो मर्द के ज़िम्मे हैं	99
103	बीवी को ख़ुश करना और तकलीफ़ न देना	106
104	शरीर औरतों को सज़ा देने का हुक्म	107
105	शौहर के हक़ूक़ जो बीवी के ज़िम्मे हैं	109
106	औरतों को जन्नत की ख़ुशख़बरी	110
107	हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) का एक क़िस्सा	111
108	दीनदार औरत अपने शौहर को बादशाह बना देती है	112
109	मियाँ-बीवी की लड़ाई से शैतान ख़ुश होता है	112
110	औरतों की नाशुक्री	114

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
111	अपनी आबरू बचाने वाली औरत पर दोज़ख़ हराम है	115
112	तलाक़ माँगने का अज़ाब, महर माफ़ करने का सवाब	116
113	औरतों की इज़्ज़त और शहादत	117
114	बाज़ सूरतों में निकाह करना दरुस्त नही	117
115	शौहर के साथ बर्ताव करने का तरीक़ा	118
116	शौहर के वालिदैन के साथ बर्ताव करने का तरीक़ा	120
117	एक लड़की का मरना और अज़ाबों में फँसना	121
118	एक निहायत मुफ़ीद मशवरा	127
119	सब्र और शुक्र का बयान	127
120	सब्र करने के सवाबों का बयान	128
121	सब्र करने वाले बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे	131
122	बयान करके रोने की सज़ा	133
123	बला और मुसीबत में फ़र्क़	134
124	मसला तक़दीर और ग़म कम करने की तदबीर	135
125	हज़रत अय्यूब (अ० स०) का सब्र व शुक्र	140
126	शैतान के दोस्त और दुश्मन	149
127	मुसलमान को ऐश व आराम जन्नत में मिलेगा	150
128	काफ़िर को आख़िरत में सवाब नहीं मिलेगा	152
129	दीन पर मज़बूत रहने वालों की इज़्ज़त	153
130	खुदा के सिवा किसी को सजदा न किया जाये	153
131	अल्लाहतआला के हुक्म में सिफ़ारिश न मानो	155
132	मुसलमान की मुसलमान पर सब चीज़ हराम है	155
133	हलाल कमाने और खाने की ताकीद	156
134	जो चीज़ बे माँगे मिले उसको ले लो	157
135	मुसलमान तीन जुर्मों में क़त्ल हो सकता है	157
136	अल्लाह और रसूल को बुरा कहने वालों को क़त्ल करना चाहिए	158
137	उस उम्मत का फ़िरऔन, "अबुजहल"	158
138	अबुजहल की दुश्मनी	159

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
139	दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है	159
140	तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला है	160
141	कोशिश करने से बुरी आदत बदल जाती है	161
142	दुनिया के कारोबार छोड़ने की बज़ुर्गी	162
143	ज़ोहद व तवक्कल निशान-ए-औलिया है	163
144	सब्र करने वाला बहादुर और आरिफ़ है	163
145	इल्म लुद्दुनी व अबदाल व औताद अक़ताब किसको कहते हैं	163
146	अल्लाह वालों की ख़िदमत करने की बज़ुर्गी	165
147	जो ग़रीब लोग माँगते नही उनकी ख़िदमत मुक़द्दम है	165
148	लोगों को आराम पहुँचाने की बज़ुर्गी	166
149	जानवरों पर भी रहम करना वाज़िब है	166
150	मरने के बाद छोड़ा हुआ माल काम न आयेगा	167
151	ख़ैरात माल ख़र्च करने का ही नाम नहीं है	167
152	दो क़िस्म की हिजरत है	167
153	अल्लाहतआला का प्यारा बन्दा कैसे होता है	168
154	अमलों का ऐतबार नीयतों पर है	169
155	जहाद करने का सवाब	170
156	नेक काम बतलाने का सवाब	170
157	तंदरुस्ती बड़ी नैमत है	170
158	बन्दा हर वक़्त अल्लाह की इबादत का मोहताज है	171
159	जो अमल हमेशा हो वो ख़ुदा को पसन्द है	172
160	काने दज्जाल का फ़ितना	173
161	बहत्तर फ़िरक़े होने की वजह	175
162	बज़ुर्गानि दीन को ज़लील मत समझो	176
163	गुलज़ार-ए-नसीहत	178
164	कबीरा गुनाह करने वाले मुसलमान को सज़ा	180
165	हज़रत इब्राहीम (अ० स०) की क़ुर्बानी	188

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
166	एक ईमानदार बीबी का दर्द भरा क़िस्सा	196
167	तौबा करने की बज़ुर्गी और उस का तरीक़ा	200
168	एक गुनहगार आदमी की तौबा	202
169	क़र्ज़दार को तंग न करने का सवाब	205
170	अच्छे कामों में माल ख़र्च करने का सवाब	206
171	क़ुर्आन पढ़ने और पढ़ाने का सवाब	208
172	क़ुर्आन को भुला देने की सज़ा	209
173	अल्लाह की किताब का पढ़ना कोई मामूली बात नहीं	210
174	तीन क़िस्म के लोगों की ताज़ीम वाजिब है	212
175	मस्जिद बनवाने का सवाब	213
176	मस्जिद को पाक-साफ़ रखने का सवाब	214
177	मस्जिद के आदाब और हक़ूक़	215
178	मस्जिद की बददुआ	216
179	आजकल नाकारों को इमाम बनाया जाता है	217
180	वज़ू करने का सवाब	219
181	नामज़ पढ़ने का सवाब	220
182	बेनमाज़ी काफ़िरों के साथ क्यों रहेगा	220
183	कयामत में बेनमाज़ियों के मुकद्दमात	221
184	हर आदमी पर पाँच सख़्तियाँ आयेंगी	223
185	दिन रात में सतरह फ़र्ज क्यों मुक़र्रर हुए	224
186	सुन्नतों के पढ़ने का सवाब	225
187	नमाज़ मैराज-उल-मोमिनीन है	226
188	जमाअत से नमाज़ पढ़ने का सवाब	228
189	जुमे की नमाज़ पढ़ने का सवाब	229
190	जुमे की नमाज़ न पढ़ने की सज़ा	230
191	जुमे के फ़र्ज़ों के बाद कितनी सुन्नतें हैं	231
192	नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा किसने बतलाया	232
193	इमाम को हल्की-फुल्की नमाज़ पढ़ाना चाहिए	232

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
194	हज़रत आदम (अ० स०) की पैदाइश	232
195	नमाज़ पढ़ने का तरीका	233
196	नमाज़ में इमाम की ताबेदारी वाजिब है	234
197	सजदा-ए-तिलावत से शैतान रोता है	234
198	अज़ान का जवाब दो, और ज़न्नत लो	234
199	तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने का सवाब	235
200	इशराक़ की नमाज़ पढ़ने का सवाब	236
201	चाश्त की नमाज़ पढ़ने का सवाब	237
202	सलवात-उल-तस्बीह पढ़ने का सवाब	237
203	अस्तग़फ़ार पढ़ने का सवाब	238
204	ग़ैब से रिज़्क मिलने का वज़ीफा	239
205	कलमा तैय्यब पढ़ने का सवाब	240
206	कलमा-ए-शहादत पढ़ने का सवाब	241
207	कलमा-ए-तम्जीद पढ़ने का सवाब	243
208	कल्माए-ए-तौहीद पढ़ने का सवाब	244
209	छटा कलमा पढ़ने का सवाब	244
210	अल्लाहतआला के नाम-ए-पाक पढ़ने का सवाब	245
211	फ़िक्र व ग़म दूर करने का वज़ीफा	246
212	घर बैठे शहादत का दर्जा हासिल करो	246
213	माहे शाबान की पंद्रहवी शब की बज़ुर्गी	247
214	आख़िरत में बग़ैर ईमान के कोई काम न आयेगा	248
215	माह रमज़ान के रोज़े रखने का सवाब	251
216	हूरों की दुआ	253
217	रोज़ों और क़ुर्आन की सिफ़ारिश	254
218	रोज़ा खुलवाने का सवाब	255
219	तरावीह पढ़ने का सवाब	257
220	ज़कात देने का बयान	259
221	ज़कात ग़रीब मुसलमानों का हक़ है	260

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
222	हज करने का बयान	261
223	हज करने के आदाब	262
224	हज-ए-मक़बूल की निशानियाँ	262
225	हज-ए-मक़बूल का एक अजीब किस्सा	263
226	मदीना शरीफ़ जाने का सवाब	264
227	ज़मज़म के पानी की बरकत	265
228	दुआ माँगना फ़र्ज़ है	266
229	दुआ क़बूल होने के औक़ात	267
230	दुआ माँगने के आदाब	268
231	मुसलमान भाई के लिए दुआ करने का सवाब	269
232	सूरज की ताबेदारी	269
233	पहली ग़लती का जवाब	270
234	दूसरी ग़लती का जवाब	271
235	तीसरी ग़लती का जवाब	271
236	चौथी ग़लती का जवाब	271
237	पाँचवी ग़लती का जवाब	272
238	छठी ग़लती का जवाब	273
239	कारोबार करने का सवाब	273
240	मौत की यादगारी	275
241	मौत का एक डराने वाला मशाहेदा	277
242	हज़रत फ़ात्मा (अ० स०) का जनाज़ा शरीफ़	279
243	अच्छी मौत की निशानी	280
244	मौत को याद करने का तरीक़ा	281
245	मौत की हालत और सूरत	282
246	मलकउलमौत की ताक़त	283
247	मरने के वक़्त मलकउलमौत का आना	284
248	मरने के वक़्त शैतान का धोखा	285
249	एक वली की हिकायत	286

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
250	मरने के बाद आवाज़ों का आना	287
251	आलम-ए-बर्ज़ख़ और क़ब्र क्या चीज़ है	288
252	झूठों का मौहल्ला	289
253	क़ब्र का ऐलान	290
254	क़ब्र में मुनकिरनकीर फ़रिश्तों का आना	291
255	क़ब्र का दबाना	292
256	जनाज़े को जल्दी ले जाने का हुक्म	293
257	जनाज़े के साथ जाने का हुक्म	293
258	मौत अल्लाहतआला से मिला देती है	294
259	हज़रत मूसा (अ० स०) ने मलक-उल-मौत की आँख फोड़ दी	295
260	आख़िर मौत है	296
261	मौत के आने से नैमतें मिलती हैं	297
262	मरने के वक़्त मलक-उल-मौत का सलाम	297
263	मरने के वक़्त अल्लाहतआला का सलाम	298
264	क़यामत के दिन अल्लाहतआला की रहमत	299
265	मरने वाले को सवाब पहुँचाना	300
266	एक वली का ख़्वाब	300
267	सवाब पहुँचाने का सवाब	301
268	सवाब पहुँचाने का तरीक़ा	301
269	क़ब्रों पर जाना सुन्नत है	302
270	मैय्यत को गुस्ल और कफ़न देने का सवाब	303
271	मैय्यत की पेशानी को चूमना	303
272	क़ब्र के अज़ाब से बचाने वाला वज़ीफ़ा	303
273	क़ब्र में महल तैयार कराने का वज़ीफा	304
274	दरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब	304
275	भीख माँगने की सज़ा	308
276	खाना खाने के आदाब	308
277	आख़िरी ज़माने के मुसलमानों की तारीफ़	309

नं० शुमार	विषय (मज़मून)	सफ़ा
278	अल्लाहतआला से डरने की बुज़ुर्गी	310
279	दुनिया की ग़रज़ से किसी की तारीफ़ करना	310
280	ज़ालिम की ताज़ीम करना दरूस्त है या नहीं	311
281	शरह के ख़िलाफ़ कामों में किसी का कहा न मानो	311
282	गिरगट के मारने का सवाब	312
283	तकलीफ़ ख़ुदा की रहमत है	312
284	लोगों को आराम पहुँचाने का सवाब	313
285	किसी के घर में झाँकना हराम है	313
286	सब्र करने का बदला जन्नत है	313
287	जन्नत ताबेदारी से मिलती है	314
288	जिस हाल मरेगा उसी हाल में उठेगा	314
289	जन्नत और दोज़ख़ में जाने का सबब	314
290	जिस शख़्स में शर्म नहीं वो जानवर है	315
291	मरे हुए जानवर की खाल निकाल लो	315
292	नबी मीरास का माल नहीं छोड़ा करते	316
293	दीन में नयी बात निकालने वाला मरदूद है	316
294	एक फ़ितने का बयान	317
295	एक और फ़ितने का बयान	319
296	क़ुर्आन व हदीस का मतलब समझना हर किसी का काम नहीं	322
297	सदक़ा जारिया का बयान	323
298	जो चीज़ बे माँगे मिले ले लो	324
299	हकूमत और सरदारी न माँगो	324
300	कौन से हाकिम अच्छे हैं	324
301	कोशिश करने से आदमी सँवर जाता है	325
302	आख़िरी वसीयत	327

शब्द सृजन : सनबीम कम्प्यूटर्स, सदर मेरठ। फोन : 540726

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله على الشان جلى البرهان والصلوة والسلام
على رسوله و حبيبه محمد المبشر به فى الانجيل
والمنزل عليه القرآن وعلى آله و اصحابه الذين
سبقونا بالايمان،

हम्द बेहद उस ख़ुदाये पाक को, नूरे ईमाँ जिसने बख़्शा ख़ाक को
किससे पूरा उसका हक़ होवे अदा, कौन गिन सकता है इनआमे ख़ुदा
नाम उनका है दवाए हर बला, अहमदे मुर्सिल मौहम्मद मुस्तफ़ा
दम बदम उन पर दरूदो सद सलाम, पहुंचे इस आजिज़ का तोहफ़ा बिलदवाम
हम्दे ख़ालिक कब किसी से हो सके, पाक है वो ज़ात जो चाहे करे
और ज़बाँ को कब है ताक़त इस क़दर, जो करे नैमत नबी ख़ैरूल बशर
कहते थे सब अम्बियाए मौहतरम, काश होते उम्मते अहमद में हम
नुस्ख़ाए आला जो करता हूँ बयाँ, हो मुफ़ीदे ख़ल्क़ ऐ रब्बे जहाँ

ईमान लाने और मुसलमान होने की ख़ूबियाँ

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ
وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

यानी ऐ बन्दो ! हमने आज के दिन तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और हमने तुम पर अपना इनआम पूरा कर दिया और हमने इस्लाम को तुम्हारा दीन (मज़हब) बनने के लिए (हमेशा-हमेशा को) पसंद कर लिया। फ़०

अल्लाहतआला ने इस आयते शरीफ़ा में एक बहुत बड़ी नैमत का ज़िक्र फ़रमाया है और वह नैमते इस्लाम है। अल्लाहतआला ने हमको इसके कामिल होने की ख़बर दी है ताकि मालूम हो जाये कि यह बहुत बड़ी नैमत है और अल्लाह तआला ने इस्लाम को हमारे लिए पसंद भी फ़रमाया है और इसको कामिल भी कर दिया है। तो इसका यह असर होगा कि जिस शख़्स के पास यह इस्लाम की नैमत होगी, अल्लाह तआला उससे राज़ी होगा। देखो, नैमतें दो क़िस्म की

होती हैं— 1. दुनिया की नैमतें, जैसे— खाना-पीना, माल-औलाद, इज़्ज़त व आबरू, मकान-ज़मीन, जायदाद वग़ैरा। इन नैमतों का फ़ायदा दुनिया में होता है और इनके फ़ायदों की हद है। 2. दूसरी नैमतें आख़िरत की हैं और उनके फ़ायदे आख़िरत में हासिल होंगे और उनकी कोई हद नहीं और वो नैमतें हमेशा-हमेशा बाक़ी रहेंगी, जैसे जन्नत का मिलना, हूरों का मिलना, दूध वग़ैरा की नहरों का मिलना और क़िस्म-क़िस्म की राहतें और लज़्ज़तें हासिल होना। किसी क़िस्म का रंज और ग़म न होना वग़ैरा। दुनिया में चाहे कितनी ही बड़ी ख़ुशी हो उसके साथ कुछ न कुछ तकलीफ़ भी ज़रूर होगी, मगर आख़िरत में कोई भी तकलीफ़ न होगी। देखो, दुनिया की नैमतें दो-चार दिन के बाद ख़त्म हो जाती हैं, कोई न कोई इनमें नुक़सान ज़रूर आ जाता है। मशहूर है कि—

सोने चाँदी की चमक बस देखने की बात है,
चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात है।

मगर आख़िरत की नैमतें हमेशा-हमेशा के लिए हैं, जो कभी ख़त्म न होंगी और दुनिया की नैमतें ख़त्म होने वाली भी हैं और इनमें कोई न कोई तकलीफ़ भी होती है। देखो, खाना एक नैमत है मगर इसमें कितनी तकलीफ़ और मेहनत है कि ज़मीन कमाओ, बीज डालो, फिर अनाज निकालो, फिर आटा पिसवाओ, फिर गूंधो, फिर पकाओ, फिर खाओ। यह तो खाने से पहले की तकलीफ़ें हैं और खाना खाने में और इसके बाद भी तकलीफ़ें हैं। मसलन कभी मिर्च और नमक ज़्यादा हो गया, कभी खाना कच्चा रह गया, कभी खाने के बाद पेट में बोझ हो गया, कभी क़ब्ज़ हो गया, कभी हैज़ा हो गया या दस्त आने लगे या क़ै हो गयी या कोई मर्ज़ हो गया। हकीम, डाक्टर के नुस्ख़े पिये जाते हैं। कहीं हाज़मे के लिए चूरन खाया जाता है। देख लो दुनिया की एक नैमत खाने में कितनी तकलीफ़ें उठानी पड़ी। इसी तरह दुनिया की हर नैमत के साथ तकलीफ़ भी लगी होती है और आख़िरत की नैमतें जब मिलेंगी तो कभी ख़त्म न होंगी और न उनमें कोई तकलीफ़ और मेहनत उठानी पड़ेगी। जन्नत में ख़ुशी ही ख़ुशी रहेगी। वहां जो चाहोगे वही होगा। देखो जन्नत में कोई फल खाने को तोड़ा तो उसमें एक ख़ूबसूरत हूर निकल आयेगी। वह कहेगी "अस्सलामु अलैकुम"। फल अलग खाया और मुफ़्त में एक हूर भी हाथ आ गयी। ग़रज़ जन्नत में अजीब-अजीब हालत होगी और जन्नत में जितना दिल चाहे खाओ और हमेशा खाते रहो तब भी मज़ा आयेगा। न पेशाब-पाख़ाने की तकलीफ़, न हैज़े का डर, न बदहज़मी का ख़तरा। बस एक ख़ुशबूदार डकार आयेगी और सब खाना हज़म हो जायेगा। जन्नत में बदबू का नाम ही नहीं और दुनिया की नैमतें ऐसी हैं कि अगर इनको हमेशा खाया जाये तो फिर मज़ा नहीं आता या कोई मर्ज़ ही हो जाता है और कभी कोई नैमत मिल

गयी और कभी न मिली और आख़िरत एक दिन दुनिया भी और दुनिया की नेमतें भी सब ख़त्म हो जायेंगी, छूट जायेंगी। अब ख़ुद समझ लो कि दुनिया की नेमतें अच्छी हैं या आख़िरत की। और जन्नत की नेमतें इस्लाम और ईमान लाने के सिवा किसी तरह भी हासिल नहीं हो सकतीं और इस्लाम क़बूल करना, ईमान लाना और मुसलमान होना जन्नत की नेमतों के मिलने की जड़ हैं और वो नेमतें भी ऐसी पायेदार हैं कि दुनिया की नेमतें उनके सामने ख़ाक़ भी नहीं। मालूम हो गया होगा कि मुसलमान होना कितनी बड़ी नेमत है। फिर अफ़सोस ही की बात है कि इतनी बड़ी नेमत को छोड़ कर हम दुनिया की फ़ानी नेमतों में डूब जायें। दीन इस्लाम का मानना और मुसलमान होना तो इतनी बड़ी नेमत है कि इसकी बदौलत दुनिया और आख़िरत दोनों सँवर जाती हैं। इस्लाम कामिल दीन है और अल्लाह तआला की पूरी नेमत है। उसका पसंद फ़रमाया हुआ है। बस इससे पूरा नफ़ा हासिल करो और अपनी हालत को इस्लाम के हुक्म के मुवाफ़िक़ दुरूस्त करो, अक़ीदों और अमलों को सँवारो। अगर तुम्हारे अन्दर इस्लाम के पूरे औसाफ़ हों तो इसके अनवार व बरकात तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर होंगे। यहाँ तक कि ग़ैर मुस्लिम भी तुम्हारी अच्छी आदतें और अच्छे अमल देखकर खुद-ब-ख़ुद इस्लाम क़बूल करेंगे क्योंकि इस्लाम सच्चा दीन है, अल्लाहतआला को पसंद है। इसलिए इसमें मकनातीस की तरह असर है। इसकी जो भी अदा है, दिल को खींचती है इस्लाम नूर ही नूर है और हर क़िस्म की ख़ूबियों और भलाइयों से भरा हुआ है। मगर अफ़सोस यह है कि आजकल हमने इस्लाम के हुक्मों से ऐसा मुँह मोड़ा है कि सर से पाँव तक इस्लाम के हुक्मों के ख़िलाफ हैं, यहाँ तक कि ग़ैर मुस्लिम भी हम पर हँसते हैं और कहते हैं कि यह है दीन इस्लाम और यह हैं मुसलमान। अगर दीन इस्लाम ऐसा ही है जैसा कि मुसलमानों ने बना रखा है तो फिर ऐसी लूटमार से तो हम ही अच्छे हैं। यह अन्जाम हुआ हमारी बेअमली का। मुसलमान भाइयो, ज़रा होश करो! आख़िर अल्लाह व रसूल (स०) को मुँह दिखाना है। नैमेते इस्लाम से फ़ायदा उठाओ, अपने ईमान और अमलों को दरूस्त करो। अल्लाह व रसूल के हुक्मों को मालूम करो और उन पर मज़बूती से चलो और अल्लाह तआला की नैमतों को याद करो कि उस ख़ालिक़-ए-पाक ने हमको कैसी अच्छी सूरत में बनाया और क्या-क्या नैमतें बख़्शीं।

ख़ून में डूबा हुआ तन और बदन,
निकला क्या-क्या खींच कर रंजो मुहन।

आजिज़ो ख़ुवारो ज़ईफ़ो नातवाँ,
बेकसो मिस्कीं नहीफ़ोख़स्ता जाँ।

गर न ले उस वक़्त में मादर ख़बर,
एक दम में तू हो मुर्दे से बदतर।

तू भला उस वक़्त था किस काम का,
गर न होता लुत्फ़ो इनआमे ख़ुदा।

दी ख़ुदा ने तुझको बहरे इम्तहाँ,
किस तरह की नैमतें बेशअज़ बयाँ।

अक़्लो फ़हमो हिफ़्ज और ज़हनो ज़का,
कुवतो ज़ोरो तआमे जाँ फ़िज़ा।

सूरतो शक्लो ज़रो लाले गौहर,
ख़ाना ओ यारो अज़ीज़ो सीमोज़र।

दुख़्तरो मादर पदर फ़रज़न्दो ज़न,
मालो मुल्को दौलतो बाग़ो चमन।

हैं ख़ुदा की तू बता किस काम का,
सब ये तेरे वास्ते हैं ऐ अख़ी।

बावजूद इसके भी हो तुझको नफ़ूर,
अक़्ल से यह बात है यक लख़्त दूर।

दुशमने जाँ हैं हज़ारों जानवर,
है वही हर दम मुहाफ़िज ए पिसर।

तीरो बर्छी ख़ंजरो तेग़ो तबर,
मुस्तइद हैं आदमी के क़त्ल पर।

मर्ज़ जिस्मानी हैं ग़ारां दस हज़ार,
अज़ दहाओ अक़रबो ज़म्बूरो मार।

गर न हो इस की हिफ़ाज़त एक दम,
दम के दम में देखे तु मुल्के अदम।

है ग़ज़ब यक लख़्त उन को भूल कर,
अपने इस ख़ालिक़ से हो तू बेख़बर।

नैमतें जो इस क़दर दे ऐ फ़ज़ूल,
हुक्म में उसके करे है तू अदूल।

मुसलमान भाइयो ! अपने ईमान और अमलों को दरूस्त करो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी से बाज़ आ जाओ। देखो, आजकल हमारी हालत ऐसी बिगड़ गयी है कि किसी ग़ैर मुस्लिम को ऐसा न देखा होगा कि उसने सूरत व

शक्ल और लिबास वग़ैरा में किसी बुज़ुर्ग आलिम जैसा रंग-ढंग बनाया हो और मुसलमानों की यह हालत है कि कूद-कूद कर खुल्लमखुल्ला ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़े को अख़्तियार करते जाते हैं। अपने प्यारे रसूल पाक (स०) के तरीक़े को छोड़े जाते हैं। यह कैसी रद्दी और गंदी मुसलमानी है। तौबा करो, कुफ़्फ़ार के तरीक़े को छोड़ दो। देखो ! अल्लाहतआला फ़रमाता है— बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये बहुत जल्दी हम उनको ऐसी जन्नतो में दाख़िल करेंगे कि जिनके मकानों के नीचे नहरें बहती होंगी और वो उनमे हमेशा रहेंगे और उनके लिए इन जन्नतों में बीवियाँ होंगी, साफ़ सुथरी और हम उनको निहायत गुनजान साये में दाख़िल करेंगे। [सूरत उन निसा] फ० सुबहान अल्लाह ईमान लाना और मुसलमान होना और अल्लाह व रसूल के हुक्मो पर चलना कितनी बड़ी नैमत है कि इन्सान ईमान और अच्छे कामों की बरकत से हमेशा-हमेशा जन्नत में ऐश व आराम पायेगा, मगर ऐ इन्सान—

बहर-ए-ग़फ़लत ये तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रह गुज़र दुनिया है ये बस्ती नही,
जाए-ऐश-ओ-इशरतो मस्ती नहीं।

तू बराये बन्दगी है याद रख,
फ़र्ज़ तुझ पर बन्दगी है याद रख।

वर्ना फिर शर्मिंदगी है याद रख,
चन्द रोज़ा ज़िन्दगी है याद रख।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है !

ईमान किस तरह मज़बूत होता है

मालूम होना चाहिए कि ईमान तब दरूस्त और मज़बूत होता है कि जब अल्लाहतआला को और उसके रसूल हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) को सब बातो मे सच्चा समझें और उनकी सब बातों को दिल से मान लें, यह ईमान है और अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर चलना यह दीन है, इस्लाम है। अल्लाह व रसूल की किसी बात में या हुक्म में शक करना या उसको झुठलाना या उसमें ऐब निकालना या उसके साथ हँसी-मज़ाक़ उड़ाना, ऐसी बातो से ईमान नही रहता और क़ुरआन व हदीस के साफ़-साफ़ और खुले मतलब को न मानना और हेर-फेर

करके अपना मतलब बनाना बेदीन और बेईमान बनना है। इसलिए हर मुसलमान मर्द और औरत को चाहिए कि अपने ईमान की ख़ूब हिफ़ाज़त करे। इस्लामी हुक्मों पर चलकर उसको मज़बूत करे और कोई बात ऐसी न कहे और न करे जिससे ईमान में फ़र्क़ आवे।

ईमान न लाने की सज़ा और अज़ाब

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि बेशक जो लोग हमारी आयतों यानी हुक्मों के मुनकिर हुए यानी हमारे हुक्मों को न माना तो हम उनको बहुत जल्द एक सख़्त आग में यानी दोज़ख़ की आग में दाख़िल करेंगे और उसमें उनकी बराबर यह हालत रहेगी कि जब एक दफ़ा उनकी खाल जल चुकी होगी तो हम उस पहली खाल की जगह दूसरी ताज़ा खाल पैदा कर देंगे ताकि वह हमेशा अज़ाब ही भुगतते रहें। (सूरत उन निसा) और इरशाद फ़रमाया अल्लाहत-आला ने—

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ط

तर्जुमा—

बेशक जो शख़्स बग़ावत का जुर्म करके यानी काफ़िर होकर अपने रब के सामने यानी कचहरी में हाज़िर होगा तो उसकी सज़ा के लिए दोज़ख़ है, उसमें न वह मरेगा और न जियेगा।

फ़ायदा— अल्लाह बचाये ! ईमान न लाना और मुसलमान न होना, अपने ईमान को ख़राब करना कितना बड़ा संगीन जुर्म है। ख़ुदाई क़ानून में बग़ावत है। इसलिए बाग़ी यानी काफ़िर हमेशा के लिए दोज़ख़ में डाला जायेगा कि अपनी बग़ावत की सज़ा पाता रहे और मुसलमान चाहे कितना ही बड़ा मुजरिम हो, ख़ुदाई क़ानून यानी ख़ुदा के सब हुक्मों को मानता है, बाग़ी नहीं है, अमल ख़ुदा के क़ानून के ख़िलाफ़ करके मुजरिम है। सज़ा काट कर फिर जन्नत में आ जायेगा और काफ़िर बाग़ी है इसलिए वह हमेशा दोज़ख़ में क़ैद रहेगा।

दुआ

ऐ ख़ुदा ऐ ख़ालिक़ ए अरज़ो समां,
ऐ ख़ुदा ऐ मालिक-ए-रोज़े जज़ा।

तू अज़ाबे नार से हम को बचा,
हों न हम बे आबरू रोज़े जज़ा।

तूने दोज़ख़ में जिसे दाख़िल किया,
उसको बेशक तूने रुसवा कर दिया।

ऐसे ज़ालिम का कोई साथी नहीं,
कोई भी काम उसके आ सकता नहीं।

काफ़िर ओ गुमराह व नाफ़र्मां न हूँ,
मैं कभी बेदीनो बेईमाँ न हूँ।

ऐ ख़ुदा जब तक हो मेरे दम में दम,
रख मुझे इस्लाम पर साबित क़दम।

सवाल—

फ़रिश्ते कौन होते हैं—अल्लाहतआला की ऐसी ज़ात-ए-पाक है कि उस की सिफ़्तों और निशानियों से उसको सब जानते हैं कि ज़मीनों आसमान, चाँद, सूरज, तारे, रात-दिन और कुल मख़लूक़ को उसने पैदा किया और सब मख़लूक़ को रिज़्क़ पहुँचाता है। वही मारता है, वही जिलाता है। वही अमीर और फ़क़ीर करता है, वही इज़्ज़त और ज़िल्लत देता है और वो ऐसा ज़बर्दस्त और बड़ी क़ुदरत वाला है कि इन्सान के इरादों को तोड़ देता है। ग़रज़ कि उसकी ताक़त और क़ुदरत और सिफ़्तों से सब उसको जानते हैं। कोई हठ धरम और समझ का अन्धा उस की ज़ात-ए-पाक का इन्कार करेगा, मगर फ़रिश्तों को हर शख़्स नही जानता। कुछ उनका हाल बताओ।

जवाब—

ऐ भाई अज़ीज़ ! तुमने उस ख़ुदाए वाहदहू ला शरीक को पहचाना। बेशक वह सब मख़लूक का ख़ालिक़ और मालिक है। उसने इन्सान को मिट्टी से अपनी इबादत और इताअत के लिए पैदा किया और फ़रिश्तों को उसने नूर से पैदा कर के उन को हमारी नज़रों से छुपा दिया है। उनका मर्द या औरत होना कुछ नहीं बतलाता, उनको फ़रिश्ते कहते हैं। अल्लाहतआला ने उनको हर तरह की सूरत में बन जाने की क़ुदरत दी है। हवा बन जायें, आदमी या किसी जानवर, चरिन्द-परिन्द वग़ैरा की शक्ल में बन जायें। इनके पर भी होते हैं, किसी के दो पर, किसी के तीन पर, किसी के चार पर। इनकी ख़ुराक अल्लाहतआला की याद और ताबेदारी करना है।

तमाम ज़मीन ओ आसमान का इन्तज़ाम इनके सपुर्द है। वो कोई काम अल्लाह तआला के हुक्म के ख़िलाफ़ नहीं करते। उनमें यह चार फ़रिश्ते बड़ा

रूतबा रखते हैं और बहुत मशहूर हैं।

1. हज़रत जिबराईल (अ०) 2. हज़रत मीकाईल (अ०)

3. हज़रत इसराफ़ील (अ०) 4. हज़रत इज़राईल (अ०)।

हज़रत जिबराईल अल्लाह तआला के अहकाम और किताबें रसूलों और नबियों के पास लाते थे और बाज़ मौक़े पर अल्लाह तआला ने उनके ज़रिये से काफ़िरों और नाफ़रमानों पर अज़ाब भी भेजा है। हज़रत मीकाईल मख़लूक़ को रिज़्क पहुँचाने और बारिश वग़ैरा के कामों पर मुक़र्रर हैं और बहुत से फ़रिश्ते उनकी मातहती में काम करते हैं। कुछ बादलों और हवाओं, दरियाओं, तालाबों और नहरों के कारोबार में लगे हुए हैं। हज़रत इसराफ़ील सूर लिये खड़े हैं। जब क़यामत होगी वो सूर बजायेंगे। हज़रत इज़राईल मलकउलमौत मख़लूक़ की जान निकालने पर मुक़र्रर हैं और बहुत से फ़रिश्ते उनकी मातहती में काम करते हैं। नेक और बद लोगों की जान निकालने वाले फ़रिश्ते अलग-अलग हैं। दो फ़रिश्ते इन्सान के अच्छे और बुरे अमल लिखने वाले हैं, उनको किरामन कातेबीन कहते हैं। बाज़ फ़रिश्ते इन्सान को मुसीबत से बचाने पर मुक़र्रर हैं। अल्लाह तआला के हुक्म से हिफ़ाज़त करते हैं। बाज़ फ़रिश्ते जन्नत और दोज़ख़ के इन्तज़ामों पर मुक़र्रर हैं। बाज़ फ़रिश्ते हर वक़्त अल्लाह तआला की इबादत और याद में मशग़ूल रहते हैं। बाज़ फ़रिश्ते दुनिया में काम करने आते हैं, उनकी सुबह व शाम बदली भी होती है। सुबह की नमाज़ के बाद रात को काम करने वाले फ़रिश्ते आसमान पर चले जाते हैं और दिन में काम करने वाले आ जाते हैं और अस्र की नमाज़ के बाद ये फ़रिश्ते चले जाते हैं, रात में काम करने वाले आ जाते हैं। बाज़ फ़रिश्ते दुनिया में फिरते हैं और जहाँ अल्लाहतआला का ज़िक्र होता हो, जैसे क़ुर्आन मजीद पढ़ा जाता हो, वाअज़ होता हो, इल्मे दीन पढ़ाया जाता हो या दीन की किताबें पढ़ी-सुनी जाती हों, या बुज़ुर्गों और आलिमों की सोहबत में दीन की बातें सीखने के लिए जमा होते हों, वहाँ हाज़िर होते हैं और उनके शरीक होने की गवाही अल्लाहतआला के सामने देते हैं और यह सब बातें क़ुर्आन व हदीस में मौजूद हैं।

रसूल और नबी किसको कहते हैं, मौजज़ा और मैराज क्या हैं ?

रसूल और नबी अल्लाहतआला के बड़े मक़बूल और प्यारे बन्दे थे। वो गुनाहों से पाक थे। गिनती इनकी पूरी तरह अल्लाह ही को मालूम है। रसूल और नबी में इतना फ़र्क़ है कि रसूल को नयी शरीयत और नया क़ानून और

बड़ी किताब दी जाती थी और नबी को सहीफ़े यानी छोटी किताबें दी जाती थीं या गुज़रे हुए रसूल की शरीयत यानी क़ानून ही पर क़ायम रखा जाता था। बहुत से रसूल और नबी अल्लाह तआला ने भेजे ताकि वो लोगों को दीन-ए-इस्लाम का सही, सीधा रास्ता बतलाएँ, उनकी सच्चाई बतलाने को अल्लाहतआला ने उनके हाथों से ऐसी नयी-नयी और मुश्किल बातें ज़ाहिर करायीं जो और लोगों से नहीं हो सकती थीं, ऐसी बातों को मौजज़ा कहते हैं। सबसे पहले नबी हज़रत आदम (अ०) थे और सबके बाद हमारे नबी ख़ातिमुल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) हुए। नबियों में बाज़ का मर्तबा बाज़ों से बड़ा है। सबसे बड़ा मर्तबा हमारे नबी (स०) का है। आपके बाद न कोई नबी पैदा हुआ और न क़यामत तक पैदा होगा। क़यामत तक जितने आदमी और जिन्न होंगे आप सबके नबी हैं। आपने जो काम किये और जो काम बतलाये उनको हदीस शरीफ़ कहते हैं। हदीस शरीफ़ की यह छः किताबें मौतबर और बहुत मशहूर हैं—

1. बुख़ारी शरीफ़ 2. मुस्लिम शरीफ़ 3. अबुदाउद शरीफ़
4. तिर्मेंज़ी शरीफ़ 5. नसाई शरीफ़ 6. इब्ने माजह शरीफ़।

मगर इनका मतलब आलिम लोग ही समझते हैं। उनका तर्जुमा उर्दू में पढ़कर दीन की बातों में राय न दें। आलिमों से पूछकर अमल करें। हमारे नबी हज़ूर (स०) को अल्लाह तआला ने जागते में जिस्म के साथ मक्का शरीफ़ से बैतुल मुक़द्दस में और वहाँ से सातों आसमानों पर और वहाँ से जहाँ तक पहुँचाना चाहा पहुँचाया और फिर मक्का शरीफ़ में पहुँचा दिया। इसको मैराज कहते हैं।

सुलताने जहाँ महबूबे ख़ुदा तेरी शानो शौकत क्या कहना।
हर शै पे लिखा है नाम तेरा तेरे ज़िक्र की रफ़अत क्या कहना॥
इन्ना आतैना कल कौसर फ़र्माये तेरे हक़ में दावर।
सेहरा है जबीं पे शिफ़ाअत का उम्मत पे है रहमत क्या कहना॥
मैराज हुई ता अर्श गये हक़ तुमसे मिला तुम हक़ से मिले।
सब राज़ फ़ाअवमा दिल पे खुले ये इज़्ज़तो हशमत क्या कहना॥
हूरों ने कहा सुबहानअल्लाह ग़ुलमाँ ने पुकारा सल्ले अला।
और क़ुदसी बोले इल्लल्ला है अर्श पे दावत क्या कहना॥
क़ुर्आन कलामेबारी है और तेरी ज़बाँ से जारी है।
क्या तेरी फ़सीहत प्यारी है और तेरी बलाग़त क्या कहना॥
बातों से टपकती लज़्ज़त है आँखों से बरसती रहमत है।
ख़ुतबे से चमकती हैबत है ऐ शाहे रिसालत क्या कहना॥

सिद्दीक़ ओ उमर उस्मानो अली और उनके असहाबे सहाबे नबी।
कुर्बान है आक़ा तुम पे सभी की खूब रिफ़ाक़त क्या कहना।
आँखों से दरिया जारी है और लब पे दुआएँ प्यारी है।
रो रो के गुज़ारी शब सारी ऐ हामी-ए-उम्मत क्या कहना॥
आलम की भरी हर दम झोली खुद खायी तो बस जौ की रोटी।
वो शान अताओ सखावत की यह ज़ोहदो क़नाअत क्या कहना॥

अल्लाहतआला की किताबों का बयान

अल्लाहतआला ने बहुत-सी छोटी और बड़ी किताबें आसमान से हज़रत जिबराईल (अ०) की मार्फ़त बहुत से रसूलों और नबियों पर उतारीं ताकि वह अपनी अपनी उम्मतों को दीने इसलाम का रास्ता बतलाएँ। उनमें यह चार किताबें बहुत मशहूर हैं—

1. तौरैत शरीफ़ हज़रत मूसा (अ०) पर 2. ज़बूर शरीफ़ हज़रत दाऊद (अ०) पर 3. इन्जील शरीफ़ हज़रत ईसा (अ०) पर 4. कुर्आन मजीद हमारे नबी हज़रत मौहम्मद (स०) पर नाज़िल हुआ।

कुर्आन मजीद अल्लाहतआला की आख़िरी किताब है। इसके बाद न कोई किताब आसमान से उतरी और न क़यामत तक उतरेगी। कुर्आन मजीद ही का हुक्म चलता रहेगा। इससे पहली किताबों को गुमराह लोगों ने दुनिया के लालच में आकर बहुत कुछ बदल डाला और कुर्आन मजीद की हिफ़ाज़त का वायदा अल्लाहतआला ने खुद फ़रमाया है। उसको कोई नहीं बदल सकता और उसी वायदे के मुवाफ़िक़ अब तक मौजूद है और क़यामत तक मौजूद रहेगा। आज तक एक नुक़ते तक का फ़र्क़ न आया और न आयेगा। अल्लाहतआला ने इसकी हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम इस तरह किया है कि मुसलमानों को उसके ज़ुबानी याद करने का शौक़ अता फ़रमाया है और इसका पढ़ना और याद करना आसान कर दिया है। इतनी बड़ी किताब और दो-चार साल में ज़ुबानी याद हो जाती है। दुनिया भर में इस क़दर हाफ़िज़े कुर्आन मौजूद रहते हैं कि अगर खुदा न करे छपे हुए कुर्आन तमाम रूए ज़मीन पर न रहें तो इस तरह हाफ़िज़ों के ज़रिये से कुर्आन तैयार हो जायेगा। यह वह शाने अज़ीम है कि सिवाये कुर्आन के किसी और मज़हब की किताब को हासिल नहीं। यह कुर्आनी मौजज़ा है और यह बात भी याद रखने की है कि जिस तरह कुर्आन के नुक़ते तक में फ़र्क़ नहीं आया उसी तरह इसके मायनों में भी फ़र्क़ नहीं आया जो मायने और अहकाम

और जो मतलब पहले आलिमों ने समझे और लिखे हैं उसी तरह मौजूद हैं इनको फ़िक़्ह और तफ़सीर और हदीस कहते हैं और हज़ार हा मुत्तक़ी आलिम इनकी हिफ़ाज़त में लगे रहे और लगे रहते हैं। अब कोई दुनिया के लालच में आकर कुर्आन व हदीस फ़िक़्ह और तफ़सीर के नये माने अपना मतलब बनाने को बदले और घड़े, वह बेदीन और गुमराह है। वह खुद ही बदल जायेगा, मिट जायेगा।

"आज तक नक्श-ए-शरीयत न मिटा पर न मिटा'
मिट गये आप ही जितने थे मिटाने वाले"

क़यामत, पुलसिरात, कौसर क्या चीज़ है ?

मरने के बाद सबको ज़िन्दा किया जायेगा और अल्लाहतआला की कचहरी में सबका हिसाब-किताब होगा। अच्छे कामों पर सवाब और ईनाम मिलेगा और बुरे कामों पर अज़ाब और सज़ा मिलेगी और उस ज़िन्दगी के बाद फिर कभी मौत नहीं आयेगी। उसको क़यामत और आलमेआख़िरत कहते हैं। जब दुनिया के ख़त्म होने का वक़्त आयेगा तो हज़रत इसराफ़ील (अ०) सूर बजायेंगे। यह सूर एक बहुत बड़ी चीज़ सींग जैसा है। उसकी लम्बाई और चौड़ाई ज़मीन व आसमान के बराबर है। उसकी आवाज़ शुरू-शुरू में हल्की और नर्म होगी। आख़िर बढ़ते-बढ़ते ऐसी ऊँची और ख़ौफ़नाक हो जायेगी कि ज़मीन और आसमान फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे और तमाम मख़लूक़ मर जायेगी और जो मर चुके होंगे उनकी रूहें बेहोश हो जायेंगी। मगर जिसको अल्लाह तआला इस मुसीबत से बचाना चाहेगा, वह बचे रहेंगे और एक मुद्दत इसी तरह गुज़र जायेगी।

न कोई रहेगा न कोई रहा है,
यह मिटने की जा है मिटेगी हर एक शै।

ख़ुदा ही रहेगा ख़ुदा ही रहा है,
किसी का कहाँ नाम बाक़ी रहा है।

न दुनिया रहेगी न दुनिया की बातें
फ़ना है फ़ना है हर एक को फ़ना है।

रहेगा तू ही और तू ही रहा है
सिवा ज़ाते बारी के कुछ भी रहा है?

अलहासिल जब अल्लाहतआला को मन्ज़ूर होगा कि तमाम मख़लूक़ फिर ज़िन्दा हों तो फिर सूर बजाया जायेगा। उसकी आवाज़ से तमाम मख़लूक़ फिर ज़िन्दा हो जायेगी और आसमान व ज़मीन उसी तरह क़ायम हो जायेंगे और तमाम

लोगों को क़यामत के मैदान में लाया जायेगा। सूरज बहुत क़रीब कर दिया जायेगा, उसकी गर्मी से लोगों के दिमाग़ हंडिया की तरह पकने लगेंगे। इस तकलीफ़ और भूख-प्यास से घबराकर सब लोग अम्बिया (अ०) के पास जायेंगे और कहेंगे कि अल्लाह तआला के दरबार में हमारी शिफ़ाअत कीजिए और हमको हिसाबो-किताब से जल्दी छुड़ाइए। सब नबी कुछ न कुछ उज़र करेंगे और सबके बाद हमारे नबी हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) अल्लाहतआला से सिफ़ारिश करेंगे और मीज़ाने तराज़ू खड़ी की जायेगी। उसमें अमल तोले जायेंगे और शाफ़ीए महशर हज़ूर अकरम (स०) अपनी नहर हौज़े कौसर का पानी पिलायेंगे जो दूध से ज्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा।

पुलसिरात, दोज़ख़ के ऊपर पुल है, जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है, उस पर चलना पड़ेगा। जिन लोगों ने अल्लाह व रसूल की ताबेदारी की होगी वह बिजली की तरह उस पर से पार होकर जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे और जो लोग अल्लाह व रसूल के नाफ़रमान होंगे, वह कटकर दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे।

मोमिनो रहते हो क्यों बेफ़िक्र बेग़म बेख़बर।
एक सफ़र दरपेश है दूरो दराज़ो पुरख़तर॥

पुलसिरात अज़ बस की बारीको तवीलो तेज़ है।
उसके नीचे एक दरिया आग से लबरेज़ है॥

नेको बद आमाल तोले जायेंगे मीज़ान में।
हो हिसाब ज़र्रा-ज़र्रा हश्र के मैदान में॥

तोशा-ए-आमाल अपना साथ लेकर जाओ जी।
पीछे क़ब्र में कौन भेजेगा सोचो तो सही॥

सहाबा कौन लोग होते हैं

रसूले ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) को जिन-जिन मुसलमानों ने देखा है, उनको असहाब या सहाबा कहते हैं। क़ुर्आन व हदीस में उनकी बड़ी-बड़ी बुज़ुर्गियाँ आयीं हैं। उन सबकी ताज़ीम वाजिब है। उनमें यह चार असहाब सबसे बड़ा मर्तबा रखते हैं और बहुत मशहूर हैं। उनकी बज़ुर्गी और बड़ाई का इन्कार करने वाला बेदीन और गुमराह है।

दोस्ताने मुस्तफ़ा हक़ के वली,
अबुबक़र व उमर उस्मानो अली।

आसमाने फ़ैज़ के तारे हैं यह,
और रसूल अल्लाह के प्यारे हैं यह।

हुई दीन को उन से क़ुवत तमाम,
हो उन सब पे रहमत ख़ुदा की मदाम।

उनकी हिम्मत से हमेशा ता क़याम,
दीने अहमद को रौनक़ है तमाम।

गर करे सदहा बरस चिल्लाकशी,
कफ़शेपा को उनके कब पहुँचे कोई।

तुख़्म उनकी उल्फ़तों का दिल में बो,
ताकि तेरा बाग़े ईमाँ सब्ज़ हो।

दामन उनका आ गया है जिनके हाथ,
कुफ्र के तूफान से पायी है निजात।

गर बुरे वह हैं तो बेहतर कौन है,
गर वह बेराह हैं तो रहबर कौन है?

इसी तरह रसूले ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की औलादे पाक और अज़वाजे मुत्तेहर्रात सब क़ाबिले ताज़ीम हैं। औलाद में सबसे बड़ा मर्तबा हज़रत फ़ातिमा (रज़ी०) का है और बीबियों में हज़रत ख़दीजा और हज़रत आयेशा (रज़ी०) का है।

फ़ात्मा, ज़ैनब, रूक़ैया ऐ जवाँ,
उम्मे कुलसूम आप की हैं बेटियाँ।

चार ये दो फ़ात्मा ज़हरा के लाल,
जिगरे नबी के इनको टुकड़े कर ख़याल।

जितनी हैं अज़वाज ख़त्मुलमुर्सलीं,
उम्महातुलमौमिनीं हैं बिल्यक़ीं।

उनसे जो कोई कि हो बद ऐतक़ाद,
दीनो दुनिया में रहे वह नामुराद।

दीन पर चलने का सही रास्ता बतलाओ

बाज़ गुमराह लोगों ने दुनिया की इज़्ज़त और दौलत के लालच में आकर अपनी-अपनी जमाअतें बनायीं और बनाते जाते हैं। कोई नबी बनता है। कोई हदीस शरीफ़ का इन्कार करता है। कोई कहता है कि मौलवी कुर्आन व हदीस

का मतलब ही नहीं समझते। मैं समझता हूँ ऐसी हालत में यह बात समझने की है कि ऐसे फ़िरक़े के लोगों से बचना चाहिए और यह बात याद रखें कि अल्लाह व रसूल ने दीन की सब बातें क़ुर्आन व हदीस में बतला दी हैं। अब कोई नयी बात या नया तरीक़ा दीन में दाख़िल करना बिदअत है और बिदअत कुफ्र व शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह है। बहुत से मसले दीन के ऐसे थे कि जिनको हर शख़्स समझ नहीं सकता था। वह मसले बड़े-बड़े दर्जे के पहले बज़ुर्ग आलिमों ने अपने इल्म के ज़ोर से क़ुर्आन व हदीस से समझ कर औरों को बतला दिये। ऐसे अल्लाह के प्यारे बन्दों को मुजतहिद और इमाम कहते हैं। दीन के रहबर और इमाम तो बहुत हुए, मगर उनमें यह चार बड़ा दर्जा रखते हैं और बहुत मशहूर हैं—

1. हज़रत इमामे आज़म अबुहनीफ़ा (रह०) 2. हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) 3. हज़रत इमाम मालिक (रह०) 4. हज़रत इमाम अहमद (रह०)। इन चारों इमामों को उस बेहतरीन ज़माने के बड़े-बड़े आलिमों ने पसंद कर लिया था। उस वक़्त से सब मुसलमान उनके बतलाये हुए मसलों पर अमल करते चले आये हैं। बड़े-बड़े बुर्ज़ुग आलिमों ने उनकी तक़लीद की और कर रहे हैं। बस इन चारों इमामों में से जिस इमाम साहब से ज़्यादा ऐतक़ाद हो उसके मसलों पर अमल करें और उनके मसलों में जो इख़तिलाफ़ है उसको ख़ुदा की रहमत समझें। किसी की शान में गुस्ताख़ी न करें। हिन्दुस्तान में हज़रत इमामे आज़म के मसलों पर अमल करने वाले लोग ज़्यादा हैं। इनको हनफ़ी कहते हैं। बस इन इमामों के मसलों पर अमल करना क़ुर्आन व हदीस ही पर अमल करना है। दीने मौहम्मदी का सही और सीधा रास्ता यही है और इन चारों इमामों को दीने मौहम्मदी की कौंसिल समझो। जो लोग इन चारों इमामों के मसलों पर अमल करते हैं उनको एहले सुन्नतवलजमाअत कहते हैं।

एक की तक़लीद कर इन चार से
काम मत रख ख़ल्क़ की गुफ़तार से

मज़हबे सुन्नत जमाअत ख़ूब है
हक़ तआला को यही महबूब है

और जो मज़हब कि हैं इससे जुदा
है नहीं राज़ी कभी उनसे ख़ुदा

राह सुन्नत की यही सीधी है राह
और हैं शैतान की राहें तबाह

है इसी मज़हब का ग़ल्बा देखले
और मज़हब हो गये इसके तले

रहते हैं ग़ालिब यही हर आन में
गुफ़्तगू में जंग में मैदान में

इमामों का बयान

इमाम उल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने फ़रमाया है कि नेक कामों में तुम जल्दी किया करो, इससे पहले कि फ़ितने पैदा हों। क्योंकि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि आदमी सुबह को मुसलमान होगा और शाम को काफ़िर और शाम को मुसलमान होगा और सुबह को काफ़िर, और अपना दीन व ईमान दुनिया के लालच में बेच डालेगा और इरशाद फ़रमाया है कि मेरे बाद जो आदमी ज़िन्दा रहेगा, वह बहुत से इख़तलाफ़ देखेगा। ऐसे वक़्त तुम को चाहिए कि मेरे और मेरे असहाब के तरीक़े को इस तरह पकड़ लेना कि जिस तरह किसी चीज़ को दाँतों से मज़बूत पकड़ लेते हैं और नये तरीक़ों से बचते रहना क्योंकि दीन में नयी बात निकालना बिदअत है और बिदअत ऐसी बुरी चीज़ है कि वह दीन से दूर कर देती है और दोज़ख़ में पहुँचा देती है। (बुख़ारी)

हज़ूर (स०) के फ़रमाने के मुवाफ़िक ऐसा ही हुआ और हो रहा है कि लोगों ने तरीक़े और फ़िरके निकाले। मुसलमान भाइयो, देखो हमारे नबी (स०) ने तो हमको पहले ही से बतला दिया है कि मेरी उम्मत में यानी मुसलमानों में तिहत्तर फ़िरक़े हो जायेंगे। और एक फ़िरक़ा जन्नत में जायेगा और बाक़ी सब फ़िरक़े दोज़ख़ में जायेंगे। आपके असहाब ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह जन्नत में कौन-सा फ़िरक़ा जायेगा ? आपने फ़रमाया कि जो फ़िरक़ा मेरे और मेरे असहाबों के तरीक़े पर होगा वह जन्नत में जायेगा।(तिरमिज़ी)

अब हर फ़िरके के लोग कहते हैं कि हम ही रसूल अल्लाह के तरीक़े पर चलते हैं और हम ही हक़ पर हैं तो ऐसे फ़ितने के ज़माने में यह बात समझने की और ग़ौर करने की है कि जिस वक़्त रसूल अल्लाह (स०) दुनिया में मौजूद थे, उस वक़्त आप के असहाबों को, दोस्तों को जिस मसले की ज़रूरत पड़ती थी आप से दरयाफ़्त कर लिया करते थे और जब आपकी वफ़ात हो गयी और आपका ज़माना ख़त्म हो गया तो दूसरा ज़माना आपके असहाबों का आया। उन्होंने जिस तरह आपको अमल करते देखा था उसी तरह अमल करते रहे और जब असहाबों का ज़माना ख़त्म होने लगा तो तीसरा ज़माना आया। उस वक़्त अल्लाहतआला ने दीन की हिफ़ाज़त के लिए इमामों को पैदा किया और उनको

कुर्आन व हदीस के इल्म के ख़ज़ाने अता फ़रमाये कि लोगों को अल्लाहतआला के अहकाम बतलायें। उन्होंने कुर्आन व हदीस को अच्छी तरह समझ कर और जांच कर तमाम अहकाम लिख दिये ताकि लोगों को दीन के अहकाम क़यामत तक मालूम होते रहें और उस बरकत वाले ज़माने के बड़े-बड़े बज़ुर्ग आलिमों ने उनमें दीन की समझ और मज़बूती देखकर उनको पसंद किया और पेशवाई की सनद अता फ़रमायी कि सब लोग क़यामत तक उनके बतलाये हुए मसलों पर अमल करें। बस जिन लोगों ने हज़रत इमाम आज़म के मसलों पर अमल किया वो हनफ़ी कहलाये और जिन लोगों ने हज़रत इमाम शाफ़ेई के बतलाये हुए मसलों पर अमल किया वो शाफ़ेई कहलाये। इसी तरह मालिकी और हम्बली कहलाये और मशहूर हुए। इन चारों इमामों के बतलाये हुए मसलों पर अमल करना बिला शुबा कुर्आन व हदीस पर अमल करना है। इनके ख़िलाफ़ मसले और तरीक़े निकालने बद-दीनी हैं और इन चारों इमामों के मसलों पर चलने वालों को मुक़ल्लिद और एहले सुन्नत कहते हैं। हिन्दुस्तान में बहुत ज़्यादा लोग इमाम आज़म के मुक़ल्लिद हैं, उनको हनफ़ी कहते हैं।

हज़रत इमाम आज़म के हालात शरीफ़ा

आप का इस्मशरीफ़ नौमान और कुनियत अबुहनीफ़ा और लक़ब इमाम आज़म है। नौशेखाँ जो मुल्क फ़ारस का बादशाह था, आप उसकी औलाद में से हैं। आपके वालिद का नाम साबित है। आप सन् 80 (अस्सी) हिजरी में पैदा हुए। यह वह ज़माना था कि रसूल अल्लाह (स०) के बाज़ असहाब उस वक़्त मौजूद थे। छोटी-सी उम्र में आपको दीन के इल्म पढ़ने का शौक़ हुआ और कुर्आन मजीद सात क़िरातों में पढ़ा और चार हज़ार आलिमों से कुर्आन व हदीस का इल्म पढ़ा। आपके उस्ताद बड़े-बड़े बुज़ुर्ग और परहेज़गार थे। आप के शागिर्द भी बड़े-बड़े आलिम और बुज़ुर्ग हुए, जैसे हज़रत इमाम यूसुफ़ और हज़रत इमाम मौहम्मद और हज़रत फ़ज़ील बिन अयाज़ और हज़रत इब्राहीम बिन अधम और हज़रत बशर हानी रह० और हज़रत दाऊद तमाई रह०। हज़रत इमाम आज़म की सबसे बड़ी बुज़ुर्गी यह है कि आपने इमामउल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के कई असहाबों की ज़ियारत की है और जिस शख़्स ने मुसलमान होने की हालत में हज़ूर पुरनूर के असहाबों को देखा उसको ताबेईन कहते हैं और ताबेईन के बारे में हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिसने मेरे देखने वाले मुसलमान यानी सहाबी को देखा, वह दोज़ख़ में नहीं जायेगा। तो आपको ताबेईन होने की बुज़ुर्गी भी हासिल है।

रोशनी हाथों में देदी है तेरे
राह सीधी आप तू अब देख ले

पेशीनगोई— बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में लिखा है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया कि मुल्क फ़ारस में अल्लाह का एक ऐसा बन्दा होगा कि अगर इल्म आसमान पर भी हो तो वह इल्म को आसमान पर से उतार लायेगा और इल्म को हासिल करेगा। यह पेशीनगोई इमाम आज़म के लिए थी। क्योंकि मुल्क फ़ारस में आपके बराबर कोई आलिम नहीं हुआ, यह ख़ास बज़ुर्गी भी आपको हासिल है। आपकी परहेज़गारी और इबादत, आपकी वफ़ात के बाद हज़रत हसन बिन अमाद जो उस वक़्त बहुत बड़े बज़ुर्ग थे, आपको ग़ुस्ल देते वक़्त उन्होंने फ़रमाया कि आप पर अल्लाह की रहमतें हों कि आप तीस बरस से हमेशा रोज़ा रखते रहे और चालीस बरस इशा की वज़ू से आपने सुबह की नमाज़ पढ़ी और सारी-सारी रात नफ़ल नमाज़ों में क़ुर्आन पढ़ा और अपनी वफ़ात की जगह आपने एक हज़ार क़ुर्आन ख़त्म किये। दोपहर को कुछ थोड़ा सा आराम करते थे बाक़ी हर वक़्त इल्म के पढ़ाने में लगे रहते थे। आपने पचपन हज किये। हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) फरमाते थे कि मैंने अबुहनीफ़ा से ज़्यादा किसी का इल्म न पाया और जिसने आपकी किताबें नहीं देखीं, उसको इल्म में कमाल हासिल न हुआ। आपकी परहेज़गारी का यह हाल था कि जिस पर आपका क़र्ज़ होता, आप उसकी दीवार के साये में खड़े न होते थे कि सूद लेने का गुनाह न हो जाये।

करामात— आपकी बहुत सी करामतें हैं। यहाँ बरकत के लिए एक ही करामत लिखी जाती है। एक दफा आप हज़ूर (स०) के रोज़ा-ए-अनवर पर हाज़िर हुए और आपने आवाज़ से फ़रमाया "अस्सलामो अलैका या सैय्यदुलमुरसलीन', उस वक़्त रोज़ा-ए-अनवर से जवाब आया "वअलैकुम अस्सलाम या इमामुल मुसलेमीन"। उस वक़्त हज़ारों आदमी वहाँ मौजूद थे। सबने ये जवाबे मुबारक सुना और उस वक़्त से आपकी इज़्ज़त और शोहरत बढ़ गयी और तमाम दुनिया में इमामे आज़म मशहूर हो गये और तमाम ज़मीन पर सब से ज़्यादा लोग आपके मुक़ल्लिद हो गये और आपके बतलाये हुए मसलों पर अमल करने लगे। अल्लाहतआला ने आपको आज़म बनाया, इमामे आज़म, मुसल्लये आज़म, मज़हबे आज़म, जमाअते आज़म।

हज़रत इमामे आज़म की वफ़ात शरीफ़ा

सन् एक सौ पचास हिजरी में सत्तर साल की उम्र पाकर आपने वफ़ात पायी और अल्लाह व रसूल के हुकमों से बाग़े दीन को रोशन और सरसब्ज़ कर

दिया। आपकी वफ़ात शरीफ़ की ख़बर सुनकर लोग इस क़दर आ गये कि पाँच दफ़ा आपके जनाज़े पर नामज़ पढ़ी गयी, यहाँ तक कि पचास हज़ार नमाज़ियों ने आपके जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी, अल्लाहो अकबर ! आप अल्लाह तआला के कैसे मक़बूल और प्यारे बन्द थे। बग़दाद में एक बादशाह ने आपकी क़ब्र शरीफ़ पर गुम्बद बनवा दिया था और क़रीब ही एक मदरसा खुलवा दिया था। बग़दाद में यह पहला मदरसा था। अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

हज़रत इमाम शाफ़ेई के हालात शरीफ़ा

आप कुरैशी हैं और इस्मे शरीफ़ आपका मौहम्मद है और शाफ़ेई लक़ब है। सन् एक सौ पचास हिजरी मुक़ाम मना में मदका शरीफ़ के क़रीब आपकी पैदाइश हुई और उसी साल में हज़रत इमाम आज़म (रह०) की वफ़ात शरीफ़ हुई। फिर हज़रत इमाम शाफ़ेई को मक्का शरीफ़ में लाया गया। आप सात बरस की उम्र में हाफिज़े कुर्आन हो गये थे और बहुत सी हदीसें भी याद कर ली थीं। फिर मक्का शरीफ़ से मदीना शरीफ़ में आकर हज़रत इमाम मालिक (रह०) से उनकी किताब मवत्ता पढ़ी और आप पद्रंह बरस की उम्र में पूरे आलिम हो गये। उस वक़्त के बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमों ने आपकी इल्मी लियाक़त और दीन में मज़बूती देखकर आपको फ़तवे देने की इजाज़त दे दी और आपको दीन की ख़िदमत के लिए पसन्द फ़रमा लिया।

करामत— आपने जवान होने से पहले हज़ूर पुरनूर स० को ख़्वाब में देखा तो हुज़ूर ने फ़रमाया— ऐ लड़के ! आपने अर्ज़ किया लब्बैका या रसूल अल्लाह यानी हाज़िर हूँ मैं या रसूल अल्लाह। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम किस क़ौम में से हो ? आपने अर्ज़ कि या रसूल अल्लाह, मैं कुरैशी हूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया मेरे पास आओ और अपना मुँह खोलो।

हज़रत इमाम शाफ़ेई रह० फ़रमाते हैं कि मैंने पास जा कर अपना मुँह खोल दिया। हज़ूर ने अपना आबे दहन मेरे मुँह में डाला और फ़रमाया अल्लाह तआला, तुम्हारे इल्म में तरक्क़ी और बरकत अता फ़रमाये।

आप फ़रमाते हैं कि उस ख़्वाब के बाद इल्म हदीस में मुझसे कोई ग़लती नहीं हुई। आप जब इल्म की पढ़ाई से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत इमाम मालिक (रह०) से इजाज़त लेकर बग़दाद में गये। वहाँ के आलिमों को इम्तिहान दिया और सनद हासिल की। फिर मक्का शरीफ़ में तशरीफ़ ले आये। फिर बग़दाद में गये। फिर वहाँ से मिस्र में गये और वहाँ रहकर किताबें लिखीं और इल्म पढ़ाने में मशग़ूल हुए। चौदह किताबें असूल-ए-दीन में और सौ से ज़्यादा फ़रूआत

दीन में लिखीं। हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रह०) तीन लाख हदीसों के हाफ़िज थे, फिर भी आपके शागिर्द हुए। एक दफ़ा लोगों ने हज़रत इमाम अहमद से कहा कि आप तो हदीसों के हाफ़िज हैं, फिर क्या वजह है कि एक जवान लड़के के शागिर्द हो गये और उसकी ताज़ीम करते हैं। फ़रमाया कि जितनी हदीसें मुझे याद हैं इमाम शाफ़ेई उनका मतलब समझते हैं। अगर वो न होते तो मैं इल्म के दरवाज़े पर ही पड़ा रहता। इल्मे फ़िक़ा का दरवाज़ा मुझपर उन ही की बरकत से खुला है। आपकी वफ़ात के बाद हज़रत इमाम अहमद चालीस बरस तक आपकी मग़फ़रत के लिए दुआ करते रहे।

एक दिन इमाम अहमद के साहबज़ादे ने पूछा कि शाफ़ई कौन थे, जिनके लिए आप दुआ माँगते रहते हैं। फ़रमाया इमाम शाफ़ेई दुनिया में आफ़ताब थे और खुदा के बन्दों के लिए अमन और आसानी का वसीला थे। सुबहानअल्लाह हज़रत इमाम शाफ़ेई भी कैसी मुबारक शान रखते थे। जुमे के दिन सन् दो सौ चार हिजरी में आपने वफ़ात पायी। रहमतें नाज़िल हों आप पर अल्लाह की।

हज़रत इमाम मालिक के हालात शरीफ़ा

आप अपनी वालिदा साहिबा के पेट में दो बरस रहे और सन् पिच्चानवे हिजरी में पैदा हुए और चौरासी बरस की उम्र शरीफ़ पाकर इस दुनियाए फ़ानी को छोड़ा। आपको हदीसों के याद करने का बहुत शौक़ था और हज़ूर (स०) की सुन्नत के बड़े आशिक थे। सतरह बरस की उम्र में हदीसों का याद करना शुरू किया और बेशुमार हदीसों के आप हाफ़िज हो गये। हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) आप के शागिर्द हैं। आपने अपनी किताब मवत्ता में से एक-एक हज़ार हदीसें शागिर्दों को पढ़ायी और तमाम उम्र मदीना शरीफ़ में रहे। जब आप हदीस शरीफ़ पढ़ाने बैठते तो वज़ु करके खुशबू लगाते और फ़रमाते कि मेरा दिल इससे बहुत खुश होता है कि रसूल अल्लाह की हदीसों की खूब ताज़ीम करूँ।

सुबहानअल्लाह! आप भी अल्लाहतआला के मक़बूल और प्यारे बन्दे थे। अल्लाहतआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

हज़रत इमाम अहमद के हालात शरीफ़ा

सन् एक सौ चौंसठ हिजरी शहर बग़दाद में आप पैदा हुए और सन् दो सौ इकतालीस में सतत्तर बरस की उम्र में आपने वफ़ात पायी। आप इल्म हदीस और फ़िक़ा में यानी हदीसों का मतलब समझने में हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) शागिर्द हैं और आपके शागिर्द भी बड़े-बड़े दर्जे के आलिम और इमाम हुए जैसे इमाम बुख़ारी (रह०), इमाम मुस्लिम। आपकी दुआ बहुत जल्दी क़बूल होती थी।

3

हज़रत इमाम शाफ़ेई ने आपके बारे में फ़रमाया है कि मैंने बग़दाद में अहमद बिन हम्बल के बराबर परहेज़गारी और इल्मी लियाक़त में किसी को नहीं देखा। आपकी किताब मुसनद शरीफ़ इल्मे हदीस में बड़ी मौतबर और मशहूर है। इसमें तीस हज़ार से ज़्यादा हदीसें हैं।

करामत— हज़रत सिर्री सक़ती (रह०) फ़रमाते हैं कि कूफ़े के हाकिम ने लोगों के बरग़लाने से आपको अपनी कचहरी में बुलाया और कहा तुम कुर्आन को मख़लूक़ कह दो। आपने जवाब दिया कि कुर्आन मजीद अल्लाह तआला का कलाम है। मैं इसको मख़लूक़ नहीं कह सकता। यह जवाब सुनकर हाकिम ने आपके हाथ पाँव बँधवाकर ऊपर लटकवा दिया और हुक्म दिया कि इसको कोड़े मारो। जब कोड़े लगने लगे तो आपका कमरबन्द खुल गया। उसी वक्त ग़ैब से दो हाथ ज़ाहिर हुए और कमरबन्द बाँध कर ग़ायब हो गये। आपकी यह करामत देख कर हाकिम काँप गया और आपको छोड़ दिया। जब आप छूट कर आये तो लोगों ने कहा—जिन लोगों ने आपको तकलीफ़ दी है उनके लिए बददुआ कीजिए। आपने फ़रमाया, मैंने उनको माफ़ किया। इसलिए कि वह मुझको ग़लती पर समझते थे।

करामत— आपकी वफ़ात शरीफ़ा जुमे के दिन चाश्त के वक़्त बग़दाद में हुई और अस्र की नमाज़ के बाद आपको दफ़न किया गया। जब आपका जनाज़ा लेकर चले तो हज़ारहा परिन्दे आपकी जुदाई में बेक़रार होकर आपके जनाज़े पर उड़-उड़ कर गिरते थे। यह करामत देखकर चालीस हज़ार आदमी मुसलमान हो गये। लिखा है कि आपकी वफ़ात के बाद किसी बज़ुर्ग ने आपको ख़्वाब में देखा और दरयाफ़्त किया कि हज़रत बतलाइए अल्लाह तआला के यहाँ कैसी गुज़री। फ़रमाया मेरे रब ने मुझको बख़्श दिया और बुज़ुर्गी का ताज मेरे सर पर रखा और मुझसे फ़रमाया, ऐ अहमद! ये बुज़ुर्गी का ताज उस मसले की बदौलत तुमको दिया गया है कि तुमने हमारे कलाम को मख़लूक़ नहीं कहा था और तकलीफ़ बर्दाशत की थी। अल्लाहो अकबर! आप भी बड़ी शान के इमाम थे। अल्लाहतआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

हज़रत इमाम यूसुफ़ (रह०) के हालात शरीफ़ा

आप हज़रत इमाम आज़म (रह०) के शागिर्द हैं। आप तीन बादशाहों के यहाँ [illegible] भी रहे हैं। आप दिन-रात दीन की ख़िदमत में लगे रहते थे लेकिन फिर भी दिन-रात में अलावा फ़र्ज़ नमाज़ों के दो सौ रकअत नमाज़ नफ़िल [illegible] थे। कुर्आन मजीद की तफ़सीर के आप हाफ़िज थे। सन् एक सौ अस्सी हिजरी

में आपने वफ़ात पायी। सुबहानअल्लाह! आप भी बड़ी शाने अज़ीम रखते थे। अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

हज़रत इमाम मौहम्मद के हालात शरीफ़ा

आप भी हज़रत इमाम आज़म (रह०) के शागिर्द हैं। आप क़ुर्आन व हदीस के इल्म में इतना बड़ा दर्जा रखते थे कि हज़रत इमाम शाफ़ेई आप के शागिर्द हैं। आपके और भी शागिर्द बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिम हुए। नौ सौ निन्नानवे किताबें दीन की ख़िदमत में आपने लिखीं। सन् एक सौ अस्सी हिजरी में आपने वफ़ात पाई। सुबहान अल्लाह! आप भी बड़ी शान के इमाम थे।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह०) के हालात शरीफ़ा

आप जुमे के दिन तेरह शव्वाल एक सौ चौरानवे हिजरी में नाबीना ही पैदा हुए। आपकी वालिदा को बहुत ग़म रहता था, और दुआ करती रहती थीं। हज़रत इब्राहीम (अ०) उनको ख़्वाब में नज़र आये और फ़रमाया—बेटी, तुम्हारे बेटे की आँखें दरूस्त हो गयीं। अल्लाहतआला को तुम्हारा रोना और दुआ करना बहुत पसन्द आया। जब आप सुबह को उठे तो आँखों को दरूस्त पाया। आपकी वालिदा को निहायत मुसर्रत हुई। फिर दस बरस की उम्र में आपको इल्म पढ़ने का शौक़ पैदा हुआ। जिस जगह क़ुर्आन व हदीस का इल्म सुनते, वहाँ जाकर इल्म हासिल करते। यहाँ तक कि आप बहुत बड़े दर्जे के आलिम और फ़ाज़िल हो गये और उस्तादों से इम्तेहान देकर सनदें हासिल कीं, फिर अपने भाई और वालिदा के साथ हज को गये और वहीं रहने लगे और छः लाख हदीसों में से ख़ूब सोच समझ कर अपनी किताब बुख़ारी शरीफ़ लिखी। क़ुर्आन मजीद के बाद आलिमों के नज़दीक बुख़ारी शरीफ़ इल्म हदीस में सब किताबों से बड़ा दर्जा रखती है और बड़ी मौतबर और मशहूर है। समरक़न्द के क़रीब सन् दो सौ हिजरी के अन्दर एक गाँव में बासठ बरस की उम्र में आपने वफ़ात पायी। सुबहान अल्लाह! आप भी बड़े दर्जे के इमाम थे। रहमतें हों अल्लाहतआला की आप पर।

हज़रत इमाम मुस्लिम के हालात शरीफ़ा

आप नेशापुर के रहने वाले हैं। सन् दो सौ हिजरी में आप पैदा हुए। आपने बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमों से इल्म हासिल किया और इम्तेहानों में पास होकर सनदें हासिल कीं। इल्म से फ़ारिग़ होकर आपने अपनी किताब मुस्लिम शरीफ़ लिखी। बुख़ारी शरीफ़ के बाद उल्मा के नज़दीक इल्म हदीस में इसका बड़ा दर्जा

है और बड़ी मौतबर और मशहूर है। सत्तावन बरस की उम्र पाकर आपने वफ़ात पायी। इन्नालिल्लाह!

सुबहान अल्लाह! कितनी बड़ी शान के आप इमाम थे। रहमतें हो आप पर अल्लाह तआला की।

फ़ायदा— मुसलमान भाइयो! इस आजिज़ ने एक नमूने के तौर पर ये हालात इमामों के लिखे हैं वरना उन हज़रात की शाने अज़ीम में किताबें भरी पड़ी हैं। ग़ौर से देखोगे, समझोगे तो ज़रूर मालूम हो जायेगा कि उस मुबारक ज़माने के बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमों ने उन इमामों को पढ़ाया और दीन में उन की समझ और मज़बूती देख कर उनको सनदें दीं और दीन की ख़िदमत उनके सपुर्द की और उनको इमाम और पेशवा बनाया। आजकल की तरह दज्जालपन नहीं था कि कुछ सर्फ़ व नहव और दो-चार किताबें अरबी की पढ़कर खुद ही अल्लामा और मुजतहिद बन गये और दीन की बातों में राय देने लगे। इसकी ऐसी मिसाल है जैसे कोई आदमी सूरा-ए अख़लास ज़ुबानी याद करके दावा कर दे कि मैं भी हाफ़िज़े क़ुर्आन हूँ या कोई दो-चार नुस्ख़े याद करके कहे कि मैं भी हकीम हूँ, सरासर ग़लत है। किसी ने सच कहा है कि नीम मुल्ला ख़तराए ईमां और नीम हकीम ख़तराए जान। ख़ूब याद रखो जब तक किसी शख़्स को उलमाए हक़्क़ानी पसन्द न करें, वह इस क़ाबिल नहीं कि दीन की बातों में उसकी राय पर अमल किया जाये। ऐसे ही बेइल्म और जाहिल लोगों की वजह से मुसलमानों में फिरक़े चले जाते हैं और झगड़े-फ़साद होते रहते हैं।

इमामों की तक़लीद का मसला

अज़ हकीमुलउम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी (रह०) चिश्ती हनफ़ी— यह ख़याल बिल्कुल ग़लत है कि बाज़ उलज़ूम सीना बसीना हैं। हाँ यह ज़रूर है कि बाज़ उलूम फ़हमे आली से समझ में आते हैं। अक़्ल मुतवस्सित या अदना उनके समझने के लिए काफ़ी नहीं। इसी वास्ते इत्तबाहे मुजतहेदीन के कलाम को समझने के लिए हर ज़माने में उलमाए मुत्तक़ीन का इत्तबाह ज़रूरी है क्योंकि मुजतहेदीन (यानी इमामों) के कलाम को भी हर शख़्स नहीं समझ सकता। साहिबों अगर दीन संभालना चाहते हो तो हर मुसलमान को इस की ज़रूरत है कि किसी मुत्तक़ी आलिम का इत्तबा करे। इसके बग़ैर काम नहीं चल सकता मगर इस इत्तबा से यह लाज़िम नहीं आता कि हम लोग इस्तक़लालन फ़क़हा (यानी इमामों) का इत्तबाह करते हैं, बल्कि इस्तक़लालन रसूल अल्लाह (स०) ही का इत्तबाह करते हैं। मगर हमको आपका मतलब फ़क़हा (यानी

इमामों) के बयान फ़रमाने से मालूम हुआ कि हज़ूर स० का यह मतलब है।

उल्मा-ए-बाअमल की बज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह ने العلماء ورثة الانبياء यानी जो आलिम बाअमल हैं और दीन की अशाअत और ख़िदमत और अहलेदीन की रूहानी तर्बियत करते हैं कि यही काम था अम्बिया अल्लैहिस्सलाम का वर्ना बेअमल आलिमों की सख्त पकड़ भी आयी है। जो आलिम इल्म पर अमल करता है, खुदाए तआला के ख़ौफ़ से परहेज़गारी अख़्तियार करता है, उसके बारे में रसूल अल्लाह स० ने फ़रमाया है कि आलिम के लिए तमाम मख़लूक़ ज़मीन व आसमान की और पानी में मछलियाँ उसकी बख़्शीश की दुआ करती हैं और आलिम की बुज़ुर्गी आबिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं रात के चाँद की बुज़ुर्गी तारों पर और आलिम लोग वारिस हैं अम्बिया के और अम्बिया ने माल व दौलत मीरास में नहीं छोड़ा, सिर्फ़ इल्म को मीरास में छोड़ा है। सौ जिसने इल्म हासिल किया और फिर उस पर अमल भी किया, उसने पूरा हिस्सा यानी कमाल हासिल किया। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा— मुसलमान भाइयो! इस हदीस शरीफ़ में इल्मेदीन हासिल करने की बुज़ुर्गी मालूम हुई कि इल्मे दीन पढ़कर आलिम बन सकते हैं। अगर यह दौलत इल्म की नसीब न हो तो उल्मा बाअमल की सोहबत में बैठा करो। दीन के मसले उन से पूछा करो। इन्शाअल्लाह तआला उनकी सोहबत की बरकत से तुमको भी दीन का ज़रूरी इल्म हासिल हो जायेगा। देखो सहाबा रज़ी० अकसर ऐसे थे जो लिखना पढ़ना नहीं जानते थे, मगर सैयदुलउल्मा (स०) की सोहबत और बरकत से सब आलिम हो गये और ख़ूब याद रखो कि बग़ैर इल्म के इबादत भी सही नहीं हो सकती।

मौलवी किसको कहते हैं?

जानना चाहिए कि सिर्फ़ अरबी पढ़ने से आदमी मौलवी नहीं होता। चाहे वह कितनी ही अरबी जानता हो। अरबी में तक़रीर भी कर लेता हो, तहरीर भी लिख लेता हो। देखो अरबी जानने वाला अबुजहल भी था। बल्कि वह आजकल के अरबी पढ़े हुए से ज़्यादा अरबी जानता था तो फिर वह तो बहुत ही बड़े दर्जे का मौलवी होना चाहिए। हालाँकि इतनी अरबी जानने के बावजूद उसका नाम अबुजहल हुआ। तो सिर्फ़ अरबी जानने का नाम आलिम या मौलवी नहीं है। बल्कि मौलवी उस अरबी जानने वाले आलिम को कहते हैं जो मुत्तक़ी, परहेज़गार हो और मोहसिन-ए-आज़म हज़ूर स० के तरीक़े पर अमल करता हो। आपकी

सुन्नत का आशिक़ हो। क्योंकि मौलवी में निसबत और तआल्लुक़ है। मौला की तरफ़ यानी मौला वाला। बस जब तक वह अल्लाह वाला है, उस वक़्त तक मौलवी है और क़ाबिले इत्तबा है और जब उसने रंग बदला, उसी वक़्त से वह मौलवी नहीं रहा और वह इस क़ाबिल न रहा कि उसका इत्तबा किया जाये, बल्कि ऐसे गुमराह शख़्स को छोड़ दिया जायेगा चाहे वह सारी दुनिया के लोगों से ज़्यादा अरबी जानता हो। ख़ूब समझ लो चाहे वह खुदा बनता हो, नबूवत का दावा करता हो, दीन में नयी-नयी बातें निकालता हो, मरदूद है।

बैअत करना सुन्नत है

हज़रत औफ़-बिन-मालिक अशजई रज़ी० से रिवायत है कि हम लोग रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमत में सात या आठ आदमी थे। आपने फ़रमाया कि तुम रसूल अल्लाह से बैअत नहीं करते ? हमने अपने हाथ फैलाये और अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह हम किस हुक्म पर आपकी बैअत करें। आपने फ़रमाया कि उन हुक्मों पर कि अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और पाँचों वक़्त की नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो और अल्लाहतआला के अहकाम सुनो और मानो और एक बात आहिस्ता से फ़रमायी, वह यह कि लोगों से कोई चीज़ न माँगो। हज़रत औफ़ कहते हैं कि मैंने उन हज़रात में से बाज़ की यह हालत देखी है कि अगर इत्तेफ़ाक़ से किसी का कोड़ा गिर पड़ा है तो वह भी किसी से नहीं माँगा कि उठाकर उनको दे दे। (मुस्लिम शरीफ़)

फायदा— बैअत व तरीक़त और इस्लाहे आमाल का मसला—हज़रात सूफ़िया-ए-इकराम में जो बैअत का मामूल है, जिसका हासिल माहेदा इल्तज़ाम, अहकाम और अहतमाम, आमाले ज़ाहिरी व बातिनी का है, जिसको उनके उर्फ़ में बैअत और तरीक़त कहते हैं, बाज़ अहले ज़ाहिर इसको इस बिना पर बिदअत कहते हैं कि हज़ूर (स०) से मनक़ूल नहीं, सिर्फ़ काफ़िरों को बैअते इस्लाम, और मुसलमानों को बैअते जहाद करना मामूल था। मगर इस हदीस शरीफ़ में इसका बिलकुल सबूत है कि यह मुख़ातिबीन चूँकि सहाबा हैं इसलिए यह बैअते इस्लाम यक़ीनन नहीं और मज़मून बैअत ज़ाहिर है कि बैअत जहाद भी नहीं बल्कि बदलालत अलफ़ाज़ मालूम होता है कि इल्तज़ाम और अहतमाम आमाल के लिए हैं। बस मक़सूद साबित हो गया। (अज़ मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०)

मशाइख़ यानी पीरों का तरीक़ा कैसा है?

जैसे हज़रत इमाम आज़म और हज़रत इमाम शाफ़ेई और हज़रत इमाम

मालिक और हज़रत इमाम अहमद रह० कुर्आन व हदीस का हुक्म और मतलब बतलाने वाले थे, उसी तरह नफ़्स के सँवारने वाले और अल्लाहतआला की याद के तरीक़े बतलाने वाले और कुर्आन व हदीस पर अमल कराने वाले मशाइख़ यानी पीरान-ए-अज़ाम थे। उन्होंने अपने दिल की रोशनी से समझकर अल्लाह और रसूल की मौहब्बत और अताअत में दुनिया से तशरीफ़ ले गये। मशाइख़ बहुत हुए मगर उनमें से चार बहुत मशहूर हैं—

1. हज़रत शाह अब्दुलक़ादिर जीलानी 2. हज़रत शाह मोइनउद्दीन अजमेरी 3. हज़रत शाह बहाउद्दीन नक़्शबन्दी 4. हज़रत शाह शाहबुद्दीन सहरवर्दी (रह०)।

इन चारों पीराने उज़्ज़ाम के सिलसिले और तरीक़े जारी हैं। इन पीरों के तरीक़े में मुरीद होकर अपने नफ़्स को सँवारने और अल्लाहतआला की याद और मौहब्बत दिल में बसावे। सुबहान अल्लाह! पीराने उज़्ज़ाम के तरीक़े नूर ही नूर हैं। देखो, बग़ैर पीर कामिल के आदमी सँवर नहीं सकता। जैसे बग़ैर उस्ताद के इल्म नहीं हासिल हो सकता, बल्कि कोई हुनर वग़ैरा भी बग़ैर उस्ताद कामिल के हासिल नहीं हो सकता। अगर अल्लाह को राज़ी करना चाहते हो तो उस्ताद कामिल यानी पीर का दामन पकड़ो। मौलाना रोम फ़रमाते हैं—

बे इनायात हक़ व ख़ासाने हक़
गर मलक बाशद सिया हस्तश वरक़

यानी बग़ैर ख़ुदा की मेहरबानी और उसके प्यारे बन्दों की मेहरबानी के अगर कोई फ़रिश्ता भी हो जाये, तब भी उसका आमालनामा सियाह होगा। बख़ोयम ज़ी सपश राहे असीरज़, पीर जोयम पीर जोयम पीर पीर। यानी इस हक़ीक़त को पहचान लेने के बाद मैं आसमान का रास्ता न तलाश करूँगा, यानी बे रहबर के अल्लाह तआला के रास्ते में क़दम न रखूँगा। बस, अब तो पहले पीर तलाश करूँगा, पीर तलाश करूँगा, पीर तलाश करूँगा।

यक ज़माना सोहबते बाऔलिया
बेहतर अज़ सद साल ताअत बे रिया

यानी औलिया की एक वक़्त की सोहबत सैकड़ों बरस की इबादत से बेहतर है।

बे रफ़ीक़े हर कि शुद दर राहे इश्क़
उम्र बगुज़िश्तो नशुद आगाहे इश्क़

यानी अल्लाह तआला की मौहब्बत के रास्ते में जिसने बग़ैर रहबर और रफ़ीक़ के क़दम रखा, उसकी उम्र तमाम हो गयी, मगर अल्लाह तआला की रज़ा हासिल न कर सका।

वली किसको कहते हैं ?

मुसलमान जब ख़ूब इबादत करता है और बुरे कामों से बचता है और दुनिया की मौहब्बत छोड़ देता है और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ताबेदारी ख़ूब करता है तो वह अल्लाह का दोस्त और प्यारा हो जाता है। ऐसे शख़्स को वली कहते हैं। वली से कभी-कभी ऐसी बातें भी होने लगती हैं जो और लोगों से नहीं हो सकतीं। ऐसी बातों को करामत कहते हैं। अगर कोई शख़्स शरीअत के ख़िलाफ हो और उससे कोई ऐसी अजीब बात ज़ाहिर होती हो जो और लोगों से न हो सके तो वह जादू है या उसका कोई करतब या शोबदा है। ऐसे करतब और शोबदे तो काफ़िर जोगी वग़ैरा भी हासिल कर लेते हैं। ऐसा शख़्स वली नहीं हो सकता। वली लोगों को कभी-कभी बाज़ बातें भेद यानी ग़ैब की बातें जागते में या सोते में मालूम हो जाती हैं। ऐसी बातों को कशफ़ और इल्हाम कहते हैं। अगर वो बातें शरीअत के मुवाफ़िक़ हों तो अच्छी हैं, वरना शैतानी जाल है। ऐसी बातों को हरगिज़ न मानना चाहिए।

वली लोग दुनिया में अल्लाहतआला के बड़े मक़बूल और प्यारे बन्दे होते हैं। उनकी सोहबत में बैठना, उनसे मौहब्बत करना और उनकी इज़्ज़त और ख़िदमत करना और उनकी नसीहत पर अमल करना, अल्लाहतआला को राज़ी करना है और उनको तकलीफ़ देना और नाराज़ करना अल्लाहतआला के क़हर की निशानी है। वह ऐसी बरकत वाले बन्दे होते हैं कि उनकी बरकत से बारिश होती है। अल्लाहतआला का ग़ुस्सा और अज़ाब टल जाता है। आफ़तें और मुश्किलें दूर हो जाती हैं। उनकी बरकत से दुआएँ क़बूल होती हैं। उनके देखने से ख़ुदा याद आ जाता है। ख़ूब याद रखो कि जो शख़्स शरीअत के ख़िलाफ हो, वह हरगिज़ वली नहीं हो सकता—

गरचे उड़ता हो हवा पर रात दिन
तर्क सुन्नत जो करे शैतान गिन

इस ज़माने में बहुत इन्सान हैं
आदमी की शक्ल में शैतान हैं

रात-दिन डूबे जहालत में रहें
अक़्ल से क़ुर्आन के मानी कहें

नाम के मुरशिद बहुत गुमराह हैं
दीन के दुश्मन हैं वो बदराह हैं

छोड़कर मानी ए तफ़सीरो हदीस
जो मे जो आता है कहते है ख़बीस

कामिल पीर की पहचान

ख़ातिम उल अम्बिया हबीबे किबरिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) पर नबूवत खत्म हो चुकी। आपके बाद न नबी पैदा हुआ और न क़यामत तक पैदा होगा कि लोगों को खुदा की तरफ़ बुलाये और दीन का रास्ता बतलाये। लेकिन आपके तुफ़ैल और बरकत से आपकी उम्मत में आपकी ताबेदारी करने वाले उल्मा-ए-हक्क़ानी व सूफ़ियाए रब्बानी मौजूद रहे और कयामत तक मौजूद रहेंगे। जो अम्बिया (अ०) की तरह आपके हुक्मों के मुवाफ़िक़ लोगों को दीन का रास्ता बतलाते रहेंगे। अल्लाह तआला ने इस आलमे असबाब दुनिया में यही क़ायदा रखा है कि कोई दीन का या दुनिया का कमाल बग़ैर उस्ताद के हासिल नहीं हो सकता, फिर अल्लाहतआला को राज़ी करने का और नफ़्स को उसके हुक्मों पर चलाने का तरीक़ा बग़ैर उस्ताद यानी पीर के कैसे मालूम होगा।

हज़रत मौलाना रोम फ़रमाते हैं—

मौलवी हरगिज़ न शुद मौलाए रोम—ता ग़ुलामे शम्स तबरेज़ी न शुद। इसलिए कामिल पीर की पहचान लिखी जाती है कि अगर कोई खुदा का बन्दा या बन्दी यह चाहे कि कोई पीर कामिल मिले तो उससे खुदा को राज़ी करने का तरीक़ा सीखे, और उसके बतलाये हुए तरीक़े पर अमल करे कि खुदा राज़ी हो तो मुरीद होने से पहले पीर में यह निशानियाँ देख ले। कामिल पीर की ये सात निशानियाँ हैं—

1. उसको बक़दरे ज़रूरत दीन का इल्म हो 2. समझदार, आलिम लोग उसको पसन्द करते हो 3. जितना इल्म रखता हो, उस पर अमल करता हो 4. उसकी सोहबत में यह बरकत हो कि दिन-ब-दिन दुनिया में नफ़रत होने लगे और अल्लाह तआला से मौहब्बत बढ़ने लगे 5. समझदार दीनदार लोग उसको अच्छा समझते हो। अमीर और जाहिल लोगों के अच्छा समझने का कोई ऐतबार नहीं 6. वह किसी कामिल और सच्चे बुज़ुर्ग का इजाज़त्याफ़्ता हो। उसने मुरीद करने की इजाज़त दी हो 7. उसके मुरीदों में ज़्यादा की हालत अच्छी हो, यानी दीनदार ज़्यादा हों और वह अपने मुरीदों को ख़िलाफ़े शरह बातों पर रोक-टोक भी करता हो।

बस जिस बुज़ुर्ग में यह निशानियाँ मालूम हों, वह कामिल पीर है। उसके मुरीद हो जाओ और खूब दिल जमा कर उसके कहने पर अमल करो, चाहे दिल

को कितनी ही तकलीफ़ हो और उसको किसी तरह की तकलीफ़ मत दो। उसका दिल खुश रखो। बस जो उसकी मर्ज़ी हो वह करो। अपनी मर्ज़ी को छोड़ दो। कुछ दिनों मशक़्क़त और मेहनत होगी, फिर राहत ही राहत है।

राहे सुन्नत पर जो चलता हो मदाम
यादे हक़ से रात दिन रखता हो काम

उसकी सोहबत में खुदा होता हो याद
जुज़ खुदा उस की न हो कोई मुराद

फ़ैज़े हक़ से जिसका दिल मामूर हो
मुरशिद अपना कर तू ऐसे पीर को

उस की बातों में सरासर नूर हो
याद रख इस नुस्ख़ए अकसीर को

उसकी ख़िदमत कर बजानो दिलक़बूल
फैज़े हक़ कर उसके सीने से हसूल

ख़िदमती महरूम कभी जाता नहीं
बे किये ख़िदमत कोई कुछ पाता नहीं

जिसने की खिदमत हुआ मख़दूम वो
की खुदी जिसने हुआ महरूम वो

अल्लाहतआला को याद करने की बुज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ यानी ऐ बन्दो! तुम मुझको याद करो मैं (अपनी मेहरबानी से) तुमको याद करूँगा।

फायदा— सुब्बहान अल्लाह! बड़े खुशनसीब हैं वे मर्द और औरतें जो अल्लाह तआला की याद करते हैं। फिर अल्लाहतआला अपनी मेहरबानी से उनको याद करता है। सैयदउलज़ाकरीन हज़ूर (स०) से सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह! क़यामत के रोज़ अल्लाहतआला के नज़दीक कौन-सा बन्दा अफ़ज़ल और अकमल होगा। आपने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह को बहुत याद करता होगा और वह दुनिया में भी और आख़िरत में भी अल्लाहतआला के नज़दीक सबसे अफ़ज़ल और अकमल होगा। फिर सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में काफ़िरों से जिहाद करे यानि लड़े, क्या अल्लाह तआला की याद करने वाला उससे भी अफ़ज़ल और अकमल है। आपने

फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स काफ़िरों और मुशरिकों के साथ इस क़दर तलवार मारे की तलवार टूट जावे और वह शख़्स जख़्मों की वजह से ख़ून में भी रंगा जावे, तब भी अल्लाह-तआला को याद करने वाला उससे अफ़ज़ल और अकमल है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

फायदा— इसकी वजह क्या है कि अल्लाहतआला की याद करने वाला जिहाद करने वाले से भी अफ़ज़ल और अकमल है। वजह ज़ाहिर है कि जिहाद भी अल्लाह तआला ही की याद के लिए मुक़र्रर हुआ है। जैसे वज़ू नमाज़ के लिए मुक़र्रर है। बड़े अफ़सोस की बात है कि अल्लाहतआला का ज़िक्र पाक कितनी बड़ी नैमत है और हम इस नैमत से ग़ाफिल और बेपरवाह हैं और महरूम हैं, कि जिसमें न गिनती की क़ैद, न तस्बीह की, न बुलन्द आवाज़ से पढ़ने की, न वज़ू की, न क़िबले की तरफ़ मुँह करने की, न किसी ख़ास जगह की, न कारोबार छोड़ने की क़ैद, हर तरह अख़्तियार है कि चलते-फिरते, उठते-बैठते हर वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र। उसका नाम पाक पढ़ते रहें तो कोई मुश्किल बात नहीं। किसी ने खूब कहा है कि—

अल्लाह ही अल्लाह बोल तेरा क्या लगेगा मोल
अयाँ अल्लाह ही अल्लाह है निहाँ अल्लाह ही अल्लाह है।
यहाँ अल्लाह ही अल्लाह है वहाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

वो शीरी नाम है अल्लाह का जब उसको लेते हैं।
चिपक जाती है तालू से ज़बाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

गुज़रती है शहादत पंचगाना उसकी मस्जिद से।
न आये गर यकीं सुन लो अज़ाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

करो अल्लाह ही अल्लाह दम-ब-दम अल्लाह खुश होगा।
वहाँ रहमत बरसती है जहाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

मुसलमान भाइयो और दीन की बहिनो ! अल्लाहतआला की याद बहुत बड़ी नैअमत है। इसी से दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त है। खुदा की क़सम एक मर्तबा अल्लाह कहना दोनों जहान की नैअमतों से अफ़ज़ल है। वहाँ जो कुछ मिलेगा मरकर मालूम होगा। यहाँ दुनिया में भी वह हिलावत और लज़्ज़त इस नामे पाक में है कि सारी ज़मीन की बादशाहत भी इसके मुकाबले में गर्द है और अगर खुदा की याद न हो तो खुदा की क़सम अगर सारी दुनिया की बादशाहत भी मिल जाये तो हरगिज़-हरगिज़ कामयाबी न होगी। यानी यहाँ दुनिया में भी राहत व चैन न होगी और न मरने के बाद राहत व आराम मिलेगा। बेशक

अल्लाह तआला की याद बहुत बड़ी नैमत है। इसकी बरकत से इन्सान को बड़े-बड़े दर्जे मिलते हैं अल्लाहतआला का प्यारा और वली हो जाता है। देखो हज़रत शाह मोईनुद्दीन अजमेरी (रह०) की जब वफ़ात का वक़्त करीब आया तो रात को उस वक़्त के वलियों ने हुज़ूर (स०) को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर ने सबसे फ़रमाया कि अल्लाह के दोस्त मोइनुद्दीन दुनिया से आने वाले हैं। आओ उनकी पेशवाई और ताज़ीम के लिए चलें और जब आपकी वफ़ात हो गयी तो खुद-ब-खुद अल्लाह तआला की कुदरत से आपकी पेशानी पर यह अलफ़ाज नूर से लिखे हुए लोगों ने देखे। मौत पायी अल्लाह के हबीब ने अल्लाह की मौहब्बत में और जब हज़रत शाह फ़रीदउद्दीन शकर गंज (रह०) ने वफ़ात पायी तो ग़ैब से आवाज़ आयी कि अल्लाह के दोस्त फ़रीद ने वफ़ात पायी और अपने महबूब के पास पहुँच गये। सुबहान अल्लाह! क्या शाने अज़ीम है अल्लाहतआला को याद करने वालों की और अल्लाहतआला भी बड़ी क़द्र करते हैं अपने याद करने वालों की। सैय्यदुल ज़ाकरीन हज़ूर स० फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान अल्लाहतआला की याद करने वाला मरता है तो जिस-जिस जगह उसने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया था और नमाज़ पढ़ी थी उस ज़मीन और आसमान के टुकड़े उसकी मौहब्बत में रोते हैं।

अल्लाहतआला फ़रमाता है कि इसके मरने पर क्यों रोते हो? वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! यह शख़्स हमको इसलिए प्यारा था कि जिस तरफ़ निकलता था आपका ज़िक्र करता था। सुबहान अल्लाह! क्या शान व इज़्ज़त है अल्लाह तआला के ज़ाकरीन बन्दों की। उनका जीना, मरना, चलना, फ़िरना और सोना, जागना सब रहमतों से भरा हुआ है। मुसलमान भाइयो और बहिनो ! ख़ूब याद रखो, मरने के बाद क़ब्र में और आख़िरत के मुल्कों में जाना पड़ेगा। और वहाँ अल्लाह व रसूल की ताबेदारी का सिक्का चलेगा। उस वक़्त क़दर मालूम होगी कि अल्लाह तआला की याद और ताबेदारी कितनी बड़ी दौलत है। मरने के बाद हर आदमी यह तमन्ना करेगा कि कोई अज़ीज़ो अक़ारिब, यार दोस्त एक दफ़ा सुबहान अल्लाह या सूरा-ए-अख़लास पढ़कर सवाब पहुँचा दे। आज हम इस दुनिया की ज़िन्दगी में सुबहान अल्लाह या सुरा-ए-अख़लास हजारों दफ़ा पढ़ सकते हैं।

जो कि करना था किया तुमने न काम।
उम्र बातों में करी नाहक तमाम॥

चिक़-चिक़, बक-बक में उम्रे अज़ीज़।
तुमन खोई रायगाँ ऐ पुर तमीज़॥

पर कभी तुमने न ज़िक्र उसका किया।
जिसने कि तुमको दिया ज़हनो ज़का॥

ज़िक्र में और फ़िक्र में ग़ैरों के आह ।
जान और तन को किया नाहक़ तबाह॥

आख़िरत के काम से ग़ाफ़िल न हो।
दौलते दुनिया पे तू मायल न हो॥

कुछ न अपने रब की तुमने याद की।
उम्र अपनी मुफ़्त में बर्बाद की॥

देखे ले अच्छा सा रहबर ऐ अज़ीज़।
गर तुझे कुछ भी है अक़लो तमीज़॥

उस की ख़िदमत कर बजानो दिल क़बूल।
जिक्र हक़ कर उसके सीने से हसूल॥

पीरो मुरशिद ये मेरी गुफ़्तार हो।
गर अमल कर लो तो बेड़ा पार हो॥

मुसलमान भाइयो और बहिनो! अल्लाहतआला का नामे पाक बहुत ही बरकत वाला है और बहुत बड़े-बड़े असर रखता है। चौदह तबक़ के फ़रिश्ते भी उसकी तासीरें और बरकतें नहीं लिख सकते। बेशुमार लोग इसकी बरकत से अल्लाह तआला के प्यारे और दोस्त हो जाते हैं। यह आजिज़ एक हल्की-सी बरकत और तासीर अल्लाहतआला के नामे पाक की अर्ज़ करता है कि कोई मर्द या औरत नमाज़ रोज़े का पाबन्द होकर और हलाल रिज़्क़ खा कर बावज़ू क़िब्ले की तरफ मुँह करके जिस वक़्त भी रात या दिन में मौक़ा मिले, वक़्त मुक़र्रर पर रोज़ाना पाँच हज़ार मर्तबा इस्म मुबारक यानी अल्लाह पढ़ा करेगा तो कुछ अरसे में रोशन ज़मीर और साहिबे कशफ़ हो जायेगा। अल्लाहतआला की मौहब्बत और इबादत में लज़्ज़त आया करेगी और महबूबे ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ज़ियारते मुबारक से मुशर्रफ़ हुआ करेगा और दुनिया में किसी का मौहताज न होगा और अल्लाह तआला की मदद उसके साथ होगी और ईमान के साथ दुनिया से उठाया जायेगा और अल्लाह के प्यारों में हो जायेगा।

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबु हरेरा (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह स० ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाहतआला के फ़रिश्ते ज़मीन पर फिरते हैं और तलाश करते हैं अल्लाहतआला की याद करने

वालों को। बस जब उन लोगों को पाते हैं जो अल्लाहतआला को याद करते हैं तो एक दूसरे को आवाज़ देता है कि इधर आओ और वो फ़रिश्ते अल्लाहतआला को याद करने वालों को आसमान तक अपने परों के साये में ढक लेते हैं। जब वह ज़िक्र से फ़ारिग़ होते हैं तो फ़रिश्ते आसमान पर चढ़ जाते हैं। फिर अल्लाहतआला उनसे पूछता है। हालांकि वह जानता है कि ऐ फ़रिश्तो, तुम कहाँ से आये हो। वो कहते हैं कि हम तेरे उन बन्दों के पास से आये हैं जो ज़मीन पर हैं फिर अल्लाहतआला पूछता है हालाँकि वह जानता है कि मेरे बन्दे क्या कहते हैं। फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि तेरा ज़िक्र—

"सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०"।

कहते हैं। यानी तेरी पाकी बयान करते हैं। तारीफ़े और बड़ाई बयान करते हैं और तेरे सिवा किसी को इबादत के क़ाबिल नहीं समझते। तेरी तौहीद बयान करते हैं और तेरी मदद के सिवा किसी काम को अपने अख़्तियार में नहीं समझते। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि क्या उन्होंने मुझे देख लिया है? फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ रब! हमको तेरी क़सम है कि उन्होंने तुझे नहीं देखा। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि अगर वह मुझे देख लें तो उनका क्या हाल हो? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह तुझे देख लें तो तेरी बहुत ज़्यादा इबादत और बड़ाई बयान करें। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है—मुझसे वह क्या चाहते हैं? फ़रिश्ते कहते हैं कि वह तुझसे जन्नत माँगते हैं। अल्लाहतआला फ़रमाता है, क्या उन्होंने जन्नत को देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं—ऐ रब! तेरी क़सम उन्होंने जन्नत को नहीं देखा। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि अगर वह जन्नत को देख लें तो उनका क्या हाल हो ? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह इसको देख लें तो इसके बहुत शौक़ीन बन जायें और इसको बहुत माँगें और इसके हासिल करने की बड़ी कोशिश करें। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि वह बचना किस चीज़ से चाहते हैं? फ़रिश्ते कहते हैं कि दोज़ख़ से बचना चाहते हैं। फ़रिश्ते कहते है ऐ रब! तेरी क़सम उन्होंने दोज़ख़ को नहीं देखा। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि अगर दोज़ख़ को देख लें तो उन का क्या हाल हो? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह दोज़ख़ को देख लें तो उससे बहुत डरें और दूर भागें। फिर फ़रिश्ते कहते हैं—ऐ परवरदिगार, वह तुझसे अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है—ऐ फ़रिश्तो, गवाह रहो कि हमने उनको माफ़ किया

और बख़्श दिया। फिर एक फ़रिश्ता कहता है—ऐ रब, उन बन्दों में एक बन्दा ऐसा भी था कि वह अपने किसी काम को जा रहा था और तेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल था, मगर रास्ते में तेरा ज़िक्र करने वालों के पास बैठ गया था। उसके लिए क्या हुक्म है। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि मेरे वह बन्दे जो मेरे ज़िक्र में लगे रहते हैं, ऐसे हैं कि उनके पास बैठने वाला भी हमारी रहमत से महरूम नहीं होता। उनकी सोहबत की बरकत से हमने उसको भी बख़्श दिया, अगरचे वह हमारे ज़िक्र से ग़ाफ़िल था। सुबहानअल्लाह !

इस हदीस शरीफ़ से कलमा तमजीद पढ़ने की और ज़िक्र करने वालों की और उनकी सोहबत में बैठने वालों की ख़ूबियाँ मालूम हुईं कि वह अल्लाह के नेक बन्दे दिन रात उसकी इबादत और याद में लगे रहते हैं और बहुत ख़ुशनसीब हैं वह बन्दे जो जान और माल से अल्लाह वालों की ख़िदमत करते हैं और अच्छे से अच्छा सवाब पाते हैं। और याद रखो, ज़बान से अल्लाह का नाम लेना और उसकी हम्दो सना करना, क़ुर्आन मजीद पढ़ना, दरूद शरीफ़ पढ़ना या दिल से अल्लाह पाक का ध्यान रखना और उसकी नाफ़रमानी से बचना, नमाज़ पढ़ना वग़ैरा सब ज़िक्र में ही दाख़िल है और हर वक़्त उसको याद रखना तो जड़ है तमाम इबादत की, कि अपने मालिक और ख़ालिक के याद किये बग़ैर अताअत नहीं हो सकती। क्योंकि ज़िक्र से मौहब्बत होगी, फिर अताअत में आसानी हो जायेगी। देखो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मुझको बन्दा याद करता है यानी मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ। बस वह अगर मुझे याद करता है अपने दिल में तो मैं भी उसको याद करता हूँ अपने दिल में ख़ुफ़िया, कि फ़रिश्तों को भी ख़बर नहीं होती और अगर वह मुझे याद करता है जमाअत में तो भी उसको याद करता हूँ फ़रिश्तों की जमाअत में जो कि बेहतर है उनसे और अगर वह मेरे क़रीब आना चाहता है एक बालिश्त तो मैं उसके क़रीब आना चाहता हूँ एक हाथ और अगर वह मेरे क़रीब होने को एक हाथ बढ़ाता है तो मैं दोनों हाथों के फैलावो के बराबर बढ़ता हूँ और अगर वह मेरी तरफ़ आता है चल कर तो मैं उसकी तरफ़ आता हूँ दौड़ कर। यह मिसाल हमको समझाने के लिए है कि बन्दा अगर अल्लाह तआला की तरफ़ आने में ज़रा भी ख़याल करता है तो अल्लाह तआला की रहमत और तवज्जह दो चन्द सहचन्द उस पर बरसती है कि वह रहीम है, करीम है। सिर्फ़ बन्दे की तलब देखना चाहता है और फिर अपने फ़ज़लो करम का मेहं बरसा देता है। मुसलमान भाइयो ! अल्लाह की याद में लग जाओ, ग़फ़लत को छोड़ दो—

तोशा-ए-आमाल अपना साथ लेकर जाओ जी।
कौन पीछे क़ब्र में भेजेगा सोचो तो सही॥

मोमिनो रहते हो क्यों बेफ़िक्र बेग़म बेख़बर।
एक सफ़र दरपेश है दूरो दराज़ो पुर ख़तर॥

पुलसरात अज़बस कि बारीको तवीलो तेज़ है।
उसके नीचे एक दरिया आग से लबरेज़ है॥

नेको बद आमाल तोले जायेंगे मीज़ान में।
होगा हिसाब ज़र्रा-ज़र्रा हश्र के मैदान में॥

जिन और शैतान क्या बला हैं

अल्लाहतआला ने कुछ मख़लूक़ आग से पैदा करके हमारी नज़रों से उनको ढक दिया है। इनको जिन कहते हैं। वह हमको देखते हैं, हम उनको नहीं देख सकते। उनमें अच्छे और बुरे हर तरह के होते हैं। उनके औलाद भी होती हैं। उन सब में ज़्यादा मशहूर और शरीर शैतान है। उसका क़िस्सा यह है कि उसने आठ लाख बरस खुदा की इबादत की और आसमानो ज़मीन में एक बालिश्त भर कोई जगह ऐसी नहीं छोड़ी कि जहाँ उसने सजदा न किया हो। इस क़दर इबादत की वजह से उसका नाम फ़रिश्तों में अज़ाज़ील मशहूर हो गया था। जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम(अ०)को पैदा किया तो फ़रिश्तों को और शैतान को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करें। सब फ़रिश्तों ने सजदा किया और शैतान ने बड़ाई और ग़रूर की वजह से सजदा न किया। अल्लाहतआला ने फ़रमाया कि ऐ इबलीस ! तूने हमारे हुक्म से आदम को सजदा न किया। शैतान ने कहा कि मैं आदम से अच्छा हूँ। मुझे तूने आग से पैदा किया है और आदम को एक सड़ी हुई मिट्टी से, फिर मैं इस हक़ीर व ज़लील को कैसे सजदा करता? अल्लाहतआला ने फ़रमाया—ऐ शैतान ! तूने हमारी नाफ़रमानी की और तूने तकब्बुर किया। बस दूर हो जा हमसे और निकल जा हमारी जन्नत से कि तू काफ़िर हो गया। कयामत तक तुझ पर हमारी लानतें और फटकार है। शैतान बहुत खूबसूरत था, मगर उसी वक्त अल्लाह तआला की नाराज़गी और लानत का यह असर हुआ कि उसकी सूरत बदल गयी। आँखें उसकी छाती पर आ गयीं और लानत का तौक़ हमेशा के लिए गले में पड़ गया और नाम शैतान रक्खा गया। फिर शैतान ने कहा—ऐ रब ! मैं तो आदम की वजह से मारा ही गया। मुझको मोहलत दे कि मैं कयामत तक ज़िन्दा रहूँ। आदम और उसकी औलाद मुझे न देखे और मैं उनके ख़ून और गोश्त में घुस जाया करूँ। हुक्म हुआ—ये दरख़्वास्त तेरी

क़बूल की और तुझको मोहलत दी। शैतान ने कहा कि बस, अब मेरा काम बन गया, मुझे भी तेरी इज़्ज़त की क़सम है कि आदम से और उसकी औलाद से बदला लूँगा और उनको तेरे हुक्मों से रोकूँगा मगर जो तेरे ताबेदार बन्दे होंगे वह मेरे मुक़रो फरेब में नहीं आयेंगे।

अल्लाहतआला ने फ़रमाया कि तू सच कहता है। ख़ूब सुन ले, हम भी सच कहते हैं। जो कोई तेरी ताबेदारी करेगा हम उसको और तुझको दोज़ख़ में डाल देंगे।

फ़ायदा— मुसलमानों ! इस क़िस्से से सबक़ हासिल करो। शैतान के मुक्र व फ़रेब से बचो। तकब्बुर और बड़ाई को छोड़ दो। अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर चलो। बस इतना समझ लो कि जब अल्लाह व रसूल के ख़िलाफ कोई काम हो तो यह काम शैतान का है, बस उसको छोड़ दो और अगर वह ख़िलाफ़ काम कर लिया है तो अल्लाहतआला से माफी माँग लो। तौबा कर लो।

हज़रत आदम का दुनिया में तशरीफ़ लाना

हज़रत आदम (अ०) जन्नत में आराम व ऐश से रहते थे। मगर आप अपने हमशक्ल साथी के न होने से उदास रहते थे। अल्लाहतआला ने हज़रत जिबराईल (अ०) को हुक्म दिया कि जब आदम सो जायें तो उनकी बायीं पसली इस तरह निकालो की उनको तकलीफ़ न हो। जब आप सो गये तो पसली निकाली गयी और अल्लाह तआला की कुदरत से उस पसली की हज़रत हव्वा (अ०) बन गयीं। अगर पसली निकालने में तकलीफ़ होती तो मर्द को अपनी बीवी से मौहब्बत न हुआ करती। हज़रत हव्वा में वह सब आदतें और ख़ूबियाँ मौजूद थीं कि जो औरतों में होती हैं। जैसे हुस्न व जमाल, शर्म व हया, मौहब्बत व उल्फ़त, सब्र व शुक्र वग़ैरा। हज़रत हव्वा को जन्नती लिबास पहनाकर और ख़ूब सजाकर हज़रत आदम के पास तख़्त पर बैठा दिया और उसी वक़्त हज़रत आदम भी जाग गये। आप हज़रत हव्वा को देखकर बहुत ख़ुश हुए और मौहब्बत के जोश में चाहा कि उनको लिपट जावें। अल्लाहतआला ने फ़रमाया—ऐ आदम ! बिना निकाह किये इनको हाथ न लगाना। फिर आपने निकाह के लिए अर्ज़ की। अल्लाहतआला ने ख़ुतबा पढ़ा और फ़रिश्ते गवाह हुए और निकाह हो गया। हज़रत आदम ने अल्लाह तआला का इन अलफ़ाज में शुक्र अदा किया।

"सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०"।

फिर अल्लाहतआला का हुक्म हुआ—ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी हव्वा दोनों जन्नत में आराम से रहो और जो चाहो खाओ-पियो, मगर इस दरख़्त का फल मत खाइएगा। और सुन लो, शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है, तुम भी उसको दुश्मन समझो। उसके धोखे में न आना। आप ख़ूब आराम से जन्नत में रहने लगे और शैतान की तरफ़ से बेफ़िक्र हो गये कि वह तो दुनिया में है और हम जन्नत में हैं। वह यहाँ नहीं आ सकता। उधर शैतान ने इस बात पर कमर बाँध रक्खी थी कि आदम से नाफ़रमानी कराके उनको भी जन्नत से निकलवा दूँगा। उसने जन्नत में जाने की तदबीर की। शैतान अल्लाहतआला के तीन नाम जानता था। उनको पढ़कर आसमानों को तै करता हुआ जन्नत के क़रीब बैठ गया और फिर वह नाम पढ़ने शुरू किये। जन्नत की दीवार पर मोर बैठा था। उसने पूछा—तू कौन है? शैतान ने कहा—फ़रिश्ता हूँ और जन्नत में जाना चाहता हूँ, और जन्नत के दरवाज़े बन्द हैं। अगर तू मुझे किसी तरह जन्नत में ले जाये तो मैं तुझे ऐसा वज़ीफ़ा बता दूँगा जिसके पढ़ने से यह तीन बातें तुझे हासिल होंगी—1. तू कभी बूढ़ा न होगा। 2. हमेशा ज़िन्दा रहेगा। 3. हमेशा जन्नत ही में रहेगा।

मोर ने कहा कि आदम की वजह से कोई जन्नत में नहीं जा सकता और मोर ने यह सब बातें साँप को सुनायीं। साँप ने लालच में आकर जन्नत की मोरी से अपना सिर निकाला और शैतान से कहा कि वह वज़ीफ़ा मुझे बता दे, मैं तुझे जन्नत में ले जाऊँगा। शैतान ने कहा—पहले मुझे जन्नत में पहुँचा दे फिर बतलाऊँगा। साँप ने अपना मुँह खोला। शैतान झट से उसके मुँह में घुस गया और जन्नत में पहुँच गया। मोर और साँप से फिर बात भी न की और जन्नत में एक तरफ़ बैठकर रोने-पीटने लगा। हज़रत हव्वा ने पूछा—तू कौन है और क्यों रोता है? उसने कहा— फ़रिश्ता हूँ, तुम्हारे ग़म में रोता हूँ क्योंकि ख़ुदा तुम दोनों को ज़रूर एक दिन जन्नत से निकालेगा और फिर तुम मुसीबत और तकलीफ़ में पड़ जाओगे। इसलिए ख़ुदा ने तुमको इस दरख़्त का फल खाने से मना कर दिया है। ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारा ख़ैरख़ुवाह हूँ। हमदर्दी से कहता हूँ कि अगर तुमने यह फल खा लिया तो हमेशा-हमेशा जन्नत में रहोगे, कभी निकाले न जाओगे। हज़रत हव्वा को उसके रोने और क़सम खाने से यक़ीन आ गया कि ऐसा कौन बेईमान होगा जो ख़ुदा की झूठी क़सम खाये। मुक्र का रोना, झूठ बोलना, धोखा देना, झूटी कसम खाना, वादा ख़िलाफ़ी करना, कीना-कपट रखना, यानी जब मौक़ा मिलेगा बदला लूँगा और दूसरे को उजाड़ना, अल्लाहतआला से न डरना और हुक्म न मानना, हटधर्मी और ज़िद करना, यह सब गुनाह सब

से पहले शैतान ही ने किये। हज़रत हव्वा शैतान के मुक्र व फ़रेब में आ गयीं और दरख़्त से तीन फल तोड़े। एक आपने खा लिया और दो हज़रत आदम के पास लायीं और कहा कि एक फल मैंने खा लिया और यह दो आप-खा लें। आपने फ़रमाया कि अल्लाहतआला ने इसके खाने से मना फ़रमाया है। कहा यह फ़रिश्ता ख़ुदा की क़सम खाता है और हमारे ग़म में रोता है इससे ज़्यादा ग़मख़ुवार कौन होग? अगर आप न खायेंगे तो इस फ़रिश्ते के कहने के मुवाफ़िक़ आप जन्नत में नहीं रहेंगे और मैं जन्नत में आपके बग़ैर कैसे रहूँगी। इन ही बातों में हज़रत आदम भी भूल गये और फल को मुँह में डाला ही था, हलक़ से नीचे भी नहीं उतरा था कि अल्लाहतआला का ग़ज़ब आ गया। जन्नत के कपड़े उतार कर दोनों को नंगा कर दिया। बदन छुपाने के लिए उस दरख़्त के पास पत्ते लेने जाते वह दरख़्त ऊँचा हो जाता और जन्नत की तमाम चीजों की तरफ़ से कहा जाता कि हमसे दूर हो जाओ, तुम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करके मुजरिम हो गये हो। आप ख़ौफ़, शर्म व हया की वजह से बेचैन हो गये।

जिबराईल (अ०) ने कहा—ऐ आदम! तुम अल्लाहतआला से माफ़ी माँगो। आपने यह दुआ माँगी—ऐ हमारे रब, हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। हम माफ़ी चाहते हैं। अगर आप हमको माफ़ न करेंगे और रहम न फ़रमायेंगे तो टोटा पाने वालों में हो जायेंगे। हुक्म हुआ—ऐ आदम! हमने तुमको मना किया था कि इस दरख़्त का फल न खाना और यह भी बतला दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। उसके धोखे में न आना। अब इस नाफ़रमानी की सज़ा यह है कि तुम दोनों जन्नत से निकलो और दुनिया में जाओ और हज़रत जिबराईल को हुक्म हुआ कि आदम और हव्वा को साँप, मोर और शैतान नाफ़रमान को जन्नत से निकाल कर दुनिया में डाल दो।

हज़रत जिबराईल (अ०) ने उसी वक़्त सबको जन्नत से निकाला। हज़रत आदम को सरअन्दीप जो हिन्दुस्तान में एक जज़ीरा था, में डाला और हज़रत हव्वा को ख़ुरासान में और मोर को सीसतान में और साँप को कोहे इसफ़हान मे और शैतान को एक बड़े ख़ौफ़नाक पहाड़ में डाला। साँप बहुत ख़ूबसूरत था, शैतान ज़ालिम की मदद करने और लालच करने से बदसूरत हो गया और पेट के बल चलता और ख़ाक छानता फिरता है। मोर की सूरत ही बदल गयी वह अपने पाँव देख कर रोता है। शैतान दुश्मने इन्सान को यह सज़ा मिली कि लानत का तौक़ गले में पड़ा, और जो लोग उसकी ताबेदारी करेंगे, आख़िरत में सबको दोज़ख़ की आग में झोंक दिया जायेगा। मुसलमानों, इस क़िस्से से सबक़ हासिल करो। अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानियों से बचो और शैतान के मुक्र व फ़रेब में मत

आओ। किसी अल्लाह वाले की सोहबत अख़्तियार करो। देखो, ग़ौर कर लो कि नाफ़रमानी कितनी बुरी चीज़ है।

हज़रत आदम की तौबा का क़बूल होना

हज़रत आदम को जन्नत से निकालने का, दुनिया में आने का, अल्लाह तआला के नाराज़ होने का इस क़दर सदमा था कि शर्मिंदगी की वजह से सरे मुबारक झुकाये रखते थे और बहुत ही बेकरारी से रोते रहते थे। हर वक़्त यह कोशिश थी कि किस तरह मेरा क़सूर माफ़ हो जाये। लिखा है कि हज़रत आदम और हज़रत हव्वा तीन सौ बरस ऐसा रोये कि आँसुओं से नहरें बह गयीं। तमाम चरिंद-परिन्द पानी पीकर कहते थे कि सुबहान अल्लाह ! क्या उमदा और मीठा पानी है। आप उस वक़्त बहुत शर्मिन्दा होते और कहते कि हाय अफ़सोस ! मेरे क़सूर पर जानवर भी हँसते हैं। अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिलता—ऐ आदम ! यह जानवर सच कहते हैं, जो बन्दा हमारी नाफ़रमानी करके हमारे ख़ौफ़ से डरता है और शर्मिन्दा होकर रोता है तो हमारे नज़दीक उसके आँसू शहद से भी ज़्यादा मीठे होते हैं

मोहसिने आज़म हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि तीन क़िस्म की आँखें ऐसी हैं जिनको अल्लाहतआला दोज़ख़ में नहीं डालेगा— 1. वह आँखें जो अल्लाहतआला के ख़ौफ़ और शर्मिन्दगी से रोयी होंगी— 2. वह आँखें जो गुनाहों की चीज़ों को न देखें। 3. वह आँखें जो फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा नींद छोड़कर तहज्जुद की नमाज़ में जागी होंगी।

लिखा है कि हज़रत हव्वा (अ०) भी इतना रोयीं कि उनके आँसुओं से मेंहदी और सुरमा पैदा हुआ और जो क़तरे समुद्र में गिरे उनसे मोती बने।

हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की जुदाई को तीन सौ बरस गुज़र गये। वे एक-दूसरे की जुदाई में तड़फते थे कि अचानक हज़रत जिबराईल आपके पास आये और फ़रमाया कि आप हज अदा करें। आप अल्लाहतआला का यह हुक्म सुनते ही हज को चल दिये। जब अरफ़ात के मैदान में पहुँच गये तो आराम लेने को आप एक जगह बैठ गये। क्या देखते हैं कि जद्दे की तरफ से हज़रत हव्वा आ रही हैं। आप मौहब्बत के जोश में खड़े हो गये और दौड़ कर उनको लिपट गये। दोनों रोते-रोते बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। यह हाल देखकर फ़रिश्ते भी रो पड़े। उस वक़्त अल्लाहतआला की रहमत का दरिया जोश में आया और अल्लाहतआला की क़ुदरत से हज़रत आदम की नज़र आसमान की तरफ़ गयी तो क्या देखते हैं कि अरशे आज़म पर कलिमा तैयबा

"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

लिखा हुआ है। फिर आपने यह दुआ माँगी—ऐ मेरे रब, तेरे नाम के साथ जो यह नाम लिखा हुआ है, उसके तुफ़ैल से हमारा क़सूर माफ़ कर और हमको बख़्श दे। हज़रत जिबराईल उसी वक़्त अल्लाहतआला का सलाम लाये और कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ आदम। अगर तुम जन्नत में ही मौहम्मद के तुफ़ैल से दुआ माँगते तो हम तुमको दुनिया में न भेजते और तुम्हारा क़सूर माफ़ कर देते। अब हम तुमसे ख़ुश हैं। तुम्हारा क़सूर माफ़ किया, तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हारा मर्तबा पहले से ज़्यादा किया।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ط

यानी फिर जब उन्होंने माफ़ी माँगी तो उनके रब ने ज़्यादा मक़बूल बना लिया और तौबा क़बूल की। उनको हमेशा अपनी ताबेदारी में रखा और फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि आदम हमारी बारगाह में एक अज़ीमुश्शान ज़रिया और तुफ़ैल लाये हैं, सब उनकी ताज़ीम करो। यह हुक्म सुनते ही हज़ार हा फ़रिश्तों ने आपकी ताज़ीम की और आपकी बदन मुबारक से गर्द व ग़ुबार साफ़ करने लगे। (अज़क़ससुलअम्बिया)

सुबहान अल्लाह! अपने मालिक व ख़ालिक अपने ख़ुदा के सामने शर्मिंदा होना, अपने क़सूरों की माफ़ी माँगना एक अजीब बूटी है और निहायत मुबारक ईलाज और अमल है और किस क़दर अज़ीमुश्शान वसीला और नामे मुबारक है हमारे आक़ाए नामदार महबूबे ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) का।

महबूब है क्या सल्ले अला नामे मौहम्मद।
आँखों की ज़िया दिल की जिला नामे मौहम्मद॥

इस नाम की लज़्ज़त दिले उश्शाक़ से पूछो।
जान आ गयी तन में जो लिया नामे मौहम्मद॥

क़ुर्आन में जन्नत में और अरशे आज़म पर।
किस शान से अल्लाह ने लिखा नामे मौहम्मद॥

हज़रत आदम (अ०) की वफ़ात शरीफ़

लिखा है कि जब हज़रत आदम (अ०) ने दरख़्त का फल खाया तो अल्लाहतआला ने फ़रमाया—ऐ आदम! तुम्हारे क़सूर की यह सज़ा है कि दुनिया में जाओ और मेहनत करके रिज़्क़ हासिल करो। वहाँ तुमको और तुम्हारी औलाद को बिना मेहनत और तकलीफ़ उठाये रिज़्क़ नहीं मिलेगा। आख़िर आप दुनिया

में पहुँच गये। आपने और हज़रत हव्वा (अ०) ने इस दुनिया के जेलख़ाने में हर क़िस्म की तकलीफ़ें उठायीं और अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ारे। दुनिया के काम-काज के तरीक़े हज़रत जिबराईल ने अल्लाह तआला के हुक्म से सब सिखाये। खेती करना, अनाज बोना और निकालना, आटा बनाना, फिर गूँधना, आग जलाना, रोटी पकाना और खाना, फिर पेशाब-पाख़ाने की हाजित होना और उसके क़ायदे बतलाना, उसकी बदबू से आपको तकलीफ़ होना, कपड़ा तैयार करना, फिर उसको सी कर बदन ढाँकना, भूख और प्यास की तकलीफ़ उठाना वग़ैरा। आख़िर इस ग़म भरे और झूठे घर के छोड़ने का वक़्त आ गया।

इमामुल-अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने फ़रमाया कि जब हज़रत आदम (अ०) की उम्र आख़िर हुई तो उस वक़्त उनकी औलाद-दर-औलाद सब मिलाकर चालीस हज़ार आदमी हो गये थे। फिर आपने बोलना कम कर दिया। आपकी औलाद ने दरयाफ़्त किया कि आपने बातचीत करनी बिल्कुल छोड़ दी, क्या वजह है? फ़रमाया—बेटो! मैं एक क़सूर की वजह से जन्नत से निकाला गया कि जहाँ हर तरह का आराम था और इस दुनिया में डाला गया। इसमें राहत व आराम नहीं मिला और मेरी सारी उम्र इसी कोशिश में गुज़री कि किसी तरह फिर जन्नत में चला जाऊँ। अब मेरे रब ने मेरी मुराद को पूरा कर दिया और हुक्म फ़रमाया है कि बोलना कम कर दो, हमारी याद में लगे रहो और अपने घर जन्नत में जाओ। लिखा है कि जुमे के रोज़ हज़रत जिबराईल (अ०) कुछ फ़रिश्तों को लेकर आपके पास आये और अल्लाहतआला का सलाम पहुँचाया कि इतने में हज़रत इज़राईल (अ०) मलकुलमौत भी आ गये और आवाज़ दी। हज़रत हव्वा उनकी आवाज़ से डर गयीं और आपसे लिपटने लगीं। आपने फ़रमाया—ऐ हव्वा! जितनी तकलीफ़ मुझ पर आयी तुम्हारी वजह से आयी। अब मेरा आख़िरी दम है, इस वक़्त तो ज़रा अलग हो जाओ। मेरे और रब के दर्मियान रुकावट न डालो यह आवाज़ मलकुलमौत की है। अन्दर आने दो, डरो मत। फिर मलकुलमौत आ गये और आपकी रुहे मुबारक क़ब्ज़ की। हज़रत जिबरईल ने आपके बेटों को ग़ुस्ल करने का तरीक़ा बतलाया और आपको ग़ुस्ल दिया बेरी के पत्ते पानी में पकवा कर। फिर फ़रिश्ते जन्नती कपड़ों का कफ़न और ख़ुशबू लाये और नमाज़ के आज़ा पर ख़ुशबू लगायी गयी। फिर आपके जनाज़े को उठाकर काबे शरीफ़ में लाया गया। फ़रिश्ते मुक़तदी हुए। हज़रत जिबराईल इमाम बने और बुलन्द आवाज़ से चार तकबीरें कहकर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए और क़ब्र में बग़ली बनवाकर उसमें आपको दफ़न कर दिया। मस्जिदे ख़ैफ़ और मना के दर्मियान आपकी क़ब्र शरीफ़ है। रंग आपका गन्दुमी और क़द साठ

हाथ लम्बा और सात हाथ चौड़ा था। आपकी वफ़ात के बाद एक साल ज़िन्दा रह कर हज़रत हव्वा (अ०) ने भी इस दुनियाए फ़ानी को छोड़ा। उनकी क़ब्र शरीफ़ जद्दा में है। हज़रत आदम (अ०) की उम्र शरीफ़ एक हज़ार साल की हुई। **अललाहहो बाकी मिन कुल्ले फानी** (अज़ क़सससुल अम्बिया)

जन्नत किस चीज़ का नाम है

जन्नत को अल्लाह तआला ने ईमानदार और ताबेदार बन्दों की आरामगाह बनाया है। क़ुर्आन व हदीस में उसकी नैमतों और ख़ूबियों का बहुत कुछ बयान है। कुछ बतौर नमूना लिखा जाता है—

पहले यह समझो कि जन्नत चीज़ क्या है। लुग़त में 'जन्नत' बाग़ को कहते हैं और बाग़ में फल भी होते हैं, साया भी होता है, दरख़्त और फूल भी होते हैं, फ़रहतबख़्श हवा भी होती है। पानी का इंतज़ाम भी अच्छा होता है। अब इसके साथ यह बात और मिला लो कि वह बाग़ ख़ुदाई बाग़ है। तो इससे मालूम हुआ कि वह मामूली बाग़ नहीं है। दुनिया में भी बादशाहों और अमीरों के बाग़ होते हैं। उनमें हर तरह का सामाने राहत भी बख़ूबी होता है और अजीब-अजीब चीज़ें भी होती हैं। किसी बादशाह के बाग़ में महलात वग़ैरा के अलावा अजायबखाना भी होता है। किसी के बाग़ में सैरगाहें भी होती हैं। तो अब समझो कि ख़ुदा का बाग़ कैसा आलीशान होगा, जिसके हासिल करने की ख़ुदा ने ताकीद भी फ़रमायी है। जन्नत कोई मामूली बाग़ नहीं है, बल्कि उसमें अजीबो ग़रीब सामान होंगे। जन्नत की नैमतें दुनिया की नैमतों से बहुत नफ़ीस हैं। जन्नत की नैमतों को हदीस शरीफ़ से मालूम करो। हदीस शरीफ़ में आया है कि हूरों के सर पर ऐसे नफ़ीस दुपट्टे हैं कि अगर उनका एक पल्ला दुनिया में लटक जाये तो चाँद और सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाये। जन्नत की हूरें ऐसी ख़ूबसूरत और हसीन हैं कि सत्तर जोड़ों के नीचे से भी उनका बदन झलकता है। जन्नत की मिट्टी जवाहरात और मुश्क की है। हौज़े कौसर के पानी की यह तारीफ़ है कि जिसने उसमें एक दफ़ा पानी पी लिया उसको कभी प्यास न लगेगी और कमाल यह है कि बग़ैर प्यास के भी इसको पियेंगे तब भी उसमें मज़ा आयेगा। दुनिया के पानी में प्यास के वक़्त तो मज़ा आता है लेकिन बग़ैर प्यास के मज़ा नहीं आता। जन्नत के पानी की यह शान है कि एक दफ़ा पीकर उम्र भर के लिए प्यास की तकलीफ़ जाती रहेगी। जन्नत के पानी में बग़ैर प्यास के भी मज़ा आयेगा। बताओ दुनिया में ऐसा पानी कहाँ है जिससे प्यास न लगे और बग़ैर प्यास के भी उसमें मज़ा आये। इसी पर तमाम नैमतों को समझ लो कि जन्नत की नैमतों के सामने दुनिया की नैमतें क्या चीज़ हैं। साहिबों, जन्नत

की नैमतों से तो दुनिया की नैमतों को कुछ भी लगाव नहीं। देखो इस क़दर फ़र्क़ है कि यहाँ की तमाम ग़िज़ायें थोड़ी-सी देर में बदबू, पाखाना बन जाती है, जिसकी बदबू से दिमाग़ परेशान हो जाता है। जन्नत में जितना चाहो खा लो। एक डकार ख़ुशबूदार आ जायेगी और सारा खाना हज़्म हो जायेगा या ख़ुशबूदार पसीना आ जायेगा और सारा पानी हज़्म हो जायेगा। वहाँ न पेशाब की तकलीफ़ और न पाख़ाने की, न हैज़े का अन्देशा न बदहज़मी का डर। वहाँ के आराम में तकलीफ़ का नाम भी नहीं। ग़रज़ कि जन्नत में हर वक़्त ख़ुशी ही रहेगी, ऐसी ख़ुशी कि दुनिया में उसका ख़्वाब भी न देखा होगा।

बस, ऐ मुसलमान भाइयो। अगर मरने के बाद क़ब्र में और आख़िरत में जन्नत के अन्दर ऐशो आराम से रहना चाहते हो, तो अल्लाहतआला और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ताबेदारी करो।

मौहम्मद-सा मख़लूक़ में कौन है,
उसी का तुफ़ैली है याँ जौन है।

मौहम्मद ख़ुलासा है कौनैन का,
मौहम्मद वसीला है दारैन का।

मौहम्मद की ताअत जहाँ पर है फ़र्ज़,
मौहम्मद की ताअत से जां दिल के मर्ज़।

मौहम्मद की ताअत कर आठो पहर,
कि ता जन्नत में हो जाये तेरा गुज़र।

मौहब्बत मौहम्मद की रख जान में
मौहम्मद-मौहम्मद कह हर आन में।

मौहम्मद की उल्फ़त और चाह से
मिलेगा तू इमदाद अल्लाह से।

जन्नत कहाँ पर है

जन्नत आसमान पर है और उसके ऊपर-तले आठ दर्जे हैं और आठ ही दरवाज़े हैं यानी आठ जन्नतें हैं। इसकी ख़ूबियाँ अक़्ल से बाहर हैं। जो अल्लाह का प्यारा इसमें दाख़िल हो गया फिर कभी निकाला न जायेगा। रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि अल्लाहतआला ने अपने ताबेदार बन्दों के लिए जन्नत में ऐसी नैमतें तैयार कर रखी हैं कि न किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनीं, न किसी आदमी के दिल में उनका ख़याल गुज़रा। फ़रिश्ता ऐलान करेगा

कि ऐ जन्नतियो ! तुम्हारे लिए यह बात मुक़र्रर हो चुकी है कि तुम हमेशा तन्दुरुस्त और जवान ही रहोगे। कभी बूढ़े और कमज़ोर न होगे और न कभी मरोगे। हमेशा आराम से रहोगे, कभी कोई तकलीफ़ न देखोगे। (मुस्लिम शरीफ़)

जन्नत में नहरें

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि हमने जिस जन्नत का वादा ताबेदार बन्दों से किया है उसकी यह हालत है कि उसमें बहुत-सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं कि जिसमें ज़र्रा भर भी फ़र्क़ न होगा और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिनका ज़ायेका ज़र्रा भर भी बदला हुआ न होगा तथा बहुत-सी नहरें शराबे-पाक की हैं जो पीने वालों को मज़ेदार मालूम होंगी और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ सुथरा होगा और उनके लिए वहाँ क़िस्म-क़िस्म के मेवे होंगे। उनके रब की तरफ़ से उन पर बड़ी रहमत होगी।

तो ऐ इन्सान ! क्या ऐसे लोग जो अल्लाहतआला के ताबेदार हैं उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा-हमेशा दोज़ख में रहेंगे। और नाफ़रमान बेईमानों को पकता हुआ पानी पीने के लिए दिया जायेगा। वह पानी अन्तड़ियों को काट कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (सूराए मौहम्मद)

मुसलमान भाइयो और बहिनो ! ग़फ़लत छोड़ो, जन्नत हासिल करो और दोज़ख़ से बचने का सामान तैयार करो।

बहरे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रहगुज़र दुनिया है यह बस्ती नहीं,
जाये ऐशो इशरतो मस्ती नहीं।

यहाँ से जाना होगा तुझको एक दिन
कब्र में होगा ठिकाना एक दिन।

मुँह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन,
अब न ग़फ़लत में गँवाना एक दिन।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है।
कर ले जो करना है आख़िर मौत है॥

जन्नत में हूरें और ख़ादिम

हुज़ूर पुरनूर (स०) फ़रमाते है कि जन्नत में सब से कम दर्जे के जन्नती

को अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर हूरें मिलेंगी और सौ मर्दों के बराबर ताक़त मिलेगी। दुनिया की बीवियाँ हुस्न व जमाल में नमाज़ रोज़ा अदा करने की वजह से हूरों से अफ़ज़ल होंगी और जन्नत में औलाद पैदा न होगी और न कोई जन्नत में औलाद पैदा होने की ख़्वाहिश करेगा। अगर कोई चाहे भी तो उसी वक़्त हमल रहकर बच्चा पैदा होगा और घड़ी भर में जवान हो जायेगा।

जन्नत में औलाद से मिलना

रसूले ख़ुदा स० फ़रमाते हैं कि जिन जन्नतियों की औलाद दुनिया में मर गयी होगी वह अपनी औलाद को याद करेंगे और कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमारे जिगर के टुकड़े कहाँ हैं? हमने उनको गोद में पाला था और वह बचपन ही में मर गये थे, आपको मालूम है कि हमने आपकी रज़ामन्दी के लिए सब्र किया था। अब हमको उनसे मिला दीजिए। उसी वक़्त बच्चे मिल जायेंगे। बच्चे अपने माँ-बाप से कहेंगे कि तुमने हमारे मरने पर सब्र किया था इसलिए हम तुमको मिल गये वरना हम तुमको न मिलते।

है दलील कुल्लेनफ़सिन सब फ़ना हो जायेंगे।
हम भी एक दिन राही ए मुल्के सक़ा हो जायेंगे॥

हाथ ख़ाली जायेंगे दुनिया से दौलत छोड़कर।
माल के मालिक अज़ीज़ो अक़रबा हो जायेंगे॥

पहलवाँ क्या कर रहे हैं जिस्म के आज़ा पे नाज़।
क़ब्र में कीड़े मकोड़ों की ग़िज़ा हो जायेंगे॥

हो गयी माँ-बाप से औलाद गर मर कर जुदा।
ख़ुल्द में ऐ दोस्तों सब एक जां हो जायेंगे॥

जन्नत में फल और गोश्त

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने जन्नत वालों को, उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मेवे मिला करेंगे, और परिन्दों के गोश्त उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मिला करेगा और उनके लिए गोरी-गोरी बड़ी आँखों वाली औरतें यानी हूरें होंगी जिनको मोती की तरह बड़ी हिफ़ाज़त से रखा हुआ है। यह उनके उन अच्छे अमलों का बदला होगा जो वह दुनिया में करते थे। (सूर ए वाक़ेआ)

जन्नत में अल्लाहतआला का दीदार

महबूबे ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफा (स०) फ़रमाते हैं कि जन्नती लोग

जब जन्नत में दाखिल हो जायेंगे तो अल्लाहतआला फरमायेगा— ऐ जन्नती बन्दो तुम कुछ और ज्यादा ईनाम चाहते हो। वह कहेंगे— ऐ परवरदिगार! आपने हमारे चेहरों को रोशन कर दिया और हर तरह की नेमतें बख्शीं और दोजख से निजात दी। अब तो यह ख्वाहिश है कि हम आपको देखें। तब अल्लाहतआला पर्दा उठा देगा और सब जन्नती अल्लाहतआला के दीदार पर अचानक से मुश्रर्फ होंगे। अल्लाहतआला के दीदार में वह लज्जत होगी कि जन्नती लोग जन्नत की तमाम नेमतों को उसके सामने हीच समझेंगे। जन्नत में सबसे बड़ी नेमत अल्लाहतआला का दीदारे मुबारक है। اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ شَوْقًا اِلٰی لِقَائِكَ

"ऐ अल्लाह! मैं माँगता हूँ तुझसे तेरे दीदार का शौक"।

दुआ

ऐ खुदा ऐ मेरे सनाऊल अयूब।
मेरे मौला मेरे ग़फ़्फ़ारुल ज़नूब॥
ग़र्क़ बहरे मासियत हूँ सर बसर।
रहम कर मुझ पर इलाही रहम कर॥

सुन मेरे मौला मेरी फ़रियाद को।
आ मेरे मालिक मेरी इमदाद को॥
लाख टूटी नाव है मंझधार है।
ना खुदा तू है तो बेड़ा पार है॥

क़ल्ब से धो दे मेरी हर गन्दगी।
हो अता पाकीज़ा अब तो ज़िन्दगी॥
दिल में तेरी याद लब पे तेरा नाम हो।
उम्र भर अब तो यही मेरा काम हो॥

याद में रख अपनी मुस्तग़रक़ मुझे।
हो न होशे मासिवा मुतलक़ मुझे॥
तुझपे रोशन है मेरे सारे अयूब।
जानता है तू मेरी हालत को खूब॥

गो तेरे आगे ज़लीलो ख़्वार हूँ।
हश्र में रुसवा न ऐ सत्तार हूँ॥
दिल मेरा हो जाये एक मैदाने हू।
तू ही तू हो तू ही तू हो तू ही तू॥

तुझ से दम भर भी मुझे ग़फ़लत न हो।
तेरे ज़िक्र ओ फ़िक्र से फ़ुर्सत न हो॥
बहरे हक़ सैय्यदे ख़ैरुल बशर।
ख़ातमा कर दे मेरा ईमान पर॥

जिस घड़ी निकले बदन से मेरे जाँ।
कलमए तौहीद हो विरदे ज़बाँ॥
सैकड़ों को तू करेगा जन्नती।
एक यह नाअहल भी उन में सही॥

दोज़ख़ क्या चीज़ है?

दोज़ख़ ख़ुदाई जेलख़ाना है। इसको ख़ुदा ने बेईमान और नाफ़रमान बन्दों की सज़ा के वास्ते बनाया है। उसमें हर क़िस्म के अज़ाब हैं। क़ुर्आन व हदीस में उससे बहुत डराया गया है। उसमें साँप और बिच्छू और हथकड़ियाँ, ज़ंजीरें वग़ैरा सब आग की हैं और उसकी आग दुनिया की आग से ऐसी तेज़ है कि अगर वह सुई के सूराख़ के बराबर दुनिया में लायी जाये तो सारी दुनिया जल कर ख़ाक हो जाये। अगर उसको पहाड़ों पर रखा जाये तो सारे पहाड़ जल कर कोयला हो जायें और उसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं। उससे बचने की अल्लाह तआला ने बहुत ताकीद फ़रमायी है। इसलिए हर आदमी को चाहिए कि उससे बचने की कोशिश करे। अपनी औलाद और बीवी, अज़ीज़ व अक़रबा और मुसलमानों को बल्कि काफ़िरों को भी उससे बचाने की कोशिश करे। दीन का इल्म सीखे और अपनी औलाद को भी सिखा दे। आलिमों से दीन की बातें पूछ कर अमल करे, वरना दोज़ख़ के अज़ाब से बचना मुश्किल है।

दोज़ख़ कहाँ पर है?

दोज़ख़ ज़मीन के नीचे है और इसके ऊपर-तले सात दर्जे हैं और सात ही दरवाज़े हैं। यह समझो कि सात दोज़ख़ हैं। हर क़िस्म के नाफ़रमानों की सज़ा के लिए दर्जा अलग-अलग है। उसके दरवाज़े इतने बड़े हैं कि एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक सत्तर बरस की राह है और एक दोज़ख़ दूसरी दोज़ख़ से तेज़ी में सत्तर हिस्से ज़्यादा तेज़ है और गहराई इतनी है कि अगर एक बड़ा भारी पत्थर उसके ऊपर से छोड़ा जाये और सत्तर बरस तक चलता रहे तब कहीं उसके नीचे पहुँचे। बेईमान और नाफ़रमान लोगों को फ़रिश्ते दोज़ख़ में इस तरह घसीट कर ले जायेंगे कि उनके मुँह में ज़न्ज़ीरें डाल कर पाख़ाने की जगह से निकालेंगे

और हर एक नाफ़रमान और बेईमान को उनके पीर शैतान के साथ दोज़ख़ में डाल देंगे।

हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ को हज़ार बरस तक दहकाया गया तो उसका रंग सुर्ख़ हो गया, फिर हज़ार बरस दहकाया गया तो उसका रंग सफ़ेद हो गया, फिर हज़ार बरस दहकाया गया तो उसका रंग काला सियाह हो गया। अब वह बिल्कुल काली सियाह है और यह दुनिया की आग जिसको तुम जलाते हो दोज़ख़ की आग से तेज़ी में सत्तर हिस्से कम है।

इतनी ग़फलत तू न कर मुस्लिम खुदा के वास्ते।
फ़िक्र कर कुछ तो भला रोज़े जज़ा के वास्ते॥

नफ़्स के ताबे हुए ऐसे भूले कि आह-आह।
मर मिटे दुनिया पे हम हिरसो हवा के वास्ते॥

काम कर ऐसे तू प्यारे जिनके बदले गोर में।
बाग़े जन्नत से खुले खिड़की हवा के वास्ते॥

हेफ़ तू सोता रहे हर सुबह और वक़्ते अज़ाँ।
मुर्ग़े माही सब उठें यादे खुदा के वास्ते॥

पंचगाना पढ़ शरीयत में बहुत ताकीद है।
फ़ज्र व ज़ौहर अस्र व मग़रिब और इशा के वास्ते॥

पढ़ के तू क़ुर्आन को कुछ जमा कर ले अब सवाब
क़ब्र पर कौन आयेगा फिर फातेहा के वास्ते॥

काम दोज़ख़ के करे जन्नत का हो उम्मीदवार।
कसरे जन्नत तो बना है पारसा के वास्ते॥

हक़ की नराफ़रमानियों से बाज़ आ तू बाज़ आ।
आग दोज़ख़ की भड़कती है सज़ा के वास्ते॥

ऐ खुदा हो आक़बत हर एक मोमिन की बख़ैर।
सरवरे आलम मौहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते॥

दोज़ख़ में आग के जूते

रसूले पाक हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ के अज़ाबों में सबसे हल्का अज़ाब यह होगा कि दोज़ख़ी के पाँव में सिर्फ़ आग के जूते होंगे। उनकी आँच की तेज़ी से उसका भेजा हंडिया की तरह पकता होगा और वह यह समझेगा कि

मुझसे बढ़कर किसी को इतना अज़ाब नहीं। साँप दोज़ख़ में ऊँट जैसे हैं। अगर एक साँप एक दफ़ा काट ले तो चालीस बरस तक उसको जलन रहेगी और बिच्छू ख़च्चर जैसे हैं। अगर वह बिच्छू एक दफ़ा डंक मारे तो दोज़ख़ी चालीस बरस तक तड़पता रहेगा। या अल्लाह तेरी पनाह!

दोज़ख़ का एक बड़ा भारी साँप

रसूले ख़ुदा (स०) फ़रमाते हैं कि क़यामत के रोज़ एक साँप दोज़ख़ से निकलेगा। उसका नाम ज़रीस है। उसका सर सातवें आसमान पर होगा और उसकी दुम सातवीं ज़मीन के नीचे होगी। जिबराईल उससे पूछेंगे कि तू दोज़ख़ से बाहर क्यों आया है? वह कहेगा कि मुझे मौहम्मद (स०) की उम्मत में से पाँच किस्म के आदमी लेने हैं। अव्वल नमाज़ न पढ़ने वाला। दूसरे ज़कात न देने वाला। तीसरे सूद लेने वाला। चौथे शराब पीने वाला। पाँचवें मस्जिद में दुनिया की बातें करने वाला। बस वह साँप इन पाँच किस्म के लोगों को अपने मुँह में लेकर दोज़ख़ में जा घुसेगा, और दोज़ख़ साल भर में दो साँस लेती है— एक गर्म, एक सर्द। जब दुनिया में सर्दी और गर्मी होती है तो उसकी यही वजह है।

दोज़ख़ की चीख़

रसूल अल्लाह (स०)ने इरशाद फ़रमाया कि—

जब दोज़ख़ को क़यामत के मैदान में लाया जायेगा तो उसके सत्तर बाज़ू होंगे और हर एक बाज़ू को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते पकड़े हुए होंगे और उसकी चिंगारियाँ महल जैसी होंगी। वह एक ऐसी चीख़ मारेगी कि तमाम फ़रिश्ते और जिन व इन्सान बल्कि नबी और रसूल भी सब डर जायेंगे और सब नफ़सी-नफ़सी पुकार उठेंगे। यानी ऐ अल्लाह! मेरी जान को दोज़ख़ से बचा। उस वक्त कोई ऐसा न होगा जो किसी की कुछ मदद कर सके। लेकिन हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) या राब्बि उम्मती उम्मती फ़रमायेंगे। यानी ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को दोज़ख़ से बचा। सुबहान अल्लाह! क्या शान है रहमत की और क्या चाहत है उम्मत की।

शफ़ी है आसियाँ तुम हो वसीलए बेकसाँ तुम हो।
तुम्हें छोड़ कर अब कहाँ जाऊँ बताओ या रसूल अल्लाह॥
ख़ुदा आशिक़ तुम्हारा और तुम महबूब हो उसके।
है ऐसा मर्तबा किसका सुनाओ या रसूल अल्लाह॥

यक़ीं हो जायेगा कुफ़्फ़ार को भी अपनी बख़्शीश का।
जो मैदान में शफ़ाअत के तुम आओ या रसूल अल्लाह॥
मुझे भी याद रखयो हूँ तुम्हारा उम्मते आसी।
गुनाहगारों को जब तुम बख़्शवाओ या रसूल अल्लाह॥
जहाज़ उम्मत का हक़ ने कर दिया है आपके हाथों।
बस अब चाहे डुबाओ या तिराओ या रसूल अल्लाह॥
फँसा कर अपने दामे इश्क़ में इमदाद आजिज़ को।
बस अब क़ैदे दो आलम से छुड़ाओ या रसूल अल्लाह॥

हज़रत जिबराईल का आना और दोज़ख़ की ख़बर लाना

हज़रत उन्स (र० अ०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमत में जिब्राईल अमीन आये, उनका चेहरा उदास था। आपने फ़रमाया—ऐ जिबराईल आज यह उदासी कैसी है? उन्होंने अर्ज़ की—या रसूल अल्लाह! इस वक़्त अल्लाह तआला ने दोज़ख़ के तेज़ करने का हुक्म दिया है। बस जो मर्द या औरत दोज़ख़ का होना सच जानता है और अल्लाह तआला के अज़ाब को सच्चा मानता है तो उसको चाहिए कि दोज़ख़ के अज़ाबों से डरे और अल्लाह व रसूल की ताबेदारी करे। या रसूल अल्लाह! उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको सच्चा रसूल बना कर भेजा है, अगर दोज़ख़ के कपड़ों में से एक कपड़ा ज़मीन व आसमान के दर्मियान लटकाया जाये तो दुनिया के सब लोग उसकी बदबू से मर जायें।

या रसूल अल्लाह! उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको तमाम मख़लूक़ के वास्ते रहमत बनाकर भेजा है, अगर दोज़ख़ की ज़ंजीर से एक कड़ी पहाड़ों पर रखी जावे तो पहाड़ दब कर ज़मीन के सातों तबक़ के नीचे पहुँच जायें।

या रसूल अल्लाह! उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको सच्चा नबी बना कर भेजा है, अगर दोज़ख़ सुई के बराबर भी खोल दी जाये तो उसकी गर्मी से दुनिया के सब लोग जल कर राख हो जायें।

या रसूल अल्लाह! दोज़ख़ की लपट और आँच बहुत तेज़ है और उसकी गहराई बहुत बड़ी है और उसका ज़ेवर लोहा है और उसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं। पानी उसका खौलता हुआ ख़ून और पीप जैसा है जिसको हज़ारों बरस से पकाया जाता है। फिर रहमते आलम (स०) ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ऐ

जिबराईल अमीन कौन-कौन लोग कौन-कौन-सी दोज़ख़ में जायेंगे ?

अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! पहली दोज़ख़ में मुनाफ़िक़ जायेंगे जो ज़ाहिर में मुसलमान बनते हैं और दिल में काफ़िर और बेईमान हैं और यह दोज़ख़ सब दोज़ख़ों के नीचे है और इसी में दूसरे काफ़िर लोग जैसे फिरऔन, हामान, क़ारून, नमरूद, शद्दाद वग़ैरा जायेंगे और उसका नाम हादया है। दूसरी दोज़ख़ में मुशरिक लोग जायेंगे, जो अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात में किसी मख़लूक़ को शरीक करते हैं। उसका नाम हजीम है। तीसरी दोज़ख़ में सायबीन तारों और आग वग़ैरा के पूजने वाले जायेंगे। उसका नाम सक़र है। चौथी दोज़ख़ में शैतान और उसके साथी और उसके ताबेदार जायेंगे। उसका नाम लज़ा है। पाँचवीं दोज़ख़ में यहूदी जायेंगे। उसका नाम हुतमा है। छठी दोज़ख़ में ईसाई जायेंगे। उसका नाम सईर है। इसके बाद जिबराईल चुप हो गये। आपने फ़रमाया—ऐ जिबराईल ! अमीन सातवीं दोज़ख़ का भी हाल बयान करो। उसमें कौन लोग जायेंगे ?

अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! उसका हाल कुछ न पूछिये। आपने फ़रमाया कुछ तो बयान करो। अर्ज़ की कि उसमें आपकी उम्मत के वह मुसलमान लोग जायेंगे, मर्द हो या औरतें जो बड़े-बड़े गुनाह करके बिला तौबा किये मर गये होंगे। उसका नाम जहन्नुम है। यह कहकर हज़रत जिबराईल (अ०) चले गये और हुज़ूर पुरनूर (स०) यह ख़बर वहशत असर सुनकर घबरा गये रोते हुए।

आये घर में अपने शाहे दो जहाँ,
दोनों आँखों से हुए आँसू खाँ।

हो के एक सू ख़ल्क़ से वह घर में जा,
एक गोशे में लगे करने बुक़ा।

तर्क करके ख़ल्क़ से यकसर कलाम,
घर में अपने रहते ग़म से सुबह शाम।

हाँ मगर आते थे वह बहरे नमाज़,
सुए मस्जिद बा ख़ुशी व बानियाज़।

गिरयाओ ज़ारी में रहते बेशतर,
दर्दे क़ल्बी से बहुत ख़स्ता जिगर।

हो गये सिद्दीक़े अकबर बेक़रार,
बे नबी के दिल हुआ उनका फ़िगार।

दर पे पैग़म्बर के आख़िर बारहा,
की बहुत सिद्दीक़े अकबर ने निदा।

कुछ न आया ले के अन्दर से जवाब,
और हुआ घर का न वह मफ़तूह बाब।

आये फिर दरवाज़े पर हज़रत उमर,
दर्दे क़ल्बी से निहायत चश्मे तर।

जुस्तजू की बहुत कुछ इस बात की,
ताकि हो मालूम कुछ हाले नबी।

कुछ जवाब उन को न अन्दर से मिला,
हो गये लाचार वह भी बासफ़ा।

फिर हुआ उस्मान का उस जा गुज़र,
वह भी इस ग़म से हुए ख़स्ता जिगर।

तीनों फिर रोते हुए बाचश्मे तर,
आये बीबी फ़ात्मा ज़ेहरा के घर।

मुज़तरिब होकर पुकारा या बतूल,
है मदद का वक़्त या बिन्ते रसूल।

तीन दिन से वह नबीए मुजतबा,
है अजब कुछ दर्दों व ग़म में मुबतला।

कुछ किसी से वो नहीं करते कलाम,
गिरयाओ ज़ारी में रहते हैं मदाम।

करके अपने घर के दरवाज़े को बंद,
रोते हैं अन्दर बआवाज़े बुलन्द।

फ़ात्मा सुनते ही ओढ़ अपनी रिदा,
आयी जल्दी से बसूए मुस्तफ़ा।

फ़ात्मा ने जा के दर पर ये कहा,
खोल दीजिए घर का दर या मुस्तफ़ा।

फ़ात्मा बेटी तुम्हारी या नबाद,
है ज़ियारत के लिए दर पर खड़ी।

सजदे में उस वक़्त रोते थे रसूल,
सुन उसी हालत में आवाज़े बतूल।

उठ के दरवाज़ा किया हज़रत ने वा,
फ़ात्मा बीबी को लिया घर में बुला।

यानी हज़रत फ़ात्मा (र० अ०) की आवाज़ सुनकर हुज़ूर (स०) ने हुज़ूरे शरीफ़ का दरवाज़ा खोल दिया और उनको अपने पास बैठाकर फ़रमाया— ऐ मेरी आँखों की ठंडक, मुझसे क्या चाहती हो? उन्होंने फ़रमाया, अब्बा जान! मुझे आज तीन रोज़ के बाद मालूम हुआ है कि आपको कोई सदमा पहुँचा है। अब्बा जान! यह बेटी आप पर क़ुर्बान, फ़रमाइए वह क्या सदमा है कि जिसकी वजह से आपका रंग भी ज़र्द पड़ गया। इरशाद फ़रमाया, ऐ मेरे जिगर के टुकड़े! उम्मत के बड़े-बड़े गुनाहों ने यह सदमा पहुँचाया है कि वह बड़े-बड़े गुनाह करके दोज़ख़ में जायेंगे। यह फ़रमाकर रहमते आलम (स०) फिर रोते हुए सजदे में गिर गये और हज़रत फ़ात्मा भी नंगा सर करके सजदे में गिर गयी और दुआ करने लगी—

ऐ मेरे माबूद बरहक़ ख़ुदा,
है नहीं कोई ख़ुदा तेरे सिवा।

ऐ ख़ुदा ऐ मालिके अर्शे बरी,
दर के तेरे गो कि मैं क़ाबिल नहीं।

लुत्फ़ तेरा लेके सब पर आम है,
क़ाज़ी उलहा जात तेरा नाम है।

दस्तगीरी कर तू मेरी ऐ करीम,
तू है ख़ुद ग़फ़्फ़ारो सत्तारो हलीम।

बख़्श दे उम्मत को मेरे बाप की,
और बचा दोज़ख़ से ऐ रब्बे ग़नी।

फिर कहा हक़ ने कि ऐ मेरे रसूल,
मन दुआए फ़ात्मा कर दम क़बूल।

सर उठाओ सजदे से ऐ मुस्तफ़ा,
ग़म न कीजे ऐ नबी ए मुजतबा।

जिसे चाहोगे तुम ऐ मुस्तुफ़ा,
बख़्श दूँगा उसको मैं रोज़े जज़ा।

यानी हज़रत जिबराईल (अ०) ने अल्लाह तआला की तरफ से यह खुश-ख़बरी सुनायी। तब आपने सजदे से पेशानी उठायी और जान में जान आयी। हज़ूर पुरनूर (स०) ने हज़रत फ़ात्मा (र० अ०) को गले से लगाया।

मुसलमान भाइयो और दीन की बहिनो! कुछ तो ख़याल करो कि हम गुनाहगारों के साथ हमारे रसूले पाक (स०) को किस क़दर मौहब्बत है और हमारी तकलीफ़ से आपको किस क़दर सदमा होता है। कोई भी ऐसा ग़मख़ुवार नज़र नहीं आता, और आपकी साहबज़ादी को देखो कि हम नालायक़ों पर किस क़दर मेहरबानी फ़रमाती हैं। डूब मरने और शर्म करने की बात है कि हम अपने रसूल की नाफ़रानी पर तुले हुए हैं और कूद-कूद कर दोज़ख़ में गिरे जाते हैं। कितना बदबख़्त है वह मर्द और औरत कि अपने प्यारे रसूल की नाफ़रमानी करके आपको तकलीफ़ पहुँचाये और कितना ख़ुशक़िस्मत है वह मर्द और औरत जो आपकी ताबेदारी करके आपको ख़ुश करे। हर हफ़्ते में दो मर्तबा आपकी ख़िदमत में हमारे अमल पेश किये जाते हैं। जिसके अमल अच्छे होते हैं, आप उससे ख़ुश होते हैं और जिसके अमल बुरे होते हैं आपको उसकी तरफ़ से रंज होता है, तकलीफ़ होती है।

पीरो मुर्शिद यह मेरी गुफ़्तार हो,
गर अमल कर लो तो बेड़ा पार हो।

बड़े बड़े गुनाहों का बयान

अल्लाहतआला की ज़ात व सिफ़ात में किसी मख़लूक़ को शरीक करना यानी जो बातें और क़ुदरतें अल्लाहतआला में हैं वह किसी मख़लूक़ में समझना, नाहक किसी को मार डालना, अल्लाहतआला का कोई हुक्म न मानना, मसलन नमाज़ न पढ़ना, माहे रमज़ान के रोज़े न रखना, ज़कात न देना, क़ुदरत होते हुए हज अदा न करना, अल्लाहतआला से न डरना, उसकी रहमत से बे उम्मीद हो जाना, अल्लाहतआला के सिवा किसी की क़सम खाना या किसी को सजदा करना, किसी से मुरादें माँगना, यतीमों का माल खाना, ज़िना करना, शराब पीना, सूद लेना या देना, रिश्वत लेना, माँ-बाप को तकलीफ़ देना, किसी की बहू-बेटी वग़ैरा पर बदनज़र करना, बीवी को अपने शौहर का हक़ अदा न करना, हमसाये को तकलीफ़ देना, बेवा औरत निकाह कर ले तो पहले शौहर के माल में से उसको हिस्सा न देना, तकब्बुर और अजब करना यानी अपने आपको औरों से बड़ा और अच्छा समझना, हसद करना यानी किसी को खाते-पीते देखकर जलना, ग़ीबत करना, लानत करना, किसी को ज़रा से शुबह में ज़िना की तोहमत लगाना, ज़ुल्म करना यानी

किसी को नाहक़ सताना, चुग़ली खाना, झूठ बोलना, झूठी क़सम खाना, बिना किसी सख़्त ज़रूरत के वादा ख़िलाफ़ी करना, आलिमों से मसले न सीखना और जाहिल, बेइल्म लोगों के कहने पर चलना, इल्मेदीन हासिल न करना, अमानत में ख़यानत करना, क़ुर्आन मजीद पढ़कर भुला देना या उसके हुक्मों पर अमल न करना, धोखा देना, झूठी गवाही देना, सच्ची गवाही को छुपाना, बिना सख़्त ज़रूरत के नमाज़ या रोज़े का क़ज़ा कर देना, चोरी करना या कराना, लूटमार करना, कम तोलना, कम नापना, जुआ खेलना, जादू करना या कराना, कंजरियों को नचाना या नचवाना या नाच का देखना, खुसरे या डोमनी वग़ैरा को नचाना, ढोलक और बाजा बजाना या बजवाना, ग़ैर मर्द या औरत का तनहा पास बैठना, काफ़िरों की रस्में करना, अपने ईमान पर पछताना कि अगर मुसलमान न होते तो दुनिया का यह फ़ायदा होता, कुदरत होते हुए नसीहत न करना, किसी से नाहक़ बदगुमानी करना, ज़ालिमों की मदद करना, मुर्दे पर बैठकर रोना, किसी के घर में बग़ैर इजाज़त चले जाना या ताँक-झाँक कर देखना, किसी का ऐब तलाश करना, किसी का कोई हक़ थोड़ा या बहुत दबा लेना, बेवा औरत के निकाह को ऐब समझना, ख़ुदा के सिवा किसी को आलिमुलग़ैब समझना, अनाज की तिजारत इसलिए करना कि जब महँगा होगा तब बेचूँगा इसलिए इसको रोके रखना।

मुसलमान भाइयों और दीन की बहिनो! यह बड़े-बड़े गुनाहों का एक नमूना है। इनको बिल्कुल छोड़ दो। न छोड़ोगे तो पछताओगे। दोज़ख़ के अज़ाबों में फँसोगे।

है जो तेरा कुफ़्रो इसयाँओ नफ़ाक़,
हश्र में दोज़ख़ हो यह बिलइत्तफ़ाक़।

होंगी यह ज़न्जीरो तोक़ो हथकड़ी,
फ़ासिक़ों की होंगी गरदन में पड़ी।

लग़्व तू मत जान इन अफ़आल को,
इम्तेहाँ कर इनका तु ग़ाफिल न हो।

रात-दिन रख अपने कामों पर नज़र,
नेक व बद का कर हिसाब ऐ बेख़बर।

शर को कम कर और नेकी को बढ़ा,
तू बिला पुर्सिश किसी जन्नत में जा।

जिसने की दुनिया मुक़द्दम दीन पर,
वह हुआ ख़ुवारो तबाह ख़स्ता जिगर।

हो गया उस शख़्स पर क़हरे ख़ुदा,
जो हुआ दुनियाए दूँ में मुबतला।

हो न हासिल दीन और दुनिया उसे,
आख़िर इस दोज़ख़ में वह जाकर गिरे।

उम्र यह एक दिन गुज़रनी है ज़रूर,
कब्र में मैय्यत उतरनी है ज़रूर।

आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर,
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

अच्छे काम करने से अच्छे नाम मशहूर हो जाते हैं

बाज़ लोग समझते हैं कि अच्छे और बुरे कामों का सवाब और अज़ाब आख़िरत ही में मिलेगा। इसीलिए कहते हैं कि दुनिया में अच्छी गुज़रती है आख़िरत की ख़बर ख़ुदा जाने। याद रखो, अच्छे और बुरे कामों का सवाब और अज़ाब दुनिया में भी मिलता है। देखो आदमी अच्छे काम करने से दुनिया में भी राहत पाता है और इज़्ज़त व शराफ़त के नामों से मशहूर हो जाता है जैसे ईमानदार, मुत्तक़ी परहेज़गार, वली, जन्नती, ग़ाजी, नमाज़ी, हाफ़िज, मौलवी, हाजी, मुल्ला, नेकबख़्त, आलिम फ़ाज़िल, ख़ुदा परस्त, फ़रिश्ता ख़ुसलत, आबिद, ज़ाहिद, सख़ी, ग़ौस क़ुतब, अब्बदाल, साबिर, शाकिर, अल्लाह वाला, बुज़ुर्ग, पीर व मुर्शिद, पारसा, रहमदिल, मुन्सिफ़ शरीफ़ व अफ़ीफ़ वग़ैरा और बुरे काम करने से मर्द हो या औरत, बुरे नामों से मशहूर हो जाता है, जैसे ज़लील, रज़ील, कन्जूस, मक्खीचूस, फ़ाजिख़ फ़ासिक़, बेरहम, फ़िसादी, कुत्ता, ख़बीस, शरीर, हक़ीर, शैतान, मरदूद, शराबी, ज़ानी लुच्चा, बदमाश, गुण्डा, चोर, डाकू, ज़ालिम, चुग़लख़ोर, अल्लाह का चोर, झूठा, पापी, दग़ाबाज़, बेनमाज़, ग़द्दार, दुनियादार, धोखेबाज़, क़ातिल, बेईमान, बेशर्म, बेहया, बे-ग़ैरत, बेइज़्ज़त, ज़लील व ख़ुवार, दोज़ख़ी, बेदीन काफ़िर, मुशरिक, ख़ूनी, लालची, हरामख़ोर, रिश्वतख़ोर, हरामज़ादा, दैय्यूस वग़ैरा।

अब समझ लो अच्छे काम करने अच्छे हैं या बुरे काम करने अच्छे हैं। यह तो दुनिया का अन्जाम हुआ और मरने के बाद ख़ुदा ही जाने क्या अन्जाम होगा।

वला ग़ाफ़िल न हो एक दम यह दुनिया छोड़ जाना है,
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मी अन्दर समाना है।

तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लेटे सेज फूलों पर,
ये होगा एक दिन मुर्दार जो कीड़ों ने खाना है।

न साथी हो सके भाई न बेटा बाप न माई,
तू क्यों फिरता है सौदाई अमल ने काम आना है।

जहाँ के शग़ल में शामिल खुदा की याद से ग़ाफ़िल,
ये कैसी ग़फ़लत है तेरी आह क्या तेरा ठिकाना है।

अज़ीज़ा याद कर वो दिन जो मलाकुलमौत आवेगा,
न जावे साथ तेरे कोई अकेला तूने जाना है।

नज़र कर देख अज़ीज़ों में कौन है तेरा,
उन्होंने अपने हाथों से अकेले को दबाना है।

फ़रिश्ता रोज़ करता है मनादी चार कोनों पर,
ऊँचे मकान वाले तेरा गोर ही ठिकाना है।

ऐ बादर होश कर ये ग़फ़लत नहीं अच्छी,
खुदा की याद कर हर दम जो आख़िर काम आना है

महल्ला ऊँचियाँ वाले तेरा गोर ही ठिकाना है।

बुरे कामों की सज़ा दुनिया में भी मिलती है

अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानियों की वजह से जो तकलीफ़ें और मुसीबतें आती हैं, बिल्कुल ज़ाहिर हैं। चाहे कोई समझे या न समझे, देखो क़ुर्आन व हदीस में जो नाफ़रमानों के क़िस्से आये हैं और जो अज़ाब उन लोगों पर आये हैं, वह कौन नहीं जानता? क्यों साहिबों वह क्या चीज़ थी जिसने शैतान को जन्नत से निकलवाया, दोज़ख़ी बनाया और लानत का तौक़ गले में डलवाया। अल्लाहतआला की दूरी हिस्से में आयी। कुफ़्र व शिर्क, मुक्र व फ़रेब हिस्से में आया। वह क्या चीज़ थी जिसने हज़रत नूह (अ०) की उम्मत को पानी के तूफ़ान में ग़र्क़ करवाया। वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से एक बड़ी तेज़ हवा को भेजकर क़ौम आद को पटख़ा-पटख़ा कर मारा गया? वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से हज़रत शोऐब (अ०) की उम्मत पर बादलों की सूरत में अज़ाब आया और उनसे आग बरसी और उनको जलाकर राख बनाया गया? वह क्या चीज़ थी जिसने फ़िरऔन और उसके साथियों को दरियाए नील में डुबोया? वह क्या

चीज़ थी जिसने क़ारून को और उसकी दौलत, घर बार सब सामान को उसके साथ ज़मीन में धँसवाया। वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से नमरूद पर एक मच्छर मुक़र्रर किया गया और दिमाग़ की पिटाई होते हुए दुनिया से ख़त्म कर दिया गया? बतलाइए इन सज़ाओं और अज़ाबों की वजह सिवाये इसके और क्या है कि नाफ़रमानी थी। बस नाफ़रमानी की वजह से उनको दुनिया में भी सज़ा मिली और आलम ए बर्ज़ख़ यानी मरने के बाद और आलम-ए-आख़िरत की सज़ा सर पर रही। साहिबो! अल्लाहतआला ने क़ुर्आन मजीद में ये क़िस्से बयान फ़रमा-कर सज़ा की वजह भी बयान फ़रमायी है कि—

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ط۔

यानी अल्लाहतआलः ऐसे नहीं हैं कि उन पर ज़ुल्म करते लेकिन वह तो खुद ही अपनी जानों पर नाफ़रमानी करके ज़ुल्म करते थे।

फ़ायदा— मुसलमान भाइयों और दीन की बहिनो! सबक़ हासिल करो। अल्लाहतआला से डरो। उसकी नाफ़रमानियों से बचो और समझो कि अल्लाहतआला की ग़रज़ इन क़िस्सो के बयान करने से सिवाये डराने के और क्या है। बस अल्लाहतआला की पकड़ से डरो और मौत को याद रखो—

ग़र्क़ दरिया में गुनाहों के भला,
तू रहेगा कब तलक मुझको बता।
गोशेजाँ से पनपए ग़फ़लत निकाल,
जद्दे अमजद का तू सुन फिर मुझ से हाल।
हज़रते आदम जो दादा सब के थे,
और ख़लीफ़ा थे ख़ुदा के जान ले।
और फ़रिश्तों ने उन्हें सजदा किया,
दी ख़ुदा ने रहने की जन्नत में जा।
एक गुनाह के करते ही उनको कहा,
मुजरिम व मुज़निब निकल अब याँ से जा।
एक गुनाह के साथ आदम को निकाल,
हक़ ने जन्नत से दिया फिर दूर डाल।
जो करे सदहा गुनाह शामो सहर,
किस तरह जन्नत में हो उस का गुज़र।
याँ से है तुझको जाना एक दिन,
क़ब्र में होगा ठिकाना एक दिन।

मुँह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन,
अब न ग़फ़लत में गँवाना एक दिन।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

ज़लज़ला क्यों आता है?

रसूल अल्लाह (स०)फ़रमाते हैं कि—

लोगो! गुनाहों से बचो क्योंकि गुनाह करने से यानी अल्लाहतआला की नाफ़रमानी करने से ग़ज़ब नाज़िल होता है। तरह तरह की बलाएँ और मुसीबतें आती हैं। रिज़्क़ कम हो जाता है। ख़ैर व बरकत उड़ जाती है। अकाल पड़ जाता है। चीज़ें महँगी हो जाती हैं। बीमारी ऐसी फैल जाती है कि उनके बड़ों के ज़माने में न आयी हों और जब लोग खुल्लम खुल्ला बुरे काम करने लगेंगे, तोलने और नापने में कमी करने लगेंगे तो क़हत की तंगी और हाकिमों के ज़ुल्म में फँसेंगे और जब ज़कात देना बन्द कर देंगे तो उन पर रहमत की बारिश बन्द हो जायेगी। अगर जानवर न होते तो बारिश बिल्कुल बन्द ही हो जाती। हज़रत आयशा (रज़ी०) से ज़लज़ला आने की वजह पूछी गयी तो आपने फ़रमाया—उन्होंने रसूल अल्लाह (स०) से सुना है कि जब लोग ऐलानिया ज़िना करने लगेंगे और शराब पीने लगेंगे और बाजे बजवाने लगेंगे और बुरे कामों को अच्छे कामों की तरह खुल्लमखुल्ला करेंगे, अल्लाह तआला से न डरेंगे तो उस वक़्त अल्लाहतआला को आसमान पर ग़ैरत आती है और ज़मीन को हुक्म देता है कि इन ज़ालिम नाफ़रमानों को हिला डाल ताकि यह नाफ़रमानियों से बाज़ आ जायें।

ज़ालिम को ज़ुल्म करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है।

फ़ायदा— ज़ालिम को यह सज़ा भी काफ़ी है कि ज़ालिम पर ख़ुदा की लानत बरसती है। ज़ालिम वह आदमी है कि जो किसी को नाहक़ सताये। माल व जान, इज़्ज़त व आबरू का नुक़सान पहुँचाये। ज़ुबान और हाथ से किसी को तकलीफ़ दे। किसी का कोई हक़ दबाये। इस क़िस्म का ज़ुल्म और हक़ जब तक माफ़ नहीं होता कि या तो उसको अदा करे या हक़दार से माफ़ करवाये।

देखो! शहीद का रुतबा कितना बड़ा है कि शहादत की बरकत से उसके सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। मगर लोगों के हक़ूक़ जो उसके ज़िम्मे हैं, वह माफ़ नहीं होते। हज़ूर पुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत में क़यामत के रोज़ सबसे

बड़ा मेहताज वह होगा जो नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात वग़ैरा सब अच्छे अमल लेकर आवे मगर लोगों के हक़ूक़ भी उसके ज़िम्मे हों तो उसकी नेकियाँ कुछ-एक हक़दार को मिल गयीं और कुछ दूसरे को मिल गयीं और सबके हक़ूक़ अदा होने से पहले उसकी वह सब नेकियाँ ख़त्म हो गयीं तो उन हक़दारों के गुनाह लेकर उस ज़ालिम पर डाल दिये जायेंगे और उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जायेगा और मज़लूम यानी सताया हुआ क़यामत के रोज़ हिसाब के वक़्त ज़ालिम का हाथ पकड़कर कहेगा कि आज ख़ुदा के सामने मेरा और तेरा इन्साफ़ है। बस ख़ुदा के हुक्म से मज़लूम को ज़ालिम की कुल नेकियाँ दे दी जायेंगी और ज़ालिम ऐसे मुश्किल वक़्त में हाथ खाली रह जायेगा और उसको दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा और हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिसके ज़िम्मे किसी के तीन पैसे होंगे, क़यामत के रोज़ उसको तीन पैसों के बदले सात सौ क़बूल नमाज़ें देनी पड़ेंगीं। इसलिए हर मर्द और औरत को चाहिए कि किसी का हक़ अपने ज़िम्मे न रखे, न किसी पर कोई ज़ुल्म करे।

क्यों ज़ुल्म पर बांधी कमर ऐ बेहया कुछ तो ख़ौफ कर।
दुनिया से करना है सफ़र फिर गोर ही घर बार है।
अब ज़िन्दगी का राज है कर ले जो करना आज है।
जब मर गया मौहताज है फिर तू नहीं मुख़तार है॥

हक़ की इबादत कुछ न की गोर अपनी आतिश से भरी।
दोज़ख़ की सीधी राह ली दहका जहाँ अंगार है॥
मत और का तू हक़ झपट बेकस को नाहक़ मत डपट।
दिल में न रख कीना कपट इस से ख़ुदा बेज़ार है॥

सोहबत बुरी से भाग तू ग़ुस्से में मत हो आग तू।
बाजे से मत सुन राग तू शैतान का यह कार है॥
लोगों पे मत बोहतान कर ग़ैरों का मत नुक़सान कर।
कुछ दे के मत एहसान कर ऐसा दिया बेकार है॥

मत कर अमानत में ख़लल यह राह हरगिज़ तू न चल।
और नेक कर सारे अमल गर तुझको अक़्ल-ए-यार है॥
हर एक से मीठा बोलियो बेहूदा लब मत खोलियो।
तोले तो पूरा तोलियो फ़रमूदाए ग़फ़्फ़ार है॥

गर चाहे तू अपना भला मत कर किसी का तू बुरा।
तेरा बुरा हो बर्मला यह फ़ेल बद किरदार है॥
हर एक से कर शर्मोहया यह है तरीक़े मुस्तफ़ा (स०)।
बेशर्म का मरना है भला गोर उसकी पर्दादार है॥

पूजा न कीजियो ग़ैर की ग़ीबत न कीजियो और की।
आदत न कीजियो चोर की यह तो बुरा अतवार है॥
मत जान अच्छा आप को कर दूर दिल से पाप को।
आदाब कर माँ-बाप को फिर तो बरख़ुर्दार है॥

जो चाहे तू हक़ की रज़ा मत कर नमाज़ अपनी क़ज़ा।
बे नमाज़ों की है यह सज़ा लानत गले की हार है॥
ऐ बेनमाज़ी बेख़बर तेरी तो दोज़ख़ है मक़ूर।
फ़रमा गये ख़ैरुलबशर अल्लाह का यह इक़रार है॥

इतनी नसीहत मैंने की कुछ तूने भी दिल से सुनी।
इस में लगाया कुछ भी जी यानी यह क्या गुफ़तार है॥
दुनिया तो आख़िर फ़ना है दीन की यारो बक़ा।
इस जा नहीं रहना सदा वह समझे जो होशियार है॥

मज़लूम की मदद करने की बुज़ुर्गी

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स मज़लूम की मदद करता है, अल्लाहतआला उसको पुलसिरात पर साबित क़दम रक्खेगा। ऐसे हाल में कि लोगों के कदम उस पर फिसलेंगे। मज़लूम की मदद करने वाला पुलसिरात से आसानी के साथ पार हो कर जन्नत में दाख़िल हो जायेगा और जिसने क़ुदरत होते हुए भी मज़लूम की मदद न की तो क़ब्र में उसके आग के सौ कोड़े मारे जायेंगे। ज़ालिम की मदद करने वाला भी ज़ालिम है। लेकिन ज़ालिम की मदद करना इस तरह दरुस्त है कि ज़ालिम को ज़ुल्म न करने दे। उसमें ज़ालिम और मज़लूम दोनों की मदद होगी।

मुसलमान भाइयों के हक़ूक़ अदा करने की बुज़ुर्गी

रसूल अल्लाह (स०)फ़रमाते हैं कि—

(1) एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। न उस भाई पर ज़ुल्म करे और न किसी मुसीबत में उस का साथ छोड़े। (2) जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की हाजित पूरी करता है अल्लाह तआला उसकी हाजित पूरी करता है। (3) और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की मुसीबत दूर करेगा, अल्लाहतआला उसको क़यामत की मुसीबतों से बचायेगा। (4) और जो मुसलमान अपने भाई मुसलमान का ऐब छुपायेगा अल्लाहतआला दुनिया और आख़िरत में उसका ऐब छुपायेगा। (बुख़ारी शरीफ़) (5) और तुम में पूरा मुसलमान वह है कि जिसकी

ज़बान और हाथ से किसी मुसलमान को तकलीफ़ न पहुँचे।

फायदा— क़ुर्आन व हदीस में मुसलमान भाई के यह हक़ूक़ साबित होते हैं—

(1) जो बात अपने लिए पसन्द न हो वह किसी मुसलमान के लिए पसन्द न करे। (2) किसी मुसलमान को हक़ीर न जाने। (3) उसकी चुग़ली न खावे। (4) उस की ग़ीबत न करे। (5) उस पर बोहतान न लगाये। (6) उस का ऐब तलाश न करे। (7) हाकिम को तलाश करना जायज़ है। (8) उस के ऐब को छुपाये (9) तीन रोज़ से ज़्यादा उससे बोलना न छोड़े, अगर किसी शरह की बात पर नाराज़गी हो तो जब वह तौबा कर ले फिर बोलने लगे। (10) उसको नफ़ा पहुँचाये नुक़सान न पहुँचाये। (11) बूढ़े मुसलमान की ताज़ीम करे और छोटे के साथ प्यार से पेश आये। (12) मुसलमान से खुश होकर मिले। (13) बिला सख़्त उज़्र उससे वादा ख़िलाफी न करे। (14) उसके रुतबे के मुताबिक़ उससे बर्ताव करे। (15) अगर दो मुसलमान भाइयों में रंजिश हो जाये तो उनमें सुलह करा दे। सुलह करा देने वाले को दस हज़ार नफ़िल नमाज़ों का सवाब मिलता है। (16) अगर खुदा ने दुनिया की कोई इज़्ज़त दी है तो अपने मुसलमान भाई मज़लूम ग़रीब की हाकिमों से सिफ़ारिश कर दे और उसको नाहक़ की तकलीफ़ से बचाले तो सत्तर हज नफ़ली का सवाब मिलेगा। (17) अगर किसी मुसलमान को कोई उसके आगे या पीछे तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उस तकलीफ़ से उसको बचाये और तकलीफ़ देने वाले को रोक दे। (18) अगर कोई मुसलमान बुरी सोहबत में फँस जाये तो प्यार या मुहब्बत से या जिस तरह की क़ुदरत हो उसको बुरी सोहबत से बचाये। (19) ग़रीब मुसलमान से मिलने जुलने में ज़िल्लत न समझे। (20) मुसलमान भाई जब मिले तो उसको इस तरह सलाम करे "अस्सलामु अलैकुम" वह जवाब दे "वाअलैकुम अस्सलाम।" जब मुसलमान आपस में सलाम करते हैं तो अल्लाह तआला सौ रहमतें नाज़िल करता है। सलाम करने वाले पर नब्बे और जवाब देने वाले पर दस और मुसाफ़ा करने पर सत्तर रहमतें ज़्यादा नाज़िल होती हैं और दोनों के सग़ीरा गुनाह माफ़ होते हैं। (21) जब मुसलमान छींक कर अलहम्दो लिल्लाह कहे तो सुनने वाला या रहमकुल्ला कहे। (22) जब मुसलमान बीमार हो या किसी और बला में मुबतला हो, उसकी मदद करें। (23) अगर वह तंगदस्त हो या क़र्ज़दार हो अपने अन्दर क़ुदरत हो तो माल से उसकी मदद करे। रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान बीमार होता है तो उसके गुनाह दरख़्तों के पत्तों की तरह झड़ कर उससे दूर हो जाते हैं और जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई की बीमारी या किसी और तकलीफ़ में उसकी ख़बर लेने जाता है तो वह जन्नत ख़रीद लेता है और जब ख़बर लेकर लौटता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी मग़फ़िरत की दुआ करते हैं। (24) जब

मुसलमान मर जाये तो उसके जनाज़े पर नमाज़ पढ़े और उसको क़ब्रिस्तान में पहुँचाये और दफ़न करके उसकी मग़फ़िरत की दुआ करके वापस हो तो गुनाहों से पाक साफ़ हो जाता है। (25) मुसलमान भाइयों की क़ब्रों पर जाया करे और उनकी मग़फ़िरत की दुआ किया करे। ख़ैरात या फ़ातेहा का सवाब पहुँचाया करे और सोचा करे कि जिस तरह यह ख़ाक में मिल कर ख़ाक हो गये इसी तरह एक दिन मैं भी ख़ाक में मिल जाऊँगा।

अलहासिल, मुसलमान भाइयों के नफ़ा पहुँचाने में कोई कमी न करे, इस कारे ख़ैर में बड़े-बड़े सवाब मिलते हैं और मुसलमान भाइयों को नुक़सान पहुँचाने में बड़े-बड़े अज़ाब होते हैं।

शिर्क करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने— إِنَّهُ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰهُ النَّارُ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ط۔

यानी ऐ लोगो! इसमें शक नहीं कि जो अल्लाहतआला के साथ किसी को शरीक करेगा तो अल्लाहतआला की तरफ़ से जन्नत उस पर हराम हो चुकी है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और ऐसे ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं।

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ यानी बहुत से लोगों का यह हाल है कि अल्लाह को मानते हैं और उसकी सिफ़तों और क़ुदरतों को जानते हैं कि वह हर चीज़ का ख़ालिक है, मालिक है। रज़्ज़ाक है मगर फिर शिर्क किये जाते हैं और इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला ने

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ط

यानी बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है।

फ़ायदा— इसलिए हर मुसलमान मर्द और औरत को चाहिए कि शिर्क की बातों से बचे। बाज़ मुसलमान भाई ख़याल कर लेते हैं कि फ़लाँ चीज़ में या फ़लाँ आदमी में यह क़ुदरत है जैसा कि कोनैन बुख़ार के दूर करने के लिए खायी जाती है। अब अगर कोई यह समझे कि कोनैन में यह क़ुदरत है कि बुख़ार को दूर कर दे तो शिर्क है बल्कि यह समझे कि अल्लाह ने इसमें बुख़ार के दूर करने का असर रक्खा है। अगर ख़ुदा न चाहे तो असर नहीं हो सकता, मगर इस फ़र्क़ को अक़लमन्द आदमी ही समझ सकता है। इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि हर काम में और हर हाल में अल्लाहतआला ही पर भरोसा रखे। किसी भी मख़लूक़ को उसका हम सिफ़त और शरीक न बनाये। आलिमों की

सोहबत अख़्तियार करे, उनसे मसले दरियाफ़्त करता रहे। जाहिल और बेसमझ उन लोगों को कहते हैं जो अल्लाह व रसूल की बातों का इल्म नहीं रखते।

वास्ते दुनिया के क्यों ऐ बेख़बर,
ठोकरें खाता फिरे है दर-बदर।
क्या है हासिल रंज ले जाना तुझे,
आख़िर एक दिन यार है मरना तुझे।
आख़िरत के कार से ग़ाफ़िल न हो,
दौलते दुनिया पे तू मायल न हो।
जहल से बदतर नहीं है कोई शै,
जहल कुफ़्र व शिर्क की बुनियाद है।
जहल तन में एक बलाये जान है,
क्या बेसमझ भी आदमी इन्सान है।
हो सके जितना तू रह जाहिल से दूर,
जाहिलों पर हो ग़ज़ब हक़ का ज़रूर।
ज़िन्दगी में बेसमझ बस ख़ुवार है,
हश्र में उसका ठिकाना नार है।
ऐ बादर तू भी गर है होशियार,
सोहबते जाहिल न करना अख़्तियार।

नाहक़ ख़ून करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

और जो कोई मुसलमान को जानबूझ कर मार डाले तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस पर अल्लाह की लानत पड़ेगी और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब तैयार कर रक्खा है। (सूरतुलनिसां)

फ़ायदा— क़ातिल की दुनिया में भी सख़्त सज़ा है कि उसको फाँसी दी जाती है या ज़िन्दगी भर जेल ख़ाने में रक्खा जाता है।

शराब पीने की सज़ा

शराब नापाक है। इसका बरतना हराम है। दवा के तौर भी उसका पीना और लगाना दरुस्त नहीं। बल्कि जिस दवा में शराब पड़ी हो उसका पीना और

लगाना भी दरुस्त नहीं। और जो शख़्स शराब को हराम न समझे वह काफ़िर है और हराम न मानने वाला फ़ासिक़ है और सख़्त सज़ा का मुस्तहक़ है।

मसला शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त करने वाले पर और बतलाने वाले पर कि वहाँ बिकती है और उठाकर लाने वाले पर, पीने वाले पर हमारे नबी (स०) ने लानत फ़रमायी है। और शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त सब हराम है। और हमारे नबी (स०) ने फ़रमाया है कि शराब पीने वाला फ़िरऔन के साथ दोज़ख़ में जायेगा। और अल्लाहतआला अपनी इज़्ज़त की क़सम के साथ फ़रमाता है कि दुनिया में जो शख़्स शराब पियेगा, मैं क़यामत के रोज़ उसको ऐसा प्यासा रखूँगा कि उसका दिल प्यास की तेज़ी से आग की तरह जलेगा और उसकी ज़ुबान उसकी छाती पर आ पड़ेगी और जो आदमी दुनिया में मेरे डर से शराब छोड़ देगा तो मैं उसको जन्नत की नहर से शराबे पाक पिलाऊँगा और जो आदमी दुनिया में शराब पियेगा उसको अल्लाहतआला क़यामत के रोज़ साँप और बिच्छू के ज़हर पिलायेगा। जब वह बर्तन को मुँह लगायेगा तो उसके मुँह का चमड़ा उसी बर्तन में आ पड़ेगा। अल्लाह की पनाह! दुनिया में भी शराब का एक क़तरा पीने वाले को शरीयत के हुक्म से सौ दुर्रे मारने की सज़ा है।

शराबी से मेल जोल रखने की सज़ा

हज़ूर अकरम (स०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स शराबी को सलाम करे और उससे मुसाफ़ा करे तो अल्लाहतआला उसके चालीस बरस के नेक अमल बर्बाद कर देता है और जिसने शराबी को एक लुक़मा खिलाया या एक घूँट पानी पिलाया या उसको कपड़ा पहनाया तो अल्लाहतआला उसकी क़ब्र में उसके बदन पर साँप और बिच्छू काटने के लिए मुक़र्रर कर देगा। (अनीसुलवाएज़ीन)

सूद लेने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ط यानी, और हलाल कर दिया अल्लाह ने तिजारत को और हराम कर दिया सूद को।

महबूबे ख़ुदा (स०)फ़रमाते हैं कि—

कम दर्जे का गुनाह सूद लेने का यह है कि सूद लेने वाला गोया ज़िना करता है अपनी माँ से और सूद लेने वाले का माल क़यामत के रोज़ गंजा साँप बन कर जो बड़ा ज़हरीला होता है दोज़ख़ से निकलेगा और उसकी गर्दन में आकर लिपट जायेगा और उसको पकड़ कर दोज़ख़ में ले जायेगा। जितनी दफ़ा

वह ऊपर को आयेगा उतनी ही दफ़ा वह साँप उसको दोज़ख़ में नीचे ले जायेगा।

हज़ूर (स०)फ़रमाते है कि—

चार क़िस्म के लोगों को अल्लाहतआला जन्नत की नैमतों से महरूम रक्खेगा। एक पीने वाला शराब का, दूसरे लेने वाला सूद का, तीसरे माल खाने वाला यतीम का, चौथे तकलीफ़ देने वाला माँ बाप का।

माँ-बाप को तकलीफ़ देने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

तुम अपने माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव किया करो। अगर तुम्हारे सामने उनमें एक या दोनों बूढ़े हो जायें तो उनके सामने 'हूँ' भी न करना और न उनको झिड़कना और उनसे अदब के साथ बात करना और उनके सामने आजिज़ी से झुके रहना और उनके लिए यूँ दुआ करते रहना कि ऐ मेरे रब उन दोनों पर रहमत फ़रमाइए जैसा कि उन्होंने मुझको बचपन में पाला है।

और हज़ूर पुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने माँ-बाप को तकलीफ़ देगा, जन्नत उस पर हराम है। माँ-बाप को ख़ुश रखना, अल्लाहतआला को ख़ुश रखना है और उनको नाराज़ करना अल्लाहतआला को नाराज़ करना है।

एक दिन नबी (स०) ने हल्क़ाये असहाब में यह लफ़्ज़,
दोहराये तीन बार कि नाक उसकी कट गयी।
असहाब ने अर्ज़ की कि वह कम्बख़्त है कौन,
तौक़ीर जिसकी हज़रते बारी में घट गयी।
इरशाद यूँ हुआ कि वह फ़रज़न्द नाख़लफ़,
घर जिसके जन्नत आयी, आकर पलट गयी।
माँ-बाप के बुढ़ापे का न हो जिसे ख़याल,
उस ना सईद बेटे की क़िस्मत उलट गयी।

हुज़ूरे अकरम (स०) की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़ की—या रसूल अल्लाह! मुझे कोई ऐसी नसीहत कीजिए जो दुनिया व आख़िरत में काम आये। आपने फ़रमाया—तुम्हारे माँ-बाप ज़िन्दा हैं? कहा हाँ। हज़ूर ने फ़रमाया—तुम उनकी ख़िदमत किया करो। उनको एक लुक़मा खिलाने के बदले तुमको जन्नत में एक महल मिलेगा।

एक और शख़्स ने अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह! मैं अपनी माँ की ख़िदमत भी करता हूँ। रोटी-कपड़ा भी देता हूँ। मगर वह मुझसे लड़ती रहती

है। अब जो आपका हुक्म हो वह करूँ। हूज़ूर (स०) ने फ़रमाया— तुम अपनी माँ की ख़िदमत करो। क़सम है अल्लाहतआला की अगर तुम अपने बदन का गोश्त का टुकड़ा भी अपनी माँ को खिला दोगे तो चौथाई हक़ भी उसका अदा न होगा। क्या तुमको मालूम नहीं कि जन्नत माँ और बाप के क़दमों के नीचे है। माँ-बाप का यह मर्तबा सुनकर उस शख़्स ने रोकर कहा, या रसूल अल्लाह (स०) ! आप सच फ़रमाते हैं क़सम है मुझको उस ख़ुदा की जिसने आपको सच्चा रसूल बनाया है ! अब मैं अपनी माँ की ख़ूब ताबेदारी करूँगा। बस वह अपनी माँ के पास आया और उसके पाँव चूम कर कहा, अम्मा जान ! मुझको अल्लाह के रसूल ने यही हुक्म दिया है कि अपनी माँ की ख़िदमत करो और उसको राज़ी रखो। माँ ने ख़ुश होकर बेटे को गले से लगा लिया और अल्लाह व रसूल (स०) की तारीफ़ की।

पिसर माँ-बाप का लख़्ते जिगर है,
सरूरे जिस्म व जाँ नूरे नज़र है।
अगर दम भर न वह उनको नज़र आये,
जहाँ उनके लिए तारीक हो जाये।

जुदा गर उनसे बेटा एक दम हो,
जुदाई में बहुत-सा उनको ग़म हो।
अगर बेटे पे कोई सदमा आ जाये,
पदर-ए-मादर के तन से जां निकल जाये।

पिलाया दूध अपना तुमको माँ ने,
खिलाये बाप ने माक़ूल खाने।
लड़कपन से बड़ा तुमको किया है,
जवाने ख़ुश अदा तुम को किया है।

तुम उनके वास्ते नूरे बसर हो,
सरापा रहमते जान व जिगर हो।
तुम्हे इल्मो हुनर सिखला दिया है,
पहुँचाना था जहाँ पहुँचा दिया है।

वह ख़िदमत तुम्हारी करते रहे हैं,
तुम्हारे वास्ते मरते रहे हैं।
जब ऐसा हक़ है माँ और बाप का,
करो तुम ऐ पिसर हक़ उनका अदा।

ज़बां पर लाओ मत ऐसी हिकायत,
करे मादर पदर जिससे शिकायत।

करोगे जो ख़िदमत माँ-बाप की,
दोनों जहाँ में इज़्ज़त तुमको मिलेगी।

इन बातों में वालिदैन की ताबेदारी नहीं

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّآ اِيَّاهُ ط۔

यानी ऐ लोगो! और तुम्हारे रब ने तुमको क़तई हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो (और उसके हुक्म पर चलो)।

फायदा— इस फ़रमाने इलाही से मालूम हुआ कि सब हक़ूक़ से पहले अल्लाह का और उसके रसूल का हक़ है। इसलिए जो हुक्म अल्लाह व रसूल के फ़र्ज़ और ज़रूरी हैं और माँ-बाप उनसे रोकते हों तो उनमें उनकी ताबेदारी दरुस्त नहीं। जैसे किसी की आमदनी कम है। अगर माँ-बाप की ख़िदमत करे तो बीवी-बच्चों को तकलीफ़ होने लगे तो उस शख़्स को दरुस्त नहीं कि बीवी बच्चों को तकलीफ़ दे और माँ-बाप पर ख़र्च करे। और जैसा कि बीवी का हक़ है कि शौहर से कहे कि मुझको अपने माँ-बाप से जुदा रक्खो और शौहर जुदा रखना चाहे और माँ-बाप जुदा न होने दें तो उस शख़्स को दरुस्त नहीं कि उस हालत में बीवी को उनके साथ रक्खे बल्कि जुदा रखना वाजिब है। या मसलन हज को या दीन का इल्म जितना कि फ़र्ज़ है, हासिल करने को न जाने दें तो उनकी ताबेदारी दरुस्त नहीं। और जो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक दरुस्त न हों और माँ-बाप उनके करने को कहें तो इसमें भी उनका कहा न मानें। मसलन वह किसी नाजायज़ नौकरी करने को कहें या बुरी रस्में करवायें या बिला सख़्त ज़रूरत उसकी बीवी को तलाक़ दिलवायें। इसमें भी उनका कहा न मानें। या वह कहें कि अपनी तमाम आमदनी हमको दिया करो। इसमें भी उनकी ताबेदारी न करने में कोई गुनाह नहीं। अगर माँ या बाप इस पर ज़ोर डालेंगे तो खुद गुनाहगार होंगे। (अज़बहिश्ती गौहर)

फायदा— माँ-बाप को भी चाहिए कि जब बहू और बेटा अलग रहना चाहें तो बिला रंज के खुशी से उनको अलग कर दें कि सब झगड़ा फिसाद ही ख़त्म हो जाये वर्ना बहुत-सी हक़तलफ़ियाँ होने का डर है जिन पर अल्लाहतआला की तरफ़ से पकड़ होगी।

औलाद को ज़्यादा मारना-पीटना ज़ुल्म है

बच्चों पर जो ज़ुल्म माँ-बाप से या उस्तादों से होता है, बड़ी बेरहमी है। बाज़ माँ-बाप ऐसे क़साई होते हैं कि बच्चों को इस तरह मारते हैं जैसे कोई जानवरों को मारता है। बल्कि जैसे कोई छत कूटता हो और जो कोई मना करे तो कहते हैं कि हमें अख़्तियार है। हम इसके बाप हैं। याद रक्खो, बाप होने से तुम इसके मालिक नहीं होते। बाप का रुतबा अल्लाहतआला ने बढ़ाया है न इस वास्ते कि बच्चे उसकी मिलकियत हैं। और उससे बच्चों को तकलीफ़ पहुँचे, बल्कि इस वास्ते की बच्चों की परवरिश करें और उनको आराम दें। हाँ कभी इसे आराम देने की ही ज़रूरत से सज़ा देना और अदब सिखाना, इसकी इजाज़त है। मगर ज़रूरत के क़ायदे से अदब सिखाने के लिए सज़ा देने की इतनी ही इजाज़त है जो परवरिश में मददगार हो न इतनी कि हद से बाहर तकलीफ़ पहुँचाये। माँ-बाप से ऐसी ज़्यादती अलावा गुनाह होने के इन्सानियत और फ़ितरत के भी ख़िलाफ है। माँ-बाप को तो अल्लाह तआला ने महज़ रहमत बनाया है। उनसे ऐसी ज़्यादती होना इस बात की निशानी है कि वह शख़्स इन्सानियत से ख़ारिज है और उस्तादों की तो ऐसी बुरी हालत है कि उन्होंने यह मिसाल याद कर ली है कि हड्डी माँ-बाप की और चमड़ी उस्ताद की। न मालूम यह कोई क़ुर्आन की आयत है या हदीस है या फ़िक़्ह में कहीं लिखा है। उस्तादों को याद रखना चाहिए कि क़यामत के दिन इसका बदला देना पड़ेगा। यहाँ बच्चों की चमड़ी आपकी है, वहाँ आपकी चमड़ी बच्चों की होगी। क्या तमाशा होगा कि वह बच्चे जो उनके बस में थे, ख़लक़त के सामने उनको पीट रहे होंगे। अलावा इसके यह भी तजुर्बे की बात है कि ज़्यादा मारना तालीम के लिए भी मुफ़ीद नहीं होता बल्कि नुक़सान पहुँचाता है। एक यह कि बच्चे की क़ूव्वत कमज़ोर हो जाती है। दूसरे यह कि डर के मारे सारा पढ़-लिखा भी भूल जाता है। तीसरे जब बच्चे को पीटते-पीटते उसकी आदत हो जाती है तो बेहया बन जाता है। फिर पीटने से उस पर कुछ असर नहीं होता। उस वक़्त यह मर्ज़ लाइलाज हो जाता है और सारी उम्र के लिए बेहयाई उसके मिज़ाज में दाख़िल हो जाती है। इसलिए ज़रूरी बात यह है कि तालीम और अदब सिखाने के लिए बच्चों पर मार-पीट ज़्यादा न की जावे कि ज़ुल्म है। (अज़ हज़रत मौलाना शाह अशरफ़ अली थानवी (र०)

यतीमों का माल खाने की सज़ा

रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि— -

क़यामत में बाज़ लोग क़ब्रों से इस हाल में उठेंगे कि उनके मुँह से आग के शोले निकलते होंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया—या रसूल अल्लाह, वह कौन

लोग होंगे? फ़रमाया तुमको नहीं मालूम कि अल्लाहतआला ने क़ुर्आन मजीद में फ़रमाया है कि जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वह अपने पेटों में अंगारे भर रहे हैं और वह बहुत जल्दी दोज़ख़ की आग में दाख़िल होंगे।

फ़ायदा— नाहक़ का मतलब यह है कि बाज़ मर्द और औरतें ऐसा करते हैं कि जब कोई मर जाता है और औलाद छोड़ता है तो उसकी छोड़ी हुई चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। उसी में मेहमानों का ख़र्च और मस्जिदों का तेल और मिस्कीनों का खाना वग़ैरा सब कुछ करते हैं। और उस माल और चीज़ों में उन यतीमों का हक़ होता है। अल्लाह व रसूल का हुक्म यह है कि यतीमों का हिस्सा अलग कर दो और उनके हिस्से की चीज़ों को उन्हीं के ख़र्च में लाओ और मेहमानदारी और ख़ैर-ख़ैरात वग़ैरा करना हो तो अपने हिस्से में से करो। इसी तरह मेहमानों और मिस्कीनों और बिरादरी के लोगों को चाहिए कि इस क़िस्म के खानों से बचें और अल्लाहतआला की पकड़ से डरें।

यतीमों पर रहम करने की बुज़ुर्गी

रहमते आलम महबूबे ख़ुदा (स०)का फ़रमान है कि—

जो मर्द या औरत किसी यतीम बच्चे के साथ जो उसके पास रहता हो, सलूक व एहसान करे तो मैं और वह जन्नत में इस तरह होंगे जैसे शहादत की और दर्मियान की उंगली पास-पास मिली हुई होती हैं। और जो मर्द या औरत मुहब्बत और प्यार से यतीम के सर पर हाथ फेरे तो जितने बालों पर उसका हाथ फिरेगा उतनी ही नेकियाँ उसको सवाब में मिलेंगी।

एक लड़का जिसकी माँ का हो गया था इन्तक़ाल,
मेरे पास आया कहीं से रोता रोता एक दिन।
और कहा रोकर कि माँ को ढूँढता फिरता हूँ मैं,
खाना तक खाया नहीं है साफ़ गुज़रा एक दिन।
छोड़कर बेकस ख़ुदा जाने कहाँ रुख़सत हुई,
है बहुत मुश्किल है मुझे बे माँ के जीना एक दिन।
प्यार करती, मुँह धुलाती कपड़े पहनाती थी वह,
यूँ फटे कुर्ते से मैं रहता नहीं था एक दिन।
कौन चुमकारे मुझे और कौन ले आग़ोश में,
ख़्वाब में भी तूने हाल आकर न पूछा एक दिन।
अब नहीं करने का ज़िद और अब न कुछ माँगूँगा मैं,
ख़स्ता हाली पर मेरी आ रहम फ़रमा एक दिन।

कैसी बस्ती है वह कैसे घर हैं कैसे लोग हैं,
तूने जाकर के यहाँ ख़त भी न भेजा एक दिन।

अब नही रोने का रोने से ख़फा है तू अगर,
अच्छी अम्माँ गोद में ले ले मुझे आ एक दिन।

तुमको मिल जाये तो कहना मुझको भी ले जाये अपने साथ,
या चली आये वहाँ से रह के दो या एक दिन।

या इलाही इस यतीमे बे नवा पर फ़ज़्ल कर,
यह दुआ की और अकबर ख़ूब रोया एक दिन।

ग़ीबत करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

ऐ मुसलमानो ! तुम लोगो की तरफ़ से बहुत शक न किया करो, क्योंकि बाज़ शक गुनाह होते हैं, और एक-दूसरे का ऐब तलाश न किया करो और न तुम में से कोई किसी के पीछे किसी की ग़ीबत किया करे। भला तुम में से कोई यह बात पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये। हरगिज़ पसन्द न करेगा। तो फिर ग़ीबत क्यों करते हो कि यह भी एक क़िस्म का मुरदार खाना है। (सूरतउलहिजरात)

और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०)फ़रमाते हैं कि—

तुम जानते हो ग़ीबत क्या चीज़ है? आपके सहाबों ने अर्ज़ की कि अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानते हैं। आप (स०) ने फ़रमाया ग़ीबत यह है कि अपने भाई मुसलमान की कोई बात इस तरह बयान करे कि अगर उसको ख़बर हो जाये तो उसको बुरा लगे। असहाबों ने अर्ज़ की—या रसूल अल्लाह ! अगर हमारे उस मुसलमान भाई में वह बात हो जो हम कहते हैं। आपने (स०) फ़रमाया, अगर उसमे वह बात है जो तुम कहते हो तो तुमने उसकी ग़ीबत की और अगर उसमे वह बात न हो जो तुम कहते हो तो तुमने उस पर बोहतान लगाया। ख़ूब समझ लो, जो शख़्स मर्द हो या औरत, ग़ीबत करेगा तो वह मेरी शिफ़ाअत से महरूम रहेगा। या अल्लाह तेरी पनाह !

ग़ीबत ऐसी बुरी चीज़ है कि अल्लाह व रसूल की नाराज़गी किस क़दर ज़ाहिर होती है। यह तो आख़िरत का नुक़सान हुआ और दुनिया का नुक़सान सब जानते है कि ग़ीबत लड़ाई फ़िसाद की जड़ है।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जब अल्लाहतआला ने मुझे मैराज नसीब फ़रमायी तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिनके नाख़ून तांबे के थे और वह उनसे अपना मुँह खुरचते थे। मैंने पूछा—ऐ जिबराईल! यह कौन लोग हैं? कहा यह वह लोग हैं जो ग़ीबतें करके लोगों के गोश्त खाते थे और उनकी इज़्ज़त बरबाद करने के पीछे पड़े रहते थे।

फ़ायदा— ऐसा कौन आदमी है जो ज़ाहिरी और बातिनी ऐबों से ख़ाली हो। यह तो अल्लाहतआला का फ़ज़्लो करम है कि एक के दिल में दूसरे की इज़्ज़त डाल दी और इज़्ज़त को ऐबों का पर्दापोश बना दिया कि आपस में नफ़रत न हो। जैसे हर पेट में पाख़ाने-पेशाब की अला-बला भरी पड़ी है, मगर गोश्त ने पर्दा बना कर उनको छुपा दिया है, वर्ना हर शख़्स दूसरे के पास न बैठ सकता था। बस जो शख़्स पीठ पीछे किसी की ग़ीबत करता है और अपनी इज़्ज़त बढ़ाने के लिए उसके ऐब खोलता है वह गोया मुर्दे का गोश्त खाता है और उस भाई मुसलमान को ख़बर भी नहीं कि उसका भाई उसके साथ क्या सलूक कर रहा है। देखो! शेर एक हैवान और फाड़ खाने वाला जानवर है, मगर मुरदार गोश्त के खाने से नफ़रत करता है। फिर मुसलमान जो कि इन्सान है, अल्लाह व रसूल के हुक्मों को मानता है तो बहुत ज़्यादा उस का हक़दार है कि नफ़रत करे। क्योंकि ग़ीबत करना ज़िना वग़ैरा से भी ज़्यादा और गन्दा गुनाह है।

तकब्बुर करने की सज़ा

इल्मी लियाक़त या इबादत या दयानतदारी में या दौलत व इज़्ज़त में या कुव्वत व क़ौमियत या हकूमत वग़ैरा में अकड़ना और इतराना और अपने आप को बड़ा समझना यह तकब्बुर है। इसी तकब्बुर की वजह से बहुत से लोग गुमराह हो गये हैं। सब से बड़ा गुमराह शैतान भी इस वजह काफ़िर और दोज़ख़ी हुआ। सुल्ताने दो जहाँ हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) फ़रमाते हैं कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा वह जन्नत में नहीं जायेगा और जो शख़्स तकब्बुर करता है अल्लाहतआला उस की गर्दन तोड़ देता है यानी उसको ज़लील और बेइज़्ज़त कर देता है। ऐसे लोगों को यह सोचना चाहिए कि यह जितनी ख़ूबियाँ हमारे अन्दर हैं अल्लाहतआला की दी हुई हैं। अगर वह चाहे तो ज़रा-सी देर में सब छीन ले। फिर अपने आप को औरों से बड़ा समझना फ़ज़ूल और फ़िरऔनियत और शैतानी काम है, जिसका नतीजा ज़िल्लत और बेइज़्ज़त होना है और दोज़ख़ में जाना है।

ज़िना करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَا إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا

यानी ऐ लोगो ! और तुम ज़िना के पास भी न फटकना, बेशक वह बड़ी बेहयाई की बात है।

फ़ायदा— पास भी न फटकना, इस का मतलब यह है कि जिन बातों से ज़िना का तक़ाज़ा पैदा होता है उनसे भी बचो। जैसा कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया है कि—

ग़ैर औरत को बद-नज़र से देखना (या औरत का ग़ैर मर्द को देखना) आँखों का ज़िना है। बातें करना और सुनना ज़ुबान और कानों का ज़िना है। हाथ लगाना या उसकी तरफ़ चलना यह हाथ और पाँव का ज़िना है। दिल में उसका ख़याल करना, यह दिल का ज़िना है। तो इन बातों से बचना भी ज़रूरी है और जो शख़्स मर्द हो या औरत, ग़ैर महरम को बदनज़री से देखेगा तो क़यामत के दिन उसकी आँखों में सिक्का पिघला कर डाला जायेगा।

मसला— अगर अचानक ग़ैर औरत पर नज़र पड़ जावे या औरत की ग़ैर मर्द पर नज़र पड़ जावे तो फिर दूसरी नज़र डालना गुनाह है और जो पहली नज़र के बाद फिर न देखे, उसको शहीद के बराबर सवाब मिलेगा। ज़िना करने वाले मर्द और औरत पर अल्लाह व रसूल ने लानत फ़रमायी है। दुनिया में भी शरीयत की तरफ़ से ज़िना करने की सज़ा यह है कि जिसका निकाह न हुआ हो मर्द हो या औरत, अगर वह इस बदकाम को करे तो उन दोनों के सौ-सौ दुरे मारे जायेंगे और निकाह किया हुआ जो मर्द या औरत ज़िना करे तो उनको संगसार किया जायेगा यानी पत्थरों से मार दिये जायेंगे।

हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया है कि—

ज़मीन दो जगह रोती है, एक नाहक़ ख़ून होने पर, जब ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरता है तो रो कर कहती है, ऐ रब ! मुझे इजाज़त दे कि मैं इस क़ातिल को निगल जाऊँ। हुक्म होता है कि ज़रा सब्र कर, यह तेरे ही अन्दर आने वाला है, फिर समझ लेना। और जब कोई ज़िना करता है तो ज़मीन रोकर कहती है—ऐ रब ! मुझे अख़तियार दे कि मैं इस ज़ानी और ज़ानिया को निगल जाऊँ। हुक्म होता है कि ज़रा सब्र कर, यह दोनों तेरे ही अन्दर आने वाले हैं और उस वक़्त समझ लेना।

फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने—

कि ज़िना करने वालों के लिए मरने के बाद उनकी क़ब्रों में दोज़ख़ के सातों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उन दरवाज़ों से उनको साँप और बिच्छू आकर डसते रहेंगे।

या अल्लाह तेरी पनाह! इस बेहयाई के काम से कि दुनिया में भी ऐसे आदमी बेइज़्ज़त और ज़लील हो जाते हैं और बड़ी-बड़ी तकलीफ़ों में फँस जाते हैं, जैसे किसी दुश्मन का सताना, रिज़्क़ की तंगी, जान व माल की बर्बादी, सेहत की कमी, बीमारियों की ज़्यादती, जल्दी बूढ़ा होना, मुँह पर फटकार का बरसना, चेहरे का बे-नूर और बेरौनक़ होना, बदसूरती पैदा होना, अल्लाह व रसूल की लानत में दाख़िल होना, नमाज़, रोज़ा और सब अच्छे कामों से नफ़रत हो जाना और मरने के बाद अज़ाबे क़ब्र में फँसना और आख़िरत में दोज़ख़ के अन्दर जलना।

ज़िना करने वालों के लिए दोज़ख़ का तनूर

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि—

जब मुझको मैराज हुई तो मैंने दोज़ख़ में एक तनूर देखा। मुँह उसका तंग और पेट उसका बहुत चौड़ा। उसमें बहुत से नंगे मर्द और औरतें क़ैद थे और उनको साँप और बिच्छू लिपट रहे थे और उनकी पेशाबगाहों से ख़ून और पीप बह रहा था। सब दोज़ख़ी उस ख़ून और पीप की बदबू से रोते थे। मैंने जिबराईल से पूछा, यह कौन लोग है ? कहा, या रसूल अल्लाह ! यह ज़िना करने वाले मर्द और ज़िना करने वाली औरतें हैं। (ज़मानलफिरदौस)

फ़ायदा— दुनिया में देखा गया है कि बाज़ ज़ानी और ज़ानिया, सूज़ाक, आतशक वग़ैरा की बीमारी में फँस जाते हैं।

या अल्लाह! बचाइयो हमको इस लानती काम से।

दय्यूस किसको कहते हैं?

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०)ने कि—

फ़ायदा— दय्यूस जन्नत में नहीं जायेगा। दय्यूस भड़वे और बेग़ैरत आदमी को कहते हैं कि अपनी बहू, बेटी, बीवी की बदकारी जान कर उससे ख़ुश रहे। ज़ानी और ज़ानिया पर चौदह तबक़ लानत करते हैं और जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुआ है कि "मैं जन्नत हूँ और दय्यूस पर हराम हूँ" और जो लोग अपनी बहू

बेटी, बीवी, वग़ैरा से बदकारी करवाते हैं और ज़ेब और ज़ीनत के साथ घर से इसलिए निकालते हैं कि लोग इनको देखें, यह सब दय्यूस हैं।

पर्दे का बयान

आजकल बाज़ मुसलमान मर्द और औरतें अंग्रेज़ों की तक़लीद में पर्दे को उड़ा रहे हैं और कुर्आन व हदीस के हुक्म को मिटाने की कोशिश में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों को क्या कहा जावे, वह जानें उनका काम जाने। यहाँ उन ग़ैरतमन्द और शरीफ़ मर्दों और औरतों के लिए पर्दे की बाबत बतौर नमूना कुछ लिखा जाता है कि जो पर्दे के हामी हैं। और अल्लाह के रसूल (स०) ने हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) से दरयाफ़्त फ़रमाया कि बेटी, औरत के लिए सबसे अच्छी बात क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि अब्बा जी! औरत के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि वह किसी ग़ैर मर्द को न देखे और न उसको कोई ग़ैर मर्द देखे। यह जवाब सुनकर हुज़ूर बहुत ख़ुश हुए और हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को गले से लगा लिया।

साहिबो! हुज़ूर का ख़ुश होना दोनों जहाँ की नैमतों से बढ़कर है। अगर कोई अक़लमन्द हो तो समझे! हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को अपनी वफ़ात से पहले बड़ा फ़िक्र यह था कि लोग मेरे जनाज़े को न देखें। फिर उनको एक गहवारे की शक्ल का पर्दा बना कर दिखाया गया। उसको देखकर आप बहुत ख़ुश हुईं और वसीयत फ़रमायी कि मेरे जनाज़े पर ऐसा ही गहवारा बना कर पर्दा किया जाये कि लोग मेरे जनाज़े को न देखें। सुबहान अल्लाह! हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को कैसी शर्म व हया थी। है कोई अकलमन्द बीवी जो आपके तरीक़े पर अमल करे।

एक नाबीना सहाबी ने हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आने की इजाज़त चाही। हुज़ूर ने अपनी बीवियों से फ़रमाया कि पर्दे में हो जाओ। उन्होंने अर्ज़ की कि वह तो नाबीना हैं, हमको कैसे देखेंगे। आप ने फ़रमाया कि तुम तो नाबीना नहीं हो और पर्दा करवाकर फिर उन सहाबी को घर में बुलाया गया।

मसला— अपने मर्दों के सामने मुँह, सीना, बाज़ू और पिंडली खुल जावें तो कुछ हर्ज नहीं। रान और पेट और पीठ उनके सामने भी न खुलना चाहिए। अपने मर्द वह लोग हैं जिनसे हमेशा के लिए निकाह हराम है। जैसे बाप, दादा, नाना, मामू, ताया, चचा, भाई, भतीजा, भान्जा, ससुर, इन मर्दों के अलावा अपने रिश्तेदार जिनसे निकाह हो सकता हो ग़ैर मर्द हैं। जैसे देवर, जेठ, बहनोई, चचाज़ाद भाई, तायाज़ाद भाई, फूफीज़ादा, मामूज़ाद भाई, ख़ाला ज़ाद भाई वग़ैरा। इन सबसे अच्छी तरह पर्दा करना चाहिए। बाज़ इस क़िस्म के रिश्तेदार बेइल्म कहा करते हैं कि फ़लाँ ने हमसे पर्दा कराया, क्या हम ग़ैर थे? यह उनकी सख़्त ग़लती है, जो ऐसा कहते हैं। याद रक्खो, ऐसे रिश्तेदारों से पर्दा न कराने में बड़ी-बड़ी

ख़राबियाँ पैदा होती हैं, बदनाम हो जाते हैं। जब इन रिश्तेदारों से पर्दा करने का हुक्म है तो दूसरे लोगों से किस तरह पर्दा न होगा।

मसला— जैसा पर्दा औरतों को मर्दों से है वैसा ही मर्दों को औरतों से है। जैसा औरतों को झाँक-ताँक कर मर्दों को देखना दरुस्त नहीं, वैसा ही मर्दों को झाँक-ताँक कर औरतों को देखना दरुस्त नहीं।

मसला— अपने शौहर से किसी जगह का पर्दा नहीं, तमाम बदन उसके सामने खोलना दरुस्त है।

ग़ैरत व शर्म का हामी व मुई है पर्दा,
दीने इस्लाम की एक शाने मुबीं है पर्दा।
लोग नज़्ज़ारों से, आँखों से मज़े लेते हैं,
आज जिन क़ौमों की औरत में नहीं है पर्दा।
फिर यह जब है कि करें क़दर मुसलमाँ इसकी,
और वह क्या समझें कि जिन में नहीं है पर्दा।
कहना जायज़ नहीं उन औरतों को मस्तूरात,
यानी जिनमें कि यह राइज ही नहीं है पर्दा।
हुक्म में इसके हदीसें हैं नबी की मनक़ूल,
पर्दा है ऐने हया दीं के क़रीं है पर्दा।
सर से पाँव तलक औरत का बदन है कुल सतर,
बल्कि आवाज़ का भी इसके तईं है पर्दा।
है यह ज़ाहिर व बातिन का हक़ीक़ी ज़ेवर,
रौनक़े चेहरा हर पर्दा नशीं है पर्दा।
या ख़ुदा तुझ से दुआ है यही इस आजिज़ की,
औरतें पर्दा करें जिन में नहीं है पर्दा।

मसला ग़लत बतलाने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ؕ

इस आयत शरीफ़ा में हक़ तआला शानहू ने एक ऐसा क़ानून बयान फ़रमाया है कि उससे हक़ तआला की निहायत ही रहमत मालूम होती है, वह यह है कि अगर तुमको कोई बात दीन की मालूम न हो तो अहले ज़िक्र से यानी

दीन का इल्म जानने वालों से पूछ लिया करो। क्योंकि अगर किसी को कोई बात दीन की मालूम न हो और वह किसी से पूछे और वह बतलाने वाला ग़लत मसला बतलाये तो न जानने वाले की कोई पकड़ न होगी। हदीस शरीफ़ में है कि जिस ने फ़तवा दिया यानी मसला बतलाया बग़ैर इल्म के तो बतलाने वाला गुनहगार होगा। अब ग़ौर करो कि दुनिया में किसी हकूमत का यह क़ानून नहीं कि अगर किसी को क़ानून मालूम न हो और वह किसी वकील से कानून दरियाफ़्त करे और वकील ग़लत बतलाये तो उस जाहिल को माज़ूर समझा जावे और वकील से मवाख़िज़ा किया जाये, बल्कि तमाम बादशाह रिआया को उसका मुकल्लिफ़ करते हैं कि सही क़ानून दरियाफ़्त करके उस पर अमल करें। अगर दरियाफ़्त किया और उसको ग़लत कानून बतलाया गया, कोई उसको माज़ूर नहीं समझता। मगर हक़ तआला की यह बड़ी रहमत है कि जाहिलों को सही क़ानून मालूम करने का मुकल्लिफ़ नहीं बनाया गया, बल्कि उनके ज़िम्मे सिर्फ़ ऐसे शख़्स से दरियाफ़्त करना ज़रूरी है जिसको उसका अहल समझा यानी जानने वाला समझा कि यह शख़्स दीन के मसले जानता है। फिर दरियाफ़्त करने के बाद अगर उसको ग़लत मसला बतलाया जावे तो इसका मवाख़िज़ा ग़लत बतलाने वाले से होगा यानी ग़लत मसला बतलाने वाले को अल्लाहतआला सज़ा देगा। बतलाइए अगर क़यामत में यह सवाल किया जावे कि तुमने फ़लाँ काम ख़िलाफ़े शरह क्यों किया और वहाँ यह जवाब दिया जावे कि हमने फ़लाँ आलिम से दरियाफ़्त किया था, उसने यह बतलाया था, इस पर कहा जाये कि उसने ग़लत बतलाया तो तुमको पूरी तहक़ीक़ करनी ज़रूरी थी तो क्या हाल होता। देखो ! किस क़दर अल्लाहतआला की रहमत है कि तहक़ीक़ कामिल का मुकल्लिफ़ नहीं बनाया गया, बल्कि सिर्फ़ दरियाफ़्त करने का मुकल्लिफ़ बनाया गया। इससे मालूम हुआ कि शरीयत पर अमल करना निहायत आसान है। अगर किसी को मसला मालूम न हो तो किसी आलिम मौलवी से दरियाफ़्त करके अमल करे तो अल्लाहतआला के यहाँ यह बरी हो जायेगा। बतलाइए यह कितनी बड़ी रहमत है और ग़लत मसला बतलाने वाला पकड़ा जायेगा।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते है कि—

जिससे कोई दीन की बात पूछी जाये और वह उसको छुपा ले या ग़लत बतलाये तो क़यामत के दिन उसको आग की लगाम पहनायी जायेगी।

फ़ायदा— मुसलमान भाइयो ! मसला बतलाने में बड़ी अहतियात की ज़रूरत है। कोई खेल तमाशा नहीं। अल्लाह व रसूल का क़ानून है, अगर तुमको मसला ख़ूब याद हो तो बतला दो और वैसे ही अटकल पच्चू अपनी राय से बतलाओगे तो

सारा बोझ तुम्हारी गर्दन पर रहेगा।

दूसरे के घर में झाँकने की सज़ा

एक शख़्स हुज़ूर (स०) के घर में झाँकने लगा। आपने उसको फ़रमाया कि अगर मैं तुझको झाँकते देखता तो तेरी आँखें फोड़ डालता। जब तूने झाँक कर देखा तो घर में आने की इजाज़त माँगने से क्या फ़ायदा हुआ।

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि दूसरे के घर में झाँकना, ताकना हराम है। अल्लाहतआला के रसूल की नाराज़गी, अल्लाहतआला की नाराज़गी है। इसलिए झाँकने, ताकने से बचना चाहिए। यह मर्ज़ अक़सर औरतों में ज़्यादा होता है।

बेअमल नसीहत करने वालों को सज़ा

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उसामा बिन ज़ैद से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि एक आदमी क़यामत के दिन लाया जायेगा और उसको दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा। उसके पेट से उसकी अंतड़ियाँ निकल पड़ेंगी और वह उनको हासिल करने के लिए इस तरह घूमता फिरेगा जैसे गधा पनचक्की के चारों तरफ़ घूमता है। दोज़ख़ी लोग उससे पूछेंगे कि ऐ शख़्स, तुझको क्या हो गया? हालाँकि तू दुनिया में लोगों को अच्छी-अच्छी बातें बतलाता था और बुरे कामों से रोकता था। वह कहेगा बेशक मै लोगों को नसीहत करता था, मगर खुद अमल नहीं करता था और उनको बुरे कामों से मना करता था, मगर खुद न रुकता था।

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से उन लोगों को सबक़ हासिल करना चाहिए जो दूसरों को वाज़ व नसीहत करते हैं और खुद अमल नहीं करते।

झूठ बोलने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

तुम सच बोलने के पाबन्द रहो। क्योंकि सच बोलना अच्छी राह दिखाता है तो सच बोलना और अच्छी राह पर चलना दोनों जन्नत में ले जाते हैं और झूठ बोलने से बचा करो। क्योंकि झूठ बोलना बुरी राह दिखाता है। झूठ बोलना और गलत राह चलना दोनों दोज़ख़ में ले जाते हैं और दोज़ख़ में झूठ बोलने वाले के कल्ले चीरे जायेंगे। अल्लाह व रसूल ने झूठ बोलने वाले पर लानत

फ़रमायी है और तजुर्बे की बात है कि झूठा आदमी दुनिया में भी बे-ऐतबार और ज़लील व खुवार हो जाता है। मगर तीन जगह झूठ बोलना दरुस्त है। एक बीवी-बच्चों को खुश करने के लिए, दूसरे जंग में काफ़िरों से बचाव करने के लिए, तीसरे मुसलमानों में सुलह कराने के लिए।

झूठी गवाही देने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि—

जब कोई झूठी गवाही देता है तो अर्श काँपता है और अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं और वह दोज़ख़ में जल्दी जाना चाहता है। दिल उसका सियाह हो जाता है और उसका चेहरा बेरौनक़ हो जाता है। उसकी क़ब्र उस पर तंग हो जायेगी और क़ब्र में उसकी सूरत ख़नज़ीर की-सी हो जायेगी। या अल्लाह ! तेरी पनाह। और हुज़ूर (स०) ने झूठी गवाही देने वाले पर लानत फ़रमायी है।

किसी की ज़मीन दबा लेने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स नाहक़ और ज़बरदस्ती से किसी की एक बालिश्त भर ज़मीन दबायेगा तो क़यामत के दिन सातों ज़मीनों के वज़न के बराबर उसके गले में तौक़ डाला जायेगा या सातों ज़मीनों में धँसाया जायेगा।

फ़ायदा— इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि किसी का हक़ थोड़ा हो या बहुत हरगिज़ अपने ज़िम्मे न ले। चाहे एक पैसा या एक सुई हो। हक़ूक़ उलइबाद से जहाँ तक हो सके, बचे।

चुग़ली खाने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने—

कि चुग़लख़ोर जन्नत में नहीं जायेगा और खुदा के सब बन्दों में सब से बुरे बन्दे वह हैं जो चुग़लियाँ करते हैं और एक दूसरे में फ़िसाद कराते हैं।

मसला— अगर कोई शख़्स किसी को नाहक़ तकलीफ़ देना चाहता हो तो उसका बतला देना अच्छा है, बल्कि सवाब मिलता है।

वादा पूरा न करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जो शख़्स अमानत में ख़यानत करे, उसमें ईमान नहीं और जिसको वादा पूरा करने का फ़िक्र न हो उसमें दीन नहीं।

मसला— वादा करने के बाद अगर कोई दीन या दुनिया का नुक़सान होता हो तो फिर माज़ूरी है।

मुसलमान का ऐब खोलने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जो शख़्स अपने भाई मुसलमान का ऐब छुपायेगा, अल्लाहतआला दुनिया में और आख़िरत में उसका ऐब छुपायेगा और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई का ऐब खोलेगा और उसको रुसवा करेगा, अल्लाहतआला दुनिया और आख़िरत में उसका ऐब खोलेगा और उसको रुसवा करेगा और अपने भाई मुसलमान का ऐब छुपाने वाला जन्नत में जायेगा और ऐब खोलने वाला दोज़ख़ में जायेगा।

फ़ायदा— इसलिए अच्छी बात यह है कि किसी का ऐब तलाश ही न करें। अगर मालूम हो जावे तो किसी पर ज़ाहिर न करें।

हमसाये को तकलीफ़ देने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

वह शख़्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसका हमसाया उसके सताने से बेफ़िक्र न रहता हो यानी हमसाये को यह फ़िक्र लगा रहता हो कि यह शख़्स मौक़ा मिलने पर जान व माल और इज़्ज़त को नुक़सान पहुँचायेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

एक बीबी ने हुज़ूर (स०) से दरियाफ़्त किया कि या रसूल अल्लाह, एक औरत है कि वह नमाज़ रोज़े की पाबन्द है और बहुत इबादत करती है मगर हमसायों से लड़ाई-फ़िसाद करती रहती है और हमसाये उससे नाराज़ हैं उसके बारे में क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया— वह दोज़ख़ में जायेगी। फिर उस बीबी ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! एक ऐसी औरत है कि वह पाँचों वक़्त की नमाज़ वक़्त पर पढ़ती है मगर ज़्यादा इबादत नहीं करती, मगर किसी हमसाये से लड़ती-झगड़ती नहीं। हमसाये उससे ख़ुश हैं। उसके बारे में क्या हुक्म है? आप ने फ़रमाया— वह जन्नत में जायेगी। फिर आपने फ़रमाया कि जो मर्द या

औरत अल्लाह और उसके रसूल को सच्चा मानता है, उसको चाहिए कि पड़ौसी का हक़ अदा करे। अर्ज़ किया गया कि या रसूल अल्लाह! पड़ौसी का क्या हक़ है? आपने फ़रमाया कि ज़रूरत के वक़्त उसको क़र्ज़ दे देना, उसके बुलाने पर उस के घर जाना, बीमारी में उसकी ख़बर लेना, तकलीफ़ में उसकी मदद करना, उसके आगे भी और पीछे भी, उसके घर की और बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करना, उस को ज़ुल्म न करने देना, अच्छे कामों की उसको नसीहत करना, उसको नाहक़ कोई तकलीफ़ न देना।

अफ़सोस यही है कि आजकल पड़ौसियों को तकलीफ़ें दी जाती हैं। अल्लाह बचाये।

दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यां की साथ ले,
नेकी का बदला नेक है बदी से बदी की बात ले।

कल जुग नहीं कर जुग है यह यां दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले।

मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुखदर्द दे आफ़ात ले।

कांटा किसी के मत लगा गो मिस्ले गुल फूला है तू,
वह तेरे हक़ में तीर है किस बात पे फूला है तू।

मत आग में डाल और को फिर घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुकता बेख़बर किस बात पर भूला है तू।

गेहूँ से गेहूँ, जौं से जौं चावल से चावल पावेगा,
जो आज देवेगा यहाँ वैसा ही कल तू पावेगा।

कल पावेगा, कल पावेगा, कल पावेगा, कल पावेगा,
जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिन्स यां तैयार है।

आराम में आराम है आज़ार में आज़ार है,
दुनिया जानो इसको तुम दरिया की यह मंझधार है।

औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है,
तू और की तारीफ़ कर तुझ को भी सना ख़ुवानी मिले।

कर मुश्किल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले,
तू और को मेहमान कर तुझ को भी मेहमानी मिले।

रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले,
नुक़सान में नुक़सान है अहसान में अहसान है।

तोहमत में यां तोहमत लगे तूफ़ान में तूफ़ान है,
रहमान को रहमान है शैतान को शैतान है।

यां ज़हर दे तो ज़हर ले शक्कर में शक्कर देख ले,
नेकों को नेकी का मज़ा मूज़ी को टक्कर देख ले।

मोती जो दे मोती मिले पत्थर में पत्थर देख ले,
गर तुझ को नहीं आता यक़ीं तो तू भी कर-कर देख ले।

ग़फ़लत की यह जाये नहीं यां साहिब इदराक रह,
दिलशाद रख दिलशाद रह, ग़मनाक रख, गमनाक रह।

हर हाल में तू भी नज़ीर अब हर क़दम की ख़ाक रह,
यह वह मका है भाइयो यां पाक रह बेबाक रह।

कल जुग नहीं कर जुग है यह यां दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले।

ग़ैर मुस्लिम पड़ौसी के हक़ूक़

जो पड़ौसी ग़ैर मुस्लिम हो, मुसलमान के ज़िम्मे उसके चार हक़ूक़ हैं—

(1) उसके साथ भलाई करता रहे, (2) उसकी जान व माल से कोई लालच न रक्खे, (3) अपना कोई काम उस पर ऐसा न डाले कि उसको तकलीफ़ हो, (4) नाहक़ उसको तकलीफ़ न दे।

कन्जूस की सज़ा

रसूले करीम (स०) ने फ़रमाया कि—

बख़ील यानी कन्जूस आदमी अल्लाहतआला का दुश्मन है, चाहे वह कितना ही इबादत करने वाला हो। अल्लाहतआला क़सम के साथ फ़रमाता है कि मैं बख़ील को जन्नत में दाख़िल नही करूँगा। और अल्लाहतआला तीन क़िस्म के लोगों को दुश्मन समझता है। एक बख़ील माल रखने वाला, दूसरा बूढ़ा ज़िना करने वाला, तीसरा अहसान करके जतलाने वाला।

फ़ायदा— बख़ील यानी कन्जूस आदमी दुनिया में भी लोगों की नज़रों में ज़लील होता है। ऐसे आदमी को चाहिए कि माल की मुहब्बत दिल से निकाले और

हिम्मत करके अच्छे कामों में अपना माल ख़र्च किया करे। ग़रीब रिश्तेदारों की और दूसरे ग़रीबों और मोहताजों की आलिमों और तालिब इल्मों की ख़िदमत किया करे कि दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़त मिले और जन्नत में जावे।

देखो ! हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

सख़ी यानी अच्छे कामों में माल ख़र्च करने वाला अल्लाहतआला का दोस्त है और वह दोज़ख़ की आग से दूर है और जन्नत के क़रीब है और जन्नत में बड़ी-बड़ी नैमतें पायेगा।

हराम माल खाने की सज़ा

मोहसिने आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि—

जिस आदमी का गोश्त और ख़ून हराम माल के खाने से बढ़ा होगा, वह जन्नत में नहीं जायेगा। वह दोज़ख़ ही के क़ाबिल है।

माल व मुल्क व दौलत व बाग़े बहार,
मसनद व तकिया व ख़ाना ज़र निगार।

नान व हल्वा क़न्द व शकर व क़ौरमा,
हो मयस्सर बे शुबा क्योंकर भला।

माल व मुल्क व दौलतो बाग़े व चमन,
सब ये गर्दन में पड़ेंगे तौक़ बन।

करके मेहनत और मुशक़्क़त बाकमाल,
जाके पैदा कर तू कुछ रोज़ी हलाल।

मोटा-झोटा कपड़ा तन ढ़कने को हो,
इससे ज़्यादा की तुझे ख़ुवाहिश न हो।

डर ख़ुदा का है तेरे दिल में अगर,
जल्द इसका कर इलाज ऐ बेख़बर।

बोहतान लगाने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने—

जो शख़्स किसी मुसलमान को ऐसी बात की तोहमत लगाये कि वह बात उसमें न हो तो अल्लाह तआला तोहमत लगाने वाले को दोज़ख़ में ऐसी जगह डालेगा कि जहाँ दोज़ख़ी लोगों का ख़ून और पीप जमा होगा। और मर्द

या औरत को ज़िना की तोहमत लगाने वाले को दुनिया में भी शरेई सज़ा यह है कि लोगों के सामने उस के सौ दुर्रे मारे जायें।

डाकू और चोर की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

जो मर्द चोरी करे और जो औरत चोरी करे तो उन दोनों के दाहिने हाथ पोंहचे पर से काट डालो। यह उनकी करतूत के बदले बतौर सज़ा अल्लाह की तरफ़ से है। डाकू और लुटेरा जो रास्तों में या आबादियों में लूटमार करे और किसी का माल भी ले जायें और उसको मार भी जावें तो उसकी दुनिया में यह सज़ा है कि हाकिमे वक़्त उसके हाथ-पाँव कटवाकर उसको क़त्ल करा दे या अगर चाहे तो उसको फाँसी दिलवाये और नेज़े से उसका पेट फाड़ दिया जाये कि तड़प कर उसकी जान निकल जाये और तीन रोज़ तक सब के सामने फाँसी पर लटकाये रक्खें कन्ज़ुलदकायक़। अल्लाह की पनाह ! चोरी करना और लूट-मार करना कितना संगीन जुर्म है, चोर और डाकू की दुनिया और आख़िरत दोनों ख़राब हैं।

लड़कियों को मीरास का हिस्सा न देने की सज़ा

मीरास उस माल और असबाब को कहते हैं जिसको कोई मरने वाला छोड़ कर मर जाये। उस माल और असबाब में वारिसों का हक़ होता है। बाज़ मुसलमान उसमें से लड़कियों का हक़ अदा नहीं करते और हिन्दुओं की तरह ब्याह-शादी वग़ैरा के मौक़े पर कुछ देकर पीछा छुड़ा लेते हैं। यह बड़ी हक़तल्फ़ी है। अल्लाह व रसूल की मुख़ालिफ़त है। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि जो शख़्स अल्लाह का और उसके रसूल का कहा न मानेगा और अल्लाह के क़ानून और ज़ाबतों से निकल जायेगा तो अल्लाहतआला उसको दोज़ख़ में दाख़िल करेगा और वह उसमें हमेशा-हमेशा रहेगा और उसको ज़िल्लत की मार दी जावेगी। (सूरतउलनिसा)। और हादीए आज़म हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि बाज़ लोग तमाम उम्र अल्लाह की इबादत करते हैं। लेकिन मरने के वक़्त मीरास में वारिसों को नुक़सान पहुँचाते है। ऐसे लोगों को अल्लाहतआला सीधा दोज़ख़ में पहुँचा देता है। याद रक्खो, जो शख़्स अपने वारिस यानी हक़दार को मीरास के माल से महरूम करेगा, अल्लाहतआला उसको जन्नत से महरूम करेगा। (तिरमिज़ी व मिश्कात)।

बस जो नेक बन्दे अल्लाह व रसूल का हुक्म समझकर मीरास का माल

तक़सीम करते हैं और हिस्सेदारों को पूरा-पूरा हिस्सा देते हैं, उनके बारे में अल्लाह तआला का यह हुक्म है कि जो लोग अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेंगे तो अल्लाहतआला आख़िरत में उनको जन्नत के ऐसे बाग़ों में ले जा दाख़िल करेगा, जिनके मकानों के नीचे नहरें बहती होंगी और वह उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे और यह बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूरतउलनिसा)

फ़ायदा— अब हर मुसलमान समझ ले कि चाहे अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करके दोज़ख़ ख़रीद ले और चाहे ताबेदारी करके जन्नत ख़रीद ले। मुसलमान भाईयो ! यह दुनिया की ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है। अल्लाह व रसूल को राज़ी करो और जब कोई मर जाया करे तो उस का छोड़ा हुआ माल और अस्बाब इन्साफ़ के साथ आलिमों से दरियाफ़्त करके हक़दारों को दे दिया करो। और सबसे अच्छा और बेहतर तरीक़ा यह है कि अपनी ज़िन्दगी में ही सबके हिस्से तक़सीम कर दिये जायें और हक़दारों को राज़ी कर लिया जाये।

काफ़िरों के तरीक़े अख़्तियार करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَلَا تَرْكَنُوْا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۔

यानी और जिन लोगों ने हमारी नाफरमानी की, उनकी तरफ़ न झुकना, वरना उनकी तरह तुम को भी दोज़ख़ की आग लगेगी (सूरा अलहूद)

फ़ायदा— मतलब यह है कि ऐ मुसलमानो ! हमारे रसूल मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) का तरीक़ा छोड़कर तुम काफिरों और फ़ासिक़ों का तरीक़ा अख़्तियार मत करो वरना तुम भी उनकी तरह दोज़ख़ का मज़ा चखोगे। और हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी क़ौम का-सा तरीक़ा अख़्तियार करे तो वह उसी क़ौम में से है। (अहमद अबुदाऊद)

फ़ायदा— क़ुर्आन व हदीस से यह बात साबित हो गयी कि जो शख़्स अल्लाह व रसूल के बतलाये हुए तरीक़े को छोड़कर काफ़िरों और फ़ासिक़ों का-सा तरीक़ा अख़्तियार करे तो वह गुनाह करने में उन्हीं के बराबर है। अल्लाह की पनाह ! इसलिए हर मुसलमान मर्द और औरत को चाहिए कि हर बात में, चाल-चलन में, सूरत व शक्ल में, जीने और मरने में, ब्याह और शादी में इबादत व मामलात व आदत वग़ैरा में महबूबे ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के बतलाये हुए तरीक़े पर अमल करे और सब तरीक़ों और रस्मों को छोड़ दे।

रस्म कुफ्र व शिर्क तुम सब छोड़ दो,
रिश्तए उल्फ़त को उस के तोड़ दो।

रस्म होवे खूब या होवे बुरी,
फेर दो सब के गले पर तुम छुरी।

कुफ्र की जो रस्म को करते हो तुम,
कब अपनी आग से भरते हो तुम।

मत करो बहरे खुदा वह रस्मे बद,
जिसकी तुम पाओ न हज़रत से सनद।

जान व दिल से राहे सुन्नत पर चलो,
और जो राहें हैं उन पर मत चलो।

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

क़यामत में हर एक आदमी उसी हालत में उठाया जायेगा कि जिस हाल में वह मरा होगा।

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अगर ईमान के साथ मरा है तो ईमानदार ही उठाया जायेगा और बेईमान मरा है तो बेईमान ही उठाया जायेगा और फ़ासिक़ व फ़ाजिर यानी हज़ूर (स०) के तरीक़े के खिलाफ़ हालत में मरा है तो उसी हालत में उठाया जायेगा। बस इसी में खैर और भलाई और निजात है कि रसूले पाक (स०) के तरीक़ा-ए-पाक पर चले और मरे।

बेवा के निकाह को ऐब समझने की सज़ा

हिन्दुओं की सोहबत की वजह से जहाँ और बहुत-सी रस्में मुसलमानों के गले का हार बन गयी हैं, उस तरह एक यह रस्म भी हिन्दुस्तान के बाज़ मुसलमानों में आ गयी कि बेवा औरत के निकाह को ऐब समझते हैं। ईमान और अक़्ल की बात यह है कि जिस तरह पहले निकाह को खुशी से करते हैं, उसी तरह बेवा का निकाह खुशी से कर दिया करें। अल्लाह व रसूल के हुक्म को ऐब समझना बेईमानी की निशानी है, जिस की सज़ा दोज़ख है। हमारे नबी (स०) की जितनी बीवियाँ थीं, सिवाये हज़रत आयशा (रज़ी) के, वह कुँवारी थीं, बाक़ी और सब बेवा थीं। सब के एक-एक दो-दो निकाह पहले हो चुके थे। अल्लाह की पनाह! क्या तुम्हारी इज़्ज़त उनसे भी बढ़ गयी। सब जानते हैं कि बेवा के बिठाने में बाज़ जगह ऐसी खराबी होती है कि इज़्ज़त खाक में मिल

जाती है। हिकायत है कि—

एक बड़ी नेकबख़्त बुढ़िया ने अपने मरने के वक़्त औरतों को जमा किया और नसीहत की कि बहिनों, बेटियों, ख़बरदार हो जाओ कि जब कोई बीवी बेवा हो जावे तो उसका निकाह ज़रूर कर दिया करें और बेवा को भी चाहिए कि वह ज़ाहिर की शरमा-शरमी को छोड़कर अल्लाह व रसूल का हुक्म समझकर निकाह कर लिया करे, इसी में बेहतरी है, इज़्ज़त है। मैंने इस दुनिया के समुद्र में बेवा होकर अस्सी बरस ऐसी मुश्किल हालत में गुज़ारे हैं कि मेरा ही दिल जानता है। अल्लाह ही ने मुझे बचाया, वरना ख़बर नहीं कि कहाँ-कहाँ मुँह काला करती। मैं उम्मीद करती हूँ कि सआदतमन्द बीवियाँ और सआदतमन्दमर्द मेरी इस सच्ची ख़ैर ख़ुवाही की नसीहत पर पूरा-पूरा अमल करेंगे। लो अब मैं दुनिया से रुख़सत होती हूँ और कलमा शरीफ़ **"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** बुलन्द आवाज़ से पढ़ कर रुख़सत हो गयी। मुसलमान भाइयो और बहिनो! काफ़िरों की रस्मों को छोड़ दो। देखो, हमारे प्यारे नबी (स०) ने फ़रमाया है कि जो शख़्स मेरी छुटी हुई सुन्नत को जारी करेगा उसको सौ शहीदों के बराबर सवाब मिलेगा। इसी तरह जो बेवा बीवी अल्लाह व रसूल का हुक्म समझकर निकाह करेगी, उसको भी यह सवाब मिलेगा। अलबत्ता अगर किसी ज़रूरी वजह से निकाह करने को दिल न चाहे और गुनाह करने का भी डर न हो, या बच्चों के पालने में ख़लल हो, ऐसी हालत में निकाह न करे तो कुछ हर्ज नहीं बल्कि बेशुमार सवाब मिलता है। हज़ूर (स०) ने हज़रत अली (रज़ी) को यह नसीहत फ़रमायी।

तीन चीज़ों को न करना तुम देर से,
जल्द होवे जिस क़दर भी हो सके।

जब जनाज़ा देख ले ऐ दिलनवाज़,
उस की पढ़ जाकर के तू फ़ौरन नमाज़।

जिस घड़ी वक़्ते नमाज़ आये तेरा,
कर तू अव्वल वक़्त में उसको अदा।

जब किसी जा देख ले बेवा को तू,
कर निकाल जल्दी से उस का नेक ख़ू।

कुत्ता और तस्वीर रखने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जिस घर में कुत्ता और तस्वीर हो, उसमें फ़रिश्ते नहीं जाते। (बुखारी शरीफ़)

फ़ायदा— जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो या ग़ुस्ल की हाजित वाला मर्द या औरत हो जो सुस्ती से पड़ा रहे और नमाज़ का वक़्त टाल दे, तो उस घर में वह फ़रिश्ते नहीं जाते जो रहमत और बरकत लेकर उतरते हैं। फ़रिश्तों को ऐसी चीज़ों से बहुत नफ़रत है। लेकिन जो फ़रिश्ते हमारे अमल लिखते हैं या जान निकालते हैं वह ख़ुदा के हुक्म को पूरा करने के लिए ऐसी जगह भी जाते हैं, अगरचे उनको तकलीफ़ होती है।

हज़ूर अकरम (स०) फरमाते हैं कि—

तस्वीर बनाने वाले को क़यामत में बड़ी सख्त सज़ा होगी और तस्वीर बनाने वालों को हुक्म होगा कि इन तस्वीरों में जान भी डालो और वह जान नहीं डाल सकेंगे। लेकिन अल्लाहतआला उनमें जान डाल देगा और उनको बनाने वालों का सर पीटने के लिए उनको मुकर्रर कर देगा।

मसला— कुत्ते को शिकार के लिए या मकान और बाग़ या खेती की हिफ़ाज़त के लिए रखना दरुस्त है, मगर उसको खुला न छोड़ें कि लोगों को न सताये। ऐसी ज़रूरत में कुत्ते रखने का गुनाह न होगा। मगर रहमत के लाने वाले फ़रिश्ते फिर भी न आयेंगे।

टख़नों से नीचे तहबन्द या पायजामा रखने की सज़ा

रहमते आलम (स०) ने फ़रमाया कि—

टख़नों से नीचा तहबन्द या पाजामा पहनने वाला दोज़ख़ में जावेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

फ़ायदा— तहबन्द या पाजामा टख़नों से ऊँचा रखना चाहिए, वरना अल्लाह के रसूल का हुक्म न मानने की वजह से दोज़ख़ में जाना पड़ेगा। यह एक ऐसा डराने वाला हुक्म है कि उसको सुन लेने के बाद मुसलमान को चाहिए कि टख़नों से नीचा तहबन्द और पाजामा पहनना छोड़ दे। अलबत्ता औरतों को दरुस्त है कि इतना नीचा पहनें कि पाँव भी चाहे ढक जायें।

रिश्तेदारों को छोड़ने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

रिश्तेदारों से क़ता ताअल्लुक़ करने वाला जन्नत में नहीं जायेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

फ़ायदा— ज़रा-ज़रा सी बात में झगड़े फिसाद खड़े कर लेते हैं। कहीं शादी के मामले में रूठ गये कि हमारे क्यों नहीं की, कहीं रस्म व रिवाज की बातों पर बिगड़ गये, कहीं जायदाद वग़ैरा के मुकद्दमों में फँस गये, कहीं लेन-देन और बात-चीत और खाने-पीने वग़ैरा पर अकड़ गये और मिलना-जुलना छोड़ बैठे। ऐसी बातों का बहुत जल्द शरह के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करके इत्तफ़ाक़ से रहना चाहिए और एक-दूसरे की मदद करें, माल से-जान से।

देखो, एक रोटी अल्लाह के वास्ते किसी फ़क़ीर को दोगे तो दस रोटियों का सवाब मिलेगा, और अगर एक रोटी अपने किसी रिशतेदार, ग़रीब भाई-बहिन, फूफी, ख़ाला, चचा, ताया वग़ैरा को दोगे तो बीस रोटियों का सवाब मिलेगा। इसी तरह रुपये-पैसे और कपड़े वग़ैरा के देने में समझ लो। अब खुद समझ सकते हो कि नफ़ा किस बात में है।

मसला— अगर किसी रिश्तेदार से ख़िलाफ़े शरहा काम करने पर नाराज़गी हो, जैसे नमाज़ न पढ़ता हो, रोज़े न रखता हो या शराब पीता हो, जुआ खेलता हो, बदकारी वग़ैरा बुरा काम करता हो, ऐसी हालत में उससे मिलना-जुलना छोड़ देना दरुस्त है; मगर जब वह तौबा कर ले और बुरे काम छोड़ दे तो फिर मेल-जोल कर लेना चाहिए।

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबुहरेरा (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमते अक़दस में एक शख़्स ने अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! मेरे रिश्तेदार हैं। मैं उनके साथ अच्छा सलूक करता हूँ और वह मुझसे बदसलूकी करते हैं। मैं उनके साथ नेकी करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं। मैं उनसे नर्मी करता हूँ और वह मुझ पर सख़्ती करते हैं और गालियाँ तक देते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया—अगर यह सच है जो तुम कहते हो तो रिश्तेदार तुम्हारे साथ बदसलूकी करने की सज़ा पायेंगे और दोज़ख़ में जायेंगे। तुम तसल्ली रखो और तुम उनके साथ एहसान करने से उनके सामने बेइज़्ज़त और ज़लील न होंगे। अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारी मदद के वास्ते एक फ़रिश्ता मुक़र्रर रहेगा। जब तक तुम अपने इस तरीक़े पर अमल करते रहोगे।

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से रिश्तेदारों के साथ भलाई और सलूक करने का और उनके सताने का और उस पर सब्र करने का सवाब मालूम हुआ और बदसलूकी करने वालों की सज़ा मालूम हुई। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

अपनी जान के हक़ूक़

मालूम होना चाहिए कि हमारी जान का मालिक अल्लाह है। जो उसने हमको अमानत के तौर पर दे रक्खी है और उसकी हिफ़ाज़त का हमको हुक्म दिया है, अपने अख़तियार से उसकी सेहत और कुव्वत में फ़र्क़ न आने दें और कोई काम ऐसा न करें कि जिससे जान परेशान हो। क्योंकि जब जान परेशान होगी तो उसकी कुव्वत व सेहत में फ़र्क़ आयेगा। फिर दीन और दुनिया के कामों में भी फ़र्क़ पड़ जायेगा। इसलिए अपने अख़तियार की बातों के करने में एहतियात रखें। जैसे बहुत खा लेना या नुक़सान देने वाली चीज़ों का बरतना, या मियां-बीवी की सोहबत में ज़्यादती करना, या जिन कामों की सहार न हो उन में पड़ना, या आरामतलब बन जाना। काम काज अपने हाथों से करना छोड़ देना या नक़ली इबादत में ज़्यादती करना, या माल को फ़ज़ूल उड़ाना।

देखो, फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

मुसलमान को चाहिए कि अपनी जान को ज़लील और परेशान करे। यानी बुरा काम करके ज़लील होना या जिस काम की सहार न हो उसमें पड़ कर परेशान होना अगर कोई तकलीफ़ की बात ग़ैर अख़तियारी ख़ुदा की तरफ़ से आ पड़े। जैसे कोई बीमारी या तंगदस्ती या बेरोज़गारी या किसी अज़ीज़ का मर जाना वग़ैरा तो उस पर सब्र करें। बेसब्री से जान परेशान होगी और क़ूव्वत व सेहत में फ़र्क़ आयेगा फिर न दीन का काम होगा और न दुनिया का।

काम करने का सलीक़ा चाहिए,
और बेकारी से बचना चाहिए।

देखते क्या हो बुराई ग़ैर की,
ऐब अपना भी तो देखना चाहिए।

पहले कोशिश चाहिए हर काम की,
फिर ख़ुदा पर छोड़ देना चाहिए।

दूसरों को जिस में पहुँचे फ़ायदा,
कोई तो काम ऐसा करना चाहिए।

हो बुरे लोगों का जिस जा पे गुज़र,
ऐसी मजलिस में न जाना चाहिए।

दी ख़ुदा ने अक़्ल जां होशो हवास,
सही राह पर उनको लगाना चाहिए।

रहमते आलम हुज़ूर (स०) का इरशाद है कि—

जो मुसलमान हलाल माल इसलिए कमाये कि भीख माँगने से बचा रहे और उस कमाई से अपने बाल-बच्चों के हक़ अदा करे और भूखे पड़ोसी का भी ख़याल रखे तो क़यामत के दिन वह अल्लाहतआला से ऐसी हालत में मिलेगा कि उस का चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होगा।

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से कारोबार, मेहनत, मज़दूरी करने की और बीवी-बच्चों की ख़िदमत और परवरिश करने की बज़ुर्गी मालूम हुई और बेकारी और आरामतलबी की जड़ ही कट गयी।

मशहूर है कि—कर मज़दूरी और खा चूरी।

मज़लूम को तकलीफ़ देने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

मज़लूम यानी कमज़ोर की बददुआ से बचो। अगरचे मज़लूम काफ़िर ही हो। (बुख़ारी)

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि किसी मुसलमान को बल्कि काफिर को भी नाहक़ तकलीफ़ देना और सताना दरुस्त नहीं, क्योंकि मज़लूम कमज़ोर और बेकस होता है। उस की बददुआ तीर की तरह लगती है। इसलिए ज़ुल्म व सितम से बचना ज़रूरी है।

ग़ुस्सा करने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) से एक आदमी ने अर्ज़ की—

या रसूल अल्लाह! मुझे कोई ऐसा अमल बतला दीजिए कि जो मुझे जन्नत में ले जाये। आपने फ़रमाया ग़ुस्सा मत करना। बस तेरे लिए जन्नत है। फिर हुज़ूर ने अपने दोस्तों से फ़रमाया कि तुम अपने अन्दर पहलवान किसको समझते हो? अर्ज़ किया गया, जिसको आदमी गिरा न सके। हुज़ूर ने फ़रमाया वह पहलवान नहीं, बल्कि पहलवान वह है जिसको ग़ुस्से के वक़्त अपने ऊपर

क़ाबू रहे और हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में एक ऐसा दरवाज़ा है जिसमें से कोई शख़्स दाख़िल न होगा मगर जो अल्लाह को नाराज़ करके अपना ग़ुस्सा पूरा करे।

फ़ायदा— अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी देखकर ग़ुस्सा करना तारीफ़ के क़ाबिल है कि वह अल्लाहतआला की रज़ा के लिए है और ग़ुस्सा करना दुरुस्त है। और फ़रमाया हज़ूर (स०) ने कि बाज़ आदमी ऐसे होते हैं कि उनको देर में ग़ुस्सा आता है और जल्दी उतर जाता है और बाज़ लोगों को जल्दी ग़ुस्सा आता है और जल्दी उतर जाता है और बाज़ ऐसे हैं कि उनको ग़ुस्सा जल्दी आता है और देर में उतरता है। इनमें अच्छा वह है जिसको ग़ुस्सा देर में आये और जल्दी उतर जाये।

ख़ूब समझ लो, ग़ुस्सा आदमी के दिल में एक आग की चिंगारी है कि तुमने उस की आँखों का सुर्ख़ होना और गर्दन की रगों का फूल जाना देखा होगा। यह आग की गर्मी का असर है। बस जब ग़ुस्से का असर मालूम हो तो आजिज़ी के साथ ज़मीन को लिपट जायें और ख़याल करें कि मर कर ख़ाक में मिल जाऊँगा।

हिर्स, ग़ुस्सा, बुग़ज़ो कीना, ग़ीबतो मुक्रो फ़रेब,
रात दिन करता है उम्रे बेबक़ा के वास्ते।

है तकब्बुर ज़र पे लाहासिल के बाद अज़ मर्गबस,
एक ही रास्ता है सब शाहो गदा के वास्ते।

हक़ की नाफ़रमानियों से बाज़ आ तू बाज़ आ,
आग दोज़ख़ की भड़कती है सज़ा के वास्ते।

काम दोज़ख़ के करे और जन्नत का हो उम्मीदवार,
कस्रे जन्नत तो बना है पारसा के वास्ते।

पूरा मुसलमान किसको कहते हैं?

हज़रत उन्स (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई शख़्स पूरा मुसलमान और ईमानदार नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसकी जान और उसके माँ-बाप और औलाद सब आदमियों और चीज़ों से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जिस आदमी ने अपने दिल की ख़ुवाहिश को मिटाया और हुज़ूर (स०) के हुक्मों पर चला और सब चीज़ों से ज़्यादा आप की मुहब्बत को दिल में बसाया और आप ही की मुहब्बत में मर गया, वही पूरा मुसलमान और पक्का ईमानदार है।

या इलाही ऐसी दे मुहब्बत नबी की,
रहे दिल में बाक़ी न उल्फ़त किसी की।

रोग जितने हैं दिल में सब खो दे,
मुझे इश्क़े मौहम्मद में डुबो दे।

निकाह करने का बयान

जिस मर्द या औरत को कोई मजबूरी निकाह से रोकने की न हो तो उसके लिए असली हुक्म यही है कि वह निकाह कर ले। जैसा कि हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

मोहताज है वह मर्द जिस के बीवी न हो। आप के असहाब ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह! अगर वह मालदार हो तो क्या फिर भी मोहताज है? आप ने फ़रमाया, हाँ। चाहे वह कितना ही मालदार हो।

फिर हुज़ूर ने फ़रमाया, "मोहताज है वह औरत कि जिस का शौहर न हो।"

अर्ज़ की गयी— या रसूल अल्लाह! अगर वह औरत मालदार हो तो क्या फिर भी वह मोहताज है ? फ़रमाया हाँ। चाहे वह कितनी ही मालदार हो।

फ़ायदा— यह बात देखने में भी आती है कि आदमी कितना ही मालदार हो मगर बग़ैर बीवी के आराम नहीं होता और जिस औरत के शौहर न हो उसे भी राहत नहीं मिलती।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

ऐ जवानों की जमाअत! जो शख़्स तुममें से अपने घर का ख़र्चा उठा सकता हो, यानी बीवी के लिए मकान, रोटी, कपड़ा इन सब चीज़ों का इन्तज़ाम कर सकता हो उसको निकाह कर लेना चाहिए। क्योंकि निकाह नज़र को नीची रखने वाला और शर्मगाह को बुरे काम से बचाने वाला है।

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जो आदमी बीवी के हक़ूक़ अदा न कर सके उसको निकाह न करना चाहिए, वर्ना दोनों की ज़िन्दगी ख़राब

हो जायेगी और अल्लाहतआला की पकड़ सर पर रहेगी।

निकाह करने की बुज़ुर्गी

रहमते आलम हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जब मर्द अपनी बीवी को मुहब्बत की नज़र से देखता है और बीवी अपने शौहर को मुहब्बत की नज़र से देखती है तो अल्लाहतआला उन दोनों को रहमत की नज़र से देखता है। और बीवी-बच्चे वाले शख़्स की दो रकअत नमाज़ बढ़कर है। उस शख़्स की बयासी रकअतों से जो बीवी न रखती हो, और औलाद जन्नत के फूल हैं। जैसे जन्नत के फूलों से फ़रहत होगी वैसी ही फ़रहत दुनिया में औलाद को देख कर होती है और औलाद बे निकाह के हासिल नहीं हो सकती। ग़रज़ कि निकाह करने में बहुत से फ़ायदे हैं। सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि आदमी बुरे काम से बच जाता है। नीयत ख़राब नहीं होती और मियाँ-बीवी का पास बैठ कर बातें करना, हँसी-दिल्लगी करना नफ़िल नमाज़ो से भी बढ़कर है। बस जो मर्द या औरत खुदा से डरकर इसलिए निकाह करें कि मैं बुरे काम से बचूँगा, तो वह खुदा के प्यारों में हो जाता है। इसी तरह वह आदमी भी खुदा के प्यारों में हो जाता है जो निकाह कराने में जानी व माली मदद करता है।

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का ज़िक्रे शरीफ़

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) हमारे आक़ा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की सब बेटियों से छोटी बेटी है और मर्तबे में सब से बड़ी और बहुत ही प्यारी बेटी है और अल्लाह तआला के नज़दीक भी बड़ी मक़बूल हैं और कर्बला के जाने वाले मज़लूम शहीदे आज़म की वालिदा हैं।

हज़ूर (स०) ने आप को अपनी जान का टुकड़ा फ़रमाया है और यह भी फ़रमाया है कि मेरी फ़ात्मा जन्नत में सब औरतों की सरदार है और जिस बात से मेरी फ़ात्मा को तकलीफ़ होती है उस बात से मुझ को भी तकलीफ़ होती है। इसी लिए हज़रत अली (रज़ी०) को हज़रत फ़ात्मा की ज़िन्दगी में दूसरा निकाह करना जायज़ नहीं था कि इससे आप को रंज होता और आप के रंज से हज़ूर को रंज होता। हुज़ूर को अपनी ताबेदार बेटी से ऐसी मुहब्बत थी कि जब आप हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होतीं तो हुज़ूर आपको देखकर मुहब्बत के जोश में खड़े हो जाते और आप की पेशानी पर बोसा देते और अपनी जगह पर बिठा लेते थे।

फ़ायदा— मुसलमान भाईयो और बहिनों ! देखो, हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का यह आलीशन मर्तबा और अल्लाह व रसूल की यह मुहब्बत, चाहत ताबेदारी की वजह से थे। अगर अल्लाह व रसूल का प्यारा बनना चाहते हो तो दीन की बातों पर मज़बूती से चलो।

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के निकाह का बयान

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के निकाह की बाबत यह बयान इसलिए लिखा जाता है कि मुसलमान भाई और बहिनें इस बयान से सबक़ हासिल करें। क्योंकि आजकल लोगों ने हुज़ूर (स०) की सुन्नत और तरीक़े को छोड़ दिया है और रस्मो रिवाज में ऐसे डूब गये हैं कि लड़के और लड़की का निकाह करना मुश्किल हो गया है। इसके सिवा और क्या कह सकते हैं कि अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मारना और मुसीबत ख़रीदना है।

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के निकाह की बाबत सबसे पहले इस अज़ीमुश्शान नेमत की दरख़्वास्त हज़रत अबुबक्र (रज़ी०) और हज़रत उमर (रज़ी०) ने की। हज़ूरे पुरनूर (स०) ने कम उम्र होने का उज्र फ़रमा दिया। फिर हज़रत अली (रज़ी०) ने शरमाते हुए अर्ज़ की। आप बहुत ख़ुश हुए। उसी वक़्त आप पर अल्लाहतआला का हुक्म भी आ गया। आपने उनका पैग़ाम मन्ज़ूर फ़रमा लिया। सबक़ सीखो ! इससे मालूम हुआ कि रिश्ता करने के वक़्त जितनी रस्में लोगों ने निकाल रक्खी हैं, सुन्नत के ख़िलाफ हैं। बस ज़बानी बातचीत काफ़ी है। उस वक़्त हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) की उम्र साढ़े पन्द्रह बरस की और हज़रत अली (रज़ी०) की इक्कीस बरस की थी।

इससे मालूम हुआ कि इस उम्र के बाद निकाह में देर करना अच्छा नहीं और यह भी मालूम हुआ कि दूल्हा उम्र में दुल्हन से किस क़दर बड़ा हो।

हुज़ूर (स०) ने अपने ख़ास ख़ादिम हज़रत अनस (रज़ी०) से फ़रमाया कि अबुबक़र (रज़ी०) व उमर (रज़ी०) और तलहा और ज़ुबैर (रज़ी०) और कुछ अन्सारी लोगों को बुला लाओ।

फ़ायदा—

सबक़ सीखो। इससे मालूम हुआ कि निकाह के वक़्त अपने अज़ीज़ व अक़ारिब और दोस्तों को बुला लेने में कुछ हर्ज नहीं। इसमें हिकमत यह है कि निकाह की शोहरत हो जायेगी। मगर लोगों के जमा करने में बहुत कोशिश न की जाये। वक़्त पर बिला तकल्लुफ़ दो चार आदमी बुला लिये जायें। वह सब

हज़रात हाज़िर हो गये। उस वक़्त हज़रत अली (रज़ी०) मौजूद नहीं थे। हुज़ूर ने एक ख़ुतबा पढ़कर अस्र के वक़्त निकाह कर दिया। यानी सब के सामने फ़रमाया कि मैंने अपनी बेटी फ़ात्मा (रज़ी०) का निकाह अली (रज़ी०) के साथ कर दिया। फिर किसी वक़्त हज़रत अली (रज़ी०) मिले तो उनसे भी फ़रमा दिया कि मैंने अपनी बेटी फ़ात्मा (रज़ी०) का निकाह तुम्हारे साथ कर दिया। उन्होंने मंज़ूर कर लिया। सबक़ सीखो।

इस से मालूम हुआ कि बाप का छुपे-छुपे फिरना सुन्नत के ख़िलाफ़ है और चार सौ मिशक़ाल चाँदी मेहर मुक़र्रर हुआ जो हमारे हिसाब से क़रीब डेढ़ सौ रुपये के होता है। सबक़ सीखो।

इससे मालूम हुआ कि मेहर ताक़त से ज्यादा बाँधना भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है। फिर छुवारे तक़सीम किये गये और हुज़ूर पुरनूर (स०) ने हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को अपनी ख़ादिमा उम्मे ऐमन के साथ हज़रत अली के घर भेज दिया। मुसलमान भाईयो और बहिनो ! देखो यह दो जहां की शाहज़ादी की शादी और रुख़सती है। अगर शहनशाहे दो जहाँ (स०) चाहता तो अल्लाहतआला आपको ज़मीन व आसमान के ख़ज़ाने ख़र्च करने के लिए दे देता। मगर आपने इसमें भी आख़िरत के नफ़े को मुक़द्दम रखा, और उम्मत की ख़ैरख़ुवाही मद्देनज़र रखी, कि उम्मत ख़र्च वग़ैरा बढ़ाकर मुसीबत में न पड़े। क़ुर्बान हों हम उस नबी-ए-करीम रहमते आलम (स०) पर कि निकाह व शादी करने का भी हमको आसान रास्ता बतला गये कि इसमें न भात की लात न बारात का साथ, न गाना न बजाना, न रात ही को बारात का आना, न कोई बिरादरी की धूमधाम, न बाजा, न पटाख़ा, न कोई गोला, न डोम न हज्जाम, न हेर न फेर न रुपये पैसों की बखेर, न ध्यानियों का नेग न बिरादरी की देग, न कोई रेशमी जोड़ा, न सुहाग जूड़ा, न दूल्हा के रिशतेदारों के कपड़ों का जोड़ा, न खिलाना न पिलाना और न नमाज़ो का गँवाना।

फिर हुज़ूर (स०) इशा की नमाज़ पढ़कर हज़रत फ़ात्मा (रज़ी) के घर तशरीफ़ ले गये और उनसे पानी मँगवाया। वह एक लकड़ी के प्याले में पानी ले आयीं। सबक़ सीखो।

इससे मालूम हुआ कि नयी दुल्हन को ऐसी शर्म करना कि जिसमें चलना-फिरना, खाना-पीना और अपने हाथ से कामकाज करना सब छोड़ दिया जावे, यह भी सुन्नत के ख़िलाफ है।

एक हिकायत है कि एक लड़की का निकाह हुआ और वह अपने शौहर के घर आयी। घर बिरादरी की औरतों से भरा हुआ था। सारी रात शर्म की वजह से लड़की ने पेशाब रोकने की तकलीफ़ उठायी। आख़िर मजबूर होकर

पेशाब की ज़रूरत बतलायी। लड़की वज़न में भारी थी। बैतुलख़ला तक एक औरत उसको उठा कर ले गयी, जब क़दमचे पर उतारने लगी तो दोनों पाख़ाने पर गिर पड़ीं और पाख़ाने में दोनों के कपड़े भर गये। चोट अलग आयी।

बीबियो ! देखा तुमने, सुन्नत के ख़िलाफ़ काम करने से दुनिया में भी तकलीफ़ और ज़िल्लत हुई कि ख़ूब हँसी उड़ी और आख़िरत की तकलीफ़ सर पर मौजूद रही और इस शर्म में नमाज़ों का छोड़ देना तो बड़े ग़ज़ब ही की बात है।

फिर हुज़ूर (स०) ने अपना लुआबे-दहन उस पानी में डाला और उस पानी को हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के चेहरे पर, सीने पर और कन्धों के दरमियान कमर पर छिड़का और यह दुआ फ़रमायी—

"ऐ अल्लाह ! फ़ात्मा (रज़ी०) को और इसकी औलाद को तेरी हिफ़ाज़त में देता हूँ। इनको शैतान के मुक्र व फ़रेब से बचाना।" फिर इसी तरह पानी छिड़कना और दुआ करना हज़रत अली (रज़ी०) के साथ भी किया। फिर इरशाद फ़रमाया कि जाओ, अल्लाह के नाम की बरकत के साथ आराम करो। और हुज़ूर (स०) तशरीफ़ ले आये।

अगर लड़की का घर नज़दीक हो तो यह अमल करना बाइसे बरकत है।

(अज़ तवारीख़ हबीब इलाह)

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का जहेज़

सूत की दो पुरानी चादरें। एक लिहाफ़, एक गद्दा अलसी के छाल से भरा हुआ। एक तकिया चमड़े का, खजूरों की शाख़ों से भरा हुआ। एक लकड़ी का प्याला। एक मिट्टी का घड़ा और मश्क पानी के लिए। एक चक्की और एक चारपाई। दो बाज़ूबन्द चाँदी के एक मिस्वाक, यह चन्द चीज़ें थीं।

इससे मालूम हुआ कि अगर ताक़त और गुंजाइश हो तो ज़रूरत की ऐसी चीज़ें देना जायज़ है और यह भी समझने की बात है कि जो कुछ देना-दिलाना होता है अपनी औलाद के साथ सलूक करना है। फिर लोगों को दिखाने की क्या ज़रूरत है। मुसलमानो ! इस दिखावे से और बिरादरी के जमा करने से बाज़ आ जाओ। इसी ने लड़के-लड़की की शादी मुसीबत बना दी है। इस तरह घर फूँक तमाशे से बचो।

हज़रत अली का वलीमा

हज़रत अली (रज़ी०) का वलीमा यह था कि क़रीब साढ़े तीन सैर जौ के आटे की रोटियों का खजूरों से मीठा किया हुआ मालीदा। बस वही दोस्तों को एक-एक लुक्मा खिला दिया, न आपने वलीमा करने के लिए क़र्ज़ लिया और न ताक़त से ज़्यादा ख़र्च किया। न नाम करना चाहा, न ख़र्च बढ़ाया। बस सुन्नत के मुवाफ़िक़ वलीमा यह है कि बग़ैर बनावट और दिखलावे के अपनी ताक़त और गुंजाइश के मुवाफिक़ खाना-दाना करना दरुस्त है और बाइसे बरकत है।

मिस्वाक करने के फ़ायदे

रसूल अल्लाह (स०) फ़रमाते हैं कि अगर मुझको उम्मत की तकलीफ़ का ख़याल न होता तो मिस्वाक करना फ़र्ज़ कर देता। मिस्वाक करने के लिए बहुत से फ़ायदे हैं। सब से छोटा फ़ायदा यह है कि मुँह साफ़ रहता है। और सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि मरने के वक़्त कलमा शरीफ़ मुँह से निकलेगा जो मरने वाले की बख़्शीश का ज़रिया है। मिस्वाक करने से अल्लाह व रसूल खुश होते हैं और जिस वज़ू में मिस्वाक न की हो उससे सत्तर हिस्से ज़्यादा सवाब उस वज़ू में मिलता है जिसमें मिस्वाक की हो।

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के मोटे कपड़े

रहमते आलम हुज़ूर पुरनूर (स०) हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के यहाँ तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर ने देखा कि हज़रत फ़ात्मा सूत के मोटे-मोटे कपड़े पहने हुए हैं। हुज़ूर की आँखों में आँसू भर आये और फ़रमाया, "प्यारी बेटी, दुनिया तकलीफ़ की जगह है। सब्र का मुक़ाम है ख़ूब मज़बूती से रहो, अल्लाह के बन्दे ग़रीबी से घबराया नहीं करते। अल्लाहतआला तुमको इस दुनिया की तकलीफ़ें उठाने के बदले जन्नत में बड़ी-बड़ी नैमतें बख़शेगा।"

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) एक दफ़ा हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आयीं। हुज़ूर ने आपको इस हाल में देखा कि भूख की वजह से चेहरा उतरा हुआ है। हुज़ूर ने आपके पेट पर हाथ मुबारक रख कर यूँ दुआ की "ऐ अल्लाह! पेट भरने वाले भूखों के और ऊँचा करने वाले नीचों को मेरी फ़ात्मा का रुतबा बुलन्द कर और भूख की तकलीफ़ से इसको बचा।"

उसी वक़्त आपका चेहरा खुशी से सुर्ख़ हो गया और भूख की तकलीफ़ जाती रही। आप फ़रमाती हैं कि इस मुबारक दुआ के बाद मुझको कभी भूख

की तकलीफ़ नहीं हुई।

एक दफ़ा आप रोटी का एक टुकड़ा लेकर हज़ूर की ख़िदमत में आयीं और अर्ज़ की—अब्बा जान, मैंने एक रोटी पकायी थी। उसमें से यह टुकड़ा आप के लिए लायी हूँ। हुज़ूर ने लेकर खा लिया और फ़रमाया, बेटी आज तीन रोज़ के बाद यह रोटी का लुक़मा तेरे बाप के पेट में गया है। अल्लाहो अकबर! क्या निराली शान है बाप की और बेटी की।

بَلَغَ الْعُلٰى بِكَمَالِهٖ كَشَفَ الدُّجٰى بِجَمَالِهٖ
حَسُنَتْ جَمِيْعُ خِصَالِهٖ صَلُّوْا عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का चक्की पीसना

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) अपने हाथों से चक्की पीसती थीं। आपके नाज़ुक हाथों में निशान पड़ गये थे और चूल्हे की आँच से बड़ी तकलीफ़ होती थी। हज़रत अली (रज़ी०) को इसका बहुत फ़िक्र था। एक दफ़ा शहनशाहे दो आलम हुज़ूर (स०) के पास कुछ लौंडी-ग़ुलाम ग़नीमत में आये। हज़ूर ने अपने असहाबों को तक़सीम कर दिये। हज़रत अली ने आपसे फ़रमाया कि फ़ात्मा, तुम भी कोई लौंडी ग़ुलाम ले आओ। कामकाज की तकलीफ़ से बच जाओ। आप हुज़ूर के यहाँ तशरीफ़ ले गयीं। उस वक़्त हुज़ूर घर में न मिले। आप हज़रत आयशा (रज़ी०) से कह कर चली आयीं। जब हुज़ूर तशरीफ़ लाये तो हज़रत आयशा ने फ़रमाया कि फ़ात्मा (रज़ी०) आयीं थीं, उनको ख़ादिमा की ज़रूरत है। हज़ूर (स०) इशा की नमाज़ पढ़कर हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के यहाँ तशरीफ़ ले गये और बैठकर फ़रमाया कि बेटी, तुम मेरे पास ख़िदमतगार लेने गयी थीं। प्यारी बेटी, ख़िदमतगार तो दुनिया में आराम देता है। मैं तुमको एक ऐसा वज़ीफ़ा बतलाता हूँ जो आख़िरत में आराम और नफ़ा पहुँचाये, जब सोने लगो, तैंतीस बार सुबहान अल्लाह और तैंतीस बार अलहम्दो लिल्लाह और चौंतीस बार अल्लाहो अकबर पढ़ लिया करो। **ताबेदार बेटी और ताबेदार दामाद ने अपने सच्चे ग़मग़ुवार का फ़रमान आलीशान दिल व जान से क़बूल किया और कभी ज़िन्दगी भर इस वज़ीफ़े को न छोड़ा** और ख़िदमतगार मिलने न मिलने का दिल में ख़याल भी न लाये। सुबहान अल्लाह! क्या ख़ूब तालीम है शहनशाहे दो आलम की कि हर जगह आख़िरत को दुनिया पर मुक़द्दम रखना सिखलाते थे। हालाँकि ख़िदमतगार देकर उनको तकलीफ़ से बचाने की क़ुदरत भी थी। मगर इस दुनिया के दुःख-दर्द की सहार करना ही उनके लिए आख़िरत की ऐश और भलाई का अमल अख़्तियार फ़रमाया।

मेरा दिल और मेरी जान मदीने वाले,
तेरे ऊपर हूँ क़ुर्बान मदीने वाले।

कुल के मतलूब का महबूब है मक़बूल है तू,
अल्लाह-अल्लाह तेरी शान मदीने वाले।

काम आती है तेरी ज़ात हर दुखिया के,
मेरी मुश्किल भी हो आसान मदीने वाले।

तेरा दर छोड़ के जाऊँ तो कहाँ जाऊँ,
मेरे आक़ा मेरे सुल्तान मदीने वाले।

क्या ख़बर मेरे गुनाहों का क्या हो अन्जाम,
उड़ रहे हैं मेरे औसान मदीने वाले।

तेरी ही मुहब्बत में मैं दुनिया से उठ जाऊँ,
यही आशिक़ की है पहचान मदीने वाले।

मुसलमान भाइयो और बहिनो! हुज़ूर (स०) की ताबेदारी करो। ग़ुरबत और कुल्फ़त में सब करो। हज़रत फात्मा (रज़ी०) के हालात शरीफ़ा से सबक़ सीखो। ख़ुदा को राज़ी करो और जन्नत हासिल करो। जो वज़ीफ़ा बयान हुआ है, तस्बीहे फ़ात्मा (रज़ी०) के नाम से मशहूर है। बहुत ही आलीशान वज़ीफ़ा है। पाँचों नमाज़ों के बाद भी ख़ुशक़िस्मत बन्दे पढ़ते हैं और सोते वक़्त भी पढ़ा जाता है। दिन भर की थकन भी उतर जाती है और सवाब भी बेशुमार मिल जाता है।

बीवी के हक़ूक़ जो मर्द के ज़िम्मे हैं

जानना चाहिए कि निकाह की वजह से जो दुनिया व आख़िरत के फ़ायदे हासिल होते हैं, वह मियाँ-बीवी में मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ हो तब हासिल होते हैं, मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ का ज़रिया यह है कि एक-दूसरे के हक़ूक़ मालूम हों और उनको अदा भी करते हों। इसलिए बतौर नमूना कुछ हक़ूक़ लिखे जाते हैं ताकि मालूम करके अमल किया जाये।

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने, ऐ ईमान वालो! तुम अपने को और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं और रसूले करीम (स०) फ़रमाते हैं कि—

हर एक तुममें अपने मातहत पर अख़्तियार रखता है। इसलिए हर एक से पूछा जायेगा कि तुम्हारे सुपुर्द जो चीज़ें थीं उनमें तुमने क्या किया। जैसा कि

औरत के ज़िम्मे मर्द का घर होता है और उसके बच्चों पर भी अख़्तियार होता है और उससे भी घरवालों के बारे में पूछगछ होगी कि तमने अपने घर वालों के हक़ अदा किये हैं या नहीं?

क़ुरआन व हदीस बतला रहे हैं कि मर्दों और औरतों के ज़िम्मे कुछ हक़ूक़ हैं जिनके बारे में उनसे पूछ होगी तो हर मर्द और औरत के लिए यह बात ज़रूरी हुई कि अपने को और अपनी औलाद को दोज़ख़ की आग से बचाये और उनको शरह के ख़िलाफ़ कामों से रोकने की कोशिश करें। अब हम अपनी हालत में ग़ौर करें कि इन हुक्मों के साथ क्या बर्ताव कर रहे हैं और इनको अल्लाह व रसूल के हुक्मों के मुवाफ़िक़ अदा करते हैं या नहीं? तो ग़ौर करने से मालूम होता है कि न तो मर्द ही उन हक़ूक़ को अदा करते हैं जो उन के ज़िम्मे हैं और न औरतें अदा करती हैं। औरतें बस इतना समझती हैं कि मर्दों को खिला दिया, पिला दिया और अगर कोई बच्चा हुआ तो उसको हगा दिया, मुता दिया और उनको यह ख़बर नहीं होती कि हमारी आमदनी कितनी है और कहाँ ख़र्च करने की ज़रूरत है और कितना ख़र्च करना चाहिए। न ख़र्च करने का ख़याल न औलाद को दीन सिखाने का ख़याल। इसी तरह मर्दों को इस का ख़याल नहीं होता कि दुनिया के हक़ूक़ के साथ औरतों के दीनी हक़ूक़ भी हमारे ज़िम्मे हैं। घर में आ कर यह तो पूछते हैं कि खाना तैयार हुआ है या नहीं। मगर यह कभी नहीं पूछते कि तुमने नमाज़ भी पढ़ी है या नहीं। मगर जब मर्द ही बेनमाज़ है तो औरतों को नमाज़ी कैसे बनायें और बाज़ मर्द ऐसे हैं कि औरतों के दुनियावी हक़ूक़ भी अदा नहीं करते। बीवी से बिल्कुल बेफ़िक्र रहते हैं। यहाँ तक कि घर में भी नहीं सोते और बीवी के इस हक़ूक़ से ग़ाफ़िल हैं। हालांकि रात को उसके पास घर में सोना भी उस का शरेई हक़ है। बाज़ मर्द औरतों से बोलते भी नहीं। बाज़ इनमें से ऐसे भी हैं कि जो बुज़ुर्ग और दीनदार भी कहलाते हैं और किसी बुज़ुर्ग से मुरीद भी हैं। नमाज़ रोज़े के और ज़िक्र के पाबन्द हैं। अपने नज़दीक जन्नत ख़रीद रहे हैं, मगर बीवी के हक़ूक़ से ग़ाफ़िल हैं। याद रखो, बीवी का यह भी हक़ है कि एक वक़्त में उससे बातचीत भी की जाये और उसकी तकलीफ़ की और आराम की बातें सुनी जावें और दिल्लगी की बातों से उसको ख़ुश किया जावे। मगर इस हक़ से दुनियादार और दीनदार सब ही ग़ाफ़िल हैं। बाज़ मर्द बात-बात में औरतों की ख़ताएँ निकालते हैं और इसी वजह से बोलना छोड़ देते हैं, बल्कि घर में सोना भी छोड़ दिया जाता है। क्या आप यह चाहते हैं कि बीवी पर भी ऐसा रोब जमायें जैसा कि नौकरों पर जमाया करते हैं। यह निहायत संगदिली है।

भला ग़ौर तो कीजिए, क्या आप अपने दोस्तों पर ऐसा रौब जमा सकते हैं जैसा कि नौकरों पर जमाया जाता है? हरग़िज नहीं और अगर आप ऐसा करेंगे तो सारे दोस्त आपको छोड़ कर अलग हो जायेंगे। दोस्तों के साथ नौकरों का-सा बर्ताव कोई अक़्लमन्द आदमी नहीं कर सकता।

देखो, तजुर्बे की बात है कि जिस वक़्त आदमी पर कोई मुसीबत आती है तो सब यार-दोस्त अलग हो जाते हैं और माँ-बाप तक भी आदमी को छोड़ देते हैं। मगर बीवी हर हालत में मर्द का साथ देती है और बीमारी में जैसी राहत बीवी से पहुँचती है, किसी भाईबन्द से भी नहीं पहुँचती। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि बीवी के बराबर दुनिया में मर्द का कोई दोस्त नहीं। फिर क्या यह सितम ही नहीं है कि मर्द उनको नौकरों के बराबर करना चाहते हैं और क्या यह ज़ुल्म नहीं है कि इनको पाँव का जूता समझा जाये।

साहिबो ! उनको तो अपने घर का चिराग़ और आबादी का ज़रिया समझना चाहिए। क्या यह ग़ज़ब ही नहीं है कि अगर बीवी किसी वक़्त बातचीत में बतौर नाज़ कोई बात कह दे तो उसको यह सज़ा दी जाती है कि बातचीत और मिलना-मिलाना सब छोड़ दिया जाता है और गाली-गलौच से पेश आते हैं और उसको घर से धक्के दिये जाते हैं और बेकस व मज़लूम को घर से बाहर निकाल कर कह देते हैं कि चली जा जहाँ तेरा दिल चाहे और वह बेकस सिवाय रोने के कुछ नहीं कर सकती। हालांकि उसका एक हक़ यह भी है कि उसके साथ हँसी और दिल्लगी और उसके नाज़ नख़रे को गवारा किया जाये और उसकी बदतमीज़ी को बर्दाश्त किया जाये। इन हक़ूक़ को मर्दों ने बिल्कुल ही छोड़ दिया है। यूँ चाहते हैं कि औरतें बाँदियों की तरह ताबेदार होकर रहें और हमारी किसी बात का उलट जवाब न दें। बाज़ मर्द यह चाहते हैं कि औरतें हमारी तरह तमीज़दार और सलीक़ेमन्द होकर रहें और जब किसी औरत से कोई बात बदतमीज़ी की हो जाती है तो उस पर सख़्त सज़ा दी जाती है। याद रखो, एक हक़ औरतों का यह भी है कि उन की बदतमीज़ी को बर्दाश्त किया जाये। हदीस शरीफ़ में है कि औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है। इसलिए उस की आदतों में टेढ़ापन लाज़मी है। अगर उसको सीधा करना चाहोगे तो टूट जायेगी। बस, इससे नफ़ा उठाना है तो टेढ़ेपन ही के साथ नफ़ा उठाते रहो और मुनासिब भी यही है कि औरतों में थोड़ी-सी बदतमीज़ी भी हो। क्योंकि ज़्यादातर बदतमीज़ वही होती हैं जो सीधी-सादी होती हैं और ऐसी औरतें पारसा होती हैं और जो बड़ी तमीज़दार और सलीक़ामन्द होती हैं, वह बहुत चालाक होती हैं। शर्म व हया भी उनमें कम होती है और जो सीधी-सादी हैं वह अपने मर्द की ताबेदार और जाँनिसार होती

हैं। यहाँ तक देखा गया है कि वह खुद बीमार हैं। उठने बैठने की ताक़त नहीं, मगर उसी हालत में अगर कहीं मर्द बीमार हो गया तो अपनी बीमारी को भूल जाती हैं। अब उनको किसी तरह चैन नहीं पड़ती। हर वक़्त मर्द की ख़िदमत में लगी रहती हैं। और यह तो रोज़मर्रा की बात है कि औरतें खुद खाना आख़ीर में खाती हैं और सबसे पहले मर्दों को खिलाती हैं। और बाज़ दफ़ा आख़ीर में कोई मेहमान आ गया तो खुद भूखी रहेंगी और वह खाना मेहमान के वास्ते भेज देंगी। अगर उसके खाने के बाद कुछ बच गया तो खा लिया वर्ना फ़ाक़ा कर लिया। अगर मर्द कभी आधी रात को सफ़र से आ गया तो उसी वक़्त अपना आराम छोड़कर उसके लिए खाना पकायेंगी और उसकी ख़िदमत में लग जायेंगी। तो इस तरह की औरतें जो मर्द पर मर मिटें ज़्यादातर वही होती हैं जो थोड़ी बदतमीज़ भी हों। तमीज़दारों में यह बातें नहीं होती। अगर आप यह कहें कि औरतों की बदतमीज़ी से दिल तो दुखता है, तकलीफ़ होती है तो इसका ईलाज यह भी तो हो सकता है कि उनको दीन की किताबें पढ़ाओ या सुनाओ। इल्मेदीन से उनकी आदतें दरुस्त हो जायेंगी। खुदा का ख़ौफ़ दिल में पैदा होगा। मर्द के हक़ूक़ मालूम होंगे। बाक़ी यह उम्मीद मत रखो कि वह बिल्कुल तुम जैसी हो जायेंगी। क्योंकि उनमें जो पैदाइशी कजी है वह नहीं जा सकती। इसलिए मर्द को इतना सख़्त मिज़ाज न होना चाहिए कि बीवी की ज़रा-ज़रा सी बदतमीज़ी पर गुस्सा किया करे। बाज़ मर्द ऐसे ज़ालिम होते हैं कि आप तो खूब बने-ठने रहते हैं और बीवी को भंगियों की तरह रखते हैं। न उनके कपड़ों का ख़याल और न खाने के लिए रोटी और दाल बल्कि एक-एक पैसे से उनको तंग रखते हैं। यह बड़ी हक़ तल्फ़ी और ज़ुल्म है। बाज़ मर्द ऐसी गन्दी तबियत के होते हैं कि बदकार औरतों में अपना मुँह काला करते हैं और उनके घरों में हूरों की मिस्ल बीवियाँ मौजूद होती हैं, उनकी तरफ़ रुख़ भी नहीं करते। मगर हिन्दुस्तान की औरतें साबिर व शाकिर हैं कि वह रोने-धोने के सिवा और कुछ नहीं करतीं। किसी के सामने अपने मर्द का ऐब नहीं खोलतीं। ग़रज कि इन ख़ूबियों का बदला यह है कि बीवियों पर रहम करो और उनके हक़ूक़ ज़ाए करके दोज़ख़ न ख़रीदो। सबक़ सीखने के लिए तीन हिकायतें लिखी जाती हैं।

हिकायतें

हिकायत 1— एक बज़ुर्ग थे। उनकी बीवी बहुत बदमिज़ाज थी। एक दिन उन्होंने बीवी से कहा कि तू बड़ी बदक़िस्मत है। तुझको मेरे पास रहते हुए इतना ज़माना गुज़र गया मगर तेरी बदमिज़ाजी न गयी। बीवी ने कहा—मैं बदक़िस्मत क्यों होती, मुझ से ज़्यादा कौन खुशक़िस्मत होगी कि मुझको तुम जैसा मर्द मिला।

बदक़िस्मत तो तुम हो कि तुम को बदमिज़ाज बीवी मिली। यह जवाब सुनकर उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि तुम जीती और मैं हारा। अल्लाह के नेक बन्दों ने औरतों के सताने पर हमेशा सब्र किया है। क्योंकि बीवी की बदतमीज़ी को बर्दाश्त करने से बड़ा सवाब मिलता है। दर्जे बुलन्द होते हैं। अल्लाह व रसूल की रज़ा हासिल होती है।

हिकायत 2— एक तहसीलदार बड़े दीनदार आदमी थे। उनकी बीवी कम अक़्ल और बड़ी ख़र्चीली थी। मगर तहसीलदार की यह हालत थी कि अकसर उसकी बातें करते हुए कहा करते कि मेरी पागल की यह बात है। आज मेरी पागल ने यह ग़लती-की। आज मेरी पागल ने यह नुक़सान किया। ग़रज़ 'मेरी पागल' कह कर नाम लेते थे। किसी ने कहा कि तहसीलदार साहब फिर भी आप उनको चाहते हैं। कहने लगे कि भाई वह शरीफ़ बहुत है और शरीफ़ औरतों में जहाँ बहुत-सी बदतमीज़ी और तकलीफ़ देने की बातें होती हैं, वहाँ एक कमाल उनमें ऐसा है कि हज़ारों तमीज़दारियाँ उन पर क़ुर्बान हैं। ऐसी शरीफ़ हैं कि अगर उनको एक कोने में बिठला कर कोई सफ़र को जावे और दस बरस में आवे तो उसी कोने में इज़्ज़त-आबरू के साथ उनको बैठा पावेगा। बस इसी कमाल की वजह से मैं अपनी पागल को चाहता हूँ। वाक़ई शरीफ़ औरतों को अपने घर के कोने के सिवा दुनिया की कुछ ख़बर नहीं होनी चाहिए। उन पर कुछ भी गुज़र जाये मगर वह अपने कोने से अलग नहीं होती। सुबहान अल्लाह! कैसी शान का कमाल है।

अल्लाहतआला इस कमाल की तारीफ़ यूँ फ़रमाते हैं

الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ۔

यानी पाकदामन हैं और भोली-भाली, सीधी-सादी हैं। ईमान वाली हैं। चालाक नहीं हैं।

वाक़ई नक़्शा खींच दिया और यह ख़ूबी औरतों में पर्दे की वजह से होती है कि उनको अपनी चारदीवारी के सिवा दुनिया की कुछ ख़बर नहीं होती। जब अल्लाहतआला औरतों के भोले और सीधेपन की और बेख़बरी की तारीफ़ फ़रमाते हैं तो समझ लो इसी में ख़ैर है। और हज़ारों ख़बरदारियाँ ऐसी बेख़बरी पर क़ुर्बान हैं कि शौहर के घर से अलग होना उनको ग़वारा नहीं होता तो जहाँ उनमें बदतमीज़ी वग़ैरा है, वहाँ यह ख़ूबियाँ भी तो हैं कि तुम्हारी ख़िदमत करती हैं। जिसने सौ दफ़ा आराम पहुँचाया हो, उससे अगर कभी तकलीफ़ भी पहुँच

जाये तो उसको ज़ुबान पर न लाना चाहिए। बल्कि उनकी ख़िदमत पर नज़र करके उनकी बदतमीज़ियों को बर्दाश्त किया जाये।

हिकायत 3— एक शख़्स हज़रत उमर (रज़ी०) के मकान पर अपनी बीवी की शिकायत लेकर आये। उस वक़्त आपकी बीवी साहिबा आपको बुरा-भला कह रही थीं। वो शख़्स लड़ने की आवाज़ सुनकर लौटने लगे कि हज़रत उमर बाहर तशरीफ़ ले आये। आपने उन से दरियाफ़्त किया कि तुम क्यों आये थे? उन्होंने अपनी बीवी की बदज़ुबानी ज़ाहिर की और कहा— हज़रत, आप के साथ भी यही मामला है। मगर आपने उलट कोई जवाब नहीं दिया। आपने फ़रमाया कि मेरी बीवी के मुझपर बहुत से हक़ हैं इसलिए मुझे उनकी सब बातें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं। एक हक़ यह है कि मुझको दोज़ख़ से बचाती हैं और मैं बुरे काम से बचता हूँ। दूसरा हक़ यह है कि वह मेरे घर की चौकीदार हैं। इस घर की हिफ़ाज़त करती हैं। तीसरा हक़ यह है कि मेरे बच्चों को पालती हैं और पेशाब-पाख़ाना साफ़ करती हैं। चौथा हक़ यह है कि मुझको खाना पका कर खिलाती हैं। पाँचवाँ हक़ यह है कि मेरे कपड़े धो देती हैं। और भी बहुत-सी ख़िदमतें करती रहती हैं। फिर अगर वह कभी मुझ पर ख़फ़ा भी हो जायें तो इन्साफ़ की बात यही है कि मैं उन की ख़फ़गी को बर्दाश्त करूँ और उलट कर जवाब न दूँ।

आपकी यह नसीहत भरी बातें सुनकर वह शख़्स कहने लगे कि हज़रत मैं अब समझा हूँ। वाक़ई बीवी के बहुत से हक़ हैं। मै इन्शाअल्लाहतआला आप की तरह अमल करूँगा और वह अपने घर आये और बीवी के साथ बड़ी नरमी और ख़न्दा पेशानी से बर्ताव करने लगे और बीवी ने लड़ना-झगड़ना सब छोड़ दिया। दोनों मुहब्बत और प्यार से रहने लगे।

बाज़ लोग दूसरा निकाह कर लेते हैं। हालांकि दूसरा निकाह इस ज़माने में अच्छा नहीं। क्योंकि अल्लाहतआला का हुक्म है कि अगर तुम कई बीवियों में इन्साफ़ न कर सको तो एक ही बीवी काफ़ी है। और आजकल यह बात ज़ाहिर है कि इन्साफ़ हो नहीं सकता और जब अल्लाहतआला के हुक्म के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ न किया तो दुनिया और आख़िरत की तबाही लाज़मी है।

रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिस मर्द के दो बीवियाँ हों और वह उनके लेने-देने में और खाने-पीने में और सोने वग़ैरा मे बराबरी न करेगा तो वह मुझसे गया और मैं उससे गया और वह मेरी शिफ़ाअत से महरूम रहेगा।

या अल्लाह तेरी पनाह ! जिस काम से तेरा रसूल नाराज़ हो सिवाय दोज़ख़ के उस का ठिकाना कहाँ है ? और फ़रमाते हैं नबी-ए-करीम (स०) कि तुम सबमें वह आदमी अच्छा है जो अपनी बीवी के साथ अच्छा बर्ताव करे।

ऐ लोगों देखो ! मैं अपनी बीवियों के साथ तुम सबसे ज़्यादा अच्छा बर्ताव करता हूँ।

बाज़ मर्द बीवी का मेहर जिसका अदा करना फ़र्ज़ है, अदा नहीं करते, बल्कि यह चाहते हैं कि किसी तरीक़े से देना न पड़े और बीवी छोड़ दें। यह भी हक़तल्फ़ी है। अलबत्ता अगर बीवी अपनी ख़ुशी से माफ़ कर दे तो उसका एहसान है। बाज़ मर्द ख़ुदा से न डरने वाले यह ज़ुल्म करते हैं कि बीवी को दीन की बातों पर बुरा-भला कहते हैं कि तू बड़ी पर्दे वाली मुल्लानी और नमाज़न हो गयी है। ऐसे अलफ़ाज़ ज़ुबान से निकालने सख़्त गुनाह हैं। तौबा करना चाहिए। बाज़ मर्द ऐसे ज़ालिम होते हैं कि ख़ुदा ने सब कुछ दे रखा है, मगर बीवी को ख़र्च से तंग रखते हैं। एक-एक पैसे से तरसाते हैं। बेचारी ऐसी हालत में बहुत परेशान होती है। यह भी ज़ुल्म है। बाज़ मर्द शरीयत के हुक्म के मुवाफ़िक़ बीवी को रहने का मकान नहीं देते। यह भी ज़ुल्म है। याद रखो, रोटी, कपड़ा, रहने का मकान बीवी को देना वाजिब है। बाज़ मर्द माँ-बाप वग़ैरा के कहने से अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ शादी कर लेते हैं। फिर बीवी को तकलीफ़ देते हैं और कहते हैं कि हमको पसन्द नहीं। यह भी बड़ा ज़ुल्म है। अच्छी बात यह है कि जहाँ अपनी मर्ज़ी न हो वहाँ हरगिज़ शादी न करें। वर्ना दोनो के लिए मुसीबत ही मुसीबत हैं। ऐसे ही माँ-बाप वग़ैरा को चाहिए कि जहाँ लड़के और लड़की की मर्ज़ी न हो वहाँ निकाह न करें जबकि यह मालूम हो जाये कि लड़के की मर्ज़ी नहीं है। बाज़ मर्द बीवी को दीन की बातें नहीं बतलाते। हालाँकि यह उसका दीनी हक़ है।

हुज़ूरे अकरम (स०) इरशाद फ़रमाते हैं—

जो शख़्स अपनी बीवी को एक मसला भी बतलाता है तो उसको अस्सी बरस की इबादत का सवाब मिलता है। इसलिए हर मर्द को ज़रूरी है कि अपनी बीवी को पाकी-नापाकी, वज़ू और ग़ुस्ल के और नमाज़, रोज़े वग़ैरा के सब मसले बतलाये और सवाब हासिल करे, और अल्लाहतआला के अज़ाब से बचे। इसी तरह जो बीवी दीन की बातें और मसले सीखेगी उसको भी ऐसा ही सवाब मिलेगा और जो न सीखेगी दोज़ख़ में जलेगी।

नबी-ए-करीम (स०) फ़रमाते हैं कि—

सबसे बड़ी सख़ावत और ख़ैरात यह है कि मुसलमान दीन के मसले सीखे और फिर अपने भाई मुसलमान को सिखा दे। बस हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है कि दीन के मसले, जो बहुत ज़रूरी हैं, जिनकी हर वक़्त ज़रूरत पड़ती है खुद भी सीखें और अपनी बीवी-बच्चों वग़ैरा को भी सिखला दें।

इल्मेदीन सिखलाये ज़न को बिल्ज़रूर,
शिर्क और बिदअत से रखे उस को दूर।

मेहर व उल्फ़त में रखो तुम ऐतदाल,
रोटी कपड़ा उसको दो तुम हाल-हाल।

एक थे साहब वली और पारसा,
उनसे एक दिन एक ने जाकर कहा।

मर्दो ज़न में क़ायदा क्या चाहिए,
किस तरह से मिल के रहना चाहिए।

तब कहा उस नेक ने ऐ खुश ख़िसाल,
मर्दो ज़न में चाहिए उल्फ़त कमाल।

ज़न से खेले और हँसे यूँ बावफ़ा,
खेलते हँसते थे जैसे मुस्तफ़ा।

इस तरह से मिल के रह तू ज़न के साथ,
जिस तरह से रहती है जाँ तन के साथ।

बीवी को ख़ुश करना और तकलीफ़ न देना

रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जब कोई मर्द अपनी बीवी का बोसा लेता है तो उसको हर बोसे के बदले हज़ार बरस की इबादत का सवाब मिलता है और जब गले लगाता है तो दो हज़ार बरस की इबादत का सवाब मिलता है और जब सोहबत करता है तो चार हज़ार बरस की इबादत का सवाब मिलता है। (अनीसुलवाएज़ीन)

इरशाद फ़रमाया रहमते आलम (स०) ने कि—

ऐ लोगो! तुम औरतों के बारे में अल्लाह से डरो और उनको नाहक़ मत सताओ और उन के साथ अच्छी आदतों से ज़िन्दगी बसर करो। अगर तुमने उनको नाहक़ तकलीफ़ दी और उन पर ज़ुल्म किया तो अल्लाहतआला तुम से

बदला लेगा। इसलिए मर्द को चाहिए कि अपनी बीवी को नाहक़ तकलीफ़ न दे। उस पर रहम करे। उस के साथ हँसी-मज़ाक़ और दिल्लगी करने में नफ़िल नमाज़ों के पढ़ने का सवाब मिलता है। मगर हँसी-मज़ाक़ ऐसा करे कि उसका दिमाग़ ख़राब न हो और आदतें न बिगड़ें और क़ुदरत होते हुए उसको ख़र्च से तंग न करे।

यह लिखा क़ुरआन में है सरबसर,
बे सबब औरत को आज़ुर्दा न कर।

जो करे नाहक़ किसी ज़न पर सितम,
उस को हासिल हश्र में हो रंज व ग़म।

मुस्तफ़ा ने इस तरह से है कहा,
बे ख़ता हरगिज़ न हो ज़न पर ख़फ़ा।

ग़र ख़ता उसकी न हो तो मत सता,
जान कर दोज़ख़ में तू हरगिज़ न जा।

शरीर औरतों को सज़ा देने का हुक्म

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

और जो औरतें ऐसी हों कि तुमको उनकी बद-दिमाग़ी का अन्देशा हो यानी बदकारी का, तो पहले ज़ुबानी समझा दो। अगर इस पर भी न मानें तो उनको लेटने की जगहों में अकेला छोड़ दो। अगर फिर भी न मानें तो उनको मारो। अगर वह ताबेदारी करने लगें तो उन पर बहाना मत ढूँढो। (पाँचवा पारा, सूरतुलनिसा)

फ़ायदा— हदीस शरीफ़ में मारने की यह हद है कि हड्डी न टूटे। अगर फिर भी दुरुस्त न हो और जब निबाह होने की कोई सूरत न हो तो तलाक़ दे देना चाहिए। यह न करें कि न तलाक़ दें और न रखें, कि यह भी ज़ुल्म है।

नबी-ए-करीम (स०) फ़रमाते हैं कि—

ऐसे फ़ित्ने के वक़्त जब कि हर तरफ़ बेदीनी हो, मैं अपनी उम्मत के लिए मुजर्रिद अकेला रहना यानी बिना बीवी के रहने को और ताल्लुक़ात छोड़कर पहाड़ों की चोटियों पर रहने को पसन्द करता हूँ।

हज़रत अबदुल्ला इब्ने मसूद (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि आदमी की हलाकत उसकी बीवी और माँ-बाप और औलाद के हाथों होगी, कि यह लोग उस शख़्स को ग़रीबी और तंगदस्ती की वजह से तंग और शर्मिन्दा करेंगे और ऐसी बातों को पसन्द करेंगे और कहेंगे जिनको यह न कर सकेगा और अगर उनके कहने में आकर उन बुरे कामों में पड़ गया तो उसका दीन बर्बाद हो जायेगा। जब दीन गया तो हलाकत यानी खुदा की पकड़ मौजूद है।

फ़ायदा— इन हदीसों से मालूम हुआ कि जो शख़्स बीवी-बच्चों के हक़ूक़ हलाल आमदनी से पूरे अदा न कर सके, उसके लिए बेहतर और अच्छाई उसी में है कि निकाह हरगिज़ न करे। एक तरफ़ होकर अल्लाह की याद करे।

एक ने पूछा कि या हज़रत नबी,
मर्द व औरत में किस तरह हो दुश्मनी।

दीजिए बतला मुझे यह साफ़-साफ़,
किसलिए हो मर्द से ज़न बरख़िलाफ़।

सुन के बोले यह नबी ऐ ज़ी शऊर,
इस तरह से यह अम्र पाता है ज़हूर।

बदशकल हो बेवफ़ा हो बदनज़र,
खुद पसन्द और खुर्दबीं हो जो बशर।

पाँच बातों से हो जिस में कोई बात,
ज़न रहे उस मर्द से बे इल्तफ़ात।

और जिस औरत में हों यह फ़ेल चार,
मर्द राज़ी हो न उससे ज़ीनहार।

दौद बाज़ी की जो रखे दिल में चाह
ख़र्च बेहूदा करे जो खुवामख़ाह।

उज्र बे मौक़ा करे जो माह रू,
हुज्जत व तकरार की हो जिस में ख़ू।

बस इन्हीं बातों से पड़ता है फ़तूर,
रन्जिश व तकरार पाता है ज़हूर।

मर्दों ज़न में महरोउल्फ़त हो अगर,
बादे मुर्दन पायें वह जन्नत में घर।

ज़न से देखे मर्द जो रन्ज व अज़ाब,
है नबी अय्यूब का उस को सवाब।

और जिस ज़न को न होवे रंज व ग़म,
उस पे है अल्लाहो अकबर का करम।

शौहर के हक़ूक़ जो बीवी के ज़िम्मे हैं

अल्लाहतआला ने फ़रमाया है कि मर्द दो वजहों से औरतों पर हाकिम हैं।

एक इस वजह से कि अल्लाहतआला ने एक को यानी मर्दों को दूसरे पर यानी औरतों पर बड़ाई बख़्शी है और दूसरे इस वजह से कि मर्दों ने उन पर माल ख़र्च किया है यानी मेहर और नान व नुफ़क़े का ज़िम्मा लिया है। बस जो नेक-बीवियाँ हैं वे मर्दों की इस बड़ाई का लिहाज़ करके उनके सामने उनकी ताबेदारी करती हैं और उनके पीछे भी अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करती हैं। इस वजह से कि अल्लाहतआला ने उनको हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है। (सूरतुलनिसां पाँचवाँ पारा)

फ़ायदा— देखो बीवियो ! अल्लाहतआला ने मर्दों को बड़ी बड़ाई दी है। अपने मर्द का ख़ुश रखना बड़ी इबादत है और उसको नाराज़ करना बड़ा गुनाह है। हमारे आक़ा महबूबे ख़ुदा (स०) ने फ़रमाया कि— सबसे अच्छा ख़ज़ाना दुनिया में नेक औरत है कि उसका शौहर उसके देखने से ख़ुश हो जाये और जब उसका शौहर उसको कोई काम बतलाये तो उसका कहना माने और उसके पीछे भी अपनी इज़्ज़त आबरू को बचाये।

ऐ बहिन यह याद रख हर आन में,
हक़ तआला ने कहा क़ुरआन में।

औरतों पर मर्द को हाकिम किया,
मर्द का औरत को है ख़ादिम किया।

जो औरत अताअत में शौहर की हो,
सुर्ख़रू जन्नत में हो वो नेक ख़ू।

कह गये है इस तरह से मुस्तफ़ा,
ज़न के ऊपर मर्द है फरमाँ खां।

जो रखे फ़रमान पर शौहर के सर,
ऐसी औरत को मिले जन्नत में घर।

औरतों को जन्नत की ख़ुशख़बरी

रसूले खुदा (स०) ने फ़रमाया कि—

जो औरत पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ती रहे और रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखती रहे और अपने बदन को ग़ैर मर्दों से छुपाती रहे और अपने शौहर की ताबेदारी करती रहे और उसको ख़ुश करके मरे तो वह जन्नत में जायेगी। बस जो बीवी दुनिया में यह चार काम करके मरेगी, उसके लिए आख़िरत में जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और फ़रिश्ते उससे कहेंगे— ऐ ख़ुशनसीब बीवी! जिस दरवाज़े से तेरा दिल चाहे जन्नत में चली जा।

मुस्तफ़ा एक दिन कहीं को थे गये,
बकरियों ने उनको वाँ सजदे किये।

वह सहाबी जो कि हाज़िर थे वहाँ,
अर्ज़ की ऐ बादशाहे इन्सो जाँ।

जबकि हैवाँ आपको सजदा करें,
किस तरह ख़ामोश हम बैठे रहें।

दीजिए हमको इजाज़त ऐ रसूल,
ता करें इस फ़ैज़ को हम भी हसूल।

मुस्तफ़ा ने सुनकर फ़रमाया यह तब,
किस को सजदा है मुनासिब ग़ैरे रब।

ग़र खुदा यह हुक्म दे देता मुझे,
है रवा हर कस तुझे सजदा करे।

मैं यह देता औरतों को हुक्मे आम,
शौहरों को तुम करो सजदा तमाम।

बीवियों ! देखो तुम ही इन्साफ़ कर,
है बज़ुर्गी शौहरों की किस क़दर।

जो करे शौहर की ख़िदमत ऐ हबीब,
बादे मुर्दन उस को हो जन्नत नसीब।

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का एक क़िस्सा

एक दफ़ा हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) घबरायी हुई हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आयीं। हुज़ूर ने फ़रमाया, बेटी क्यों घबरायी हो? अर्ज़ की— अब्बा जी, रात बातों ही बातों में मेरी ज़ुबान से कुछ ऐसी बातें निकल गयीं कि मेरे शौहर अली (अ०) नाराज़ हो गये। उनकी नाराज़गी से मुझे अल्लाह का ख़ौफ़ मालूम हुआ कि शौहर की नाराज़गी अल्लाह की नाराज़गी है। फिर मैंने उनसे माफ़ी माँगी। वह मेरी खुशामद देख कर हँस पड़े और मुझसे राज़ी हो गये। हुज़ूर ने फ़रमाया— ऐ बेटी! उस खुदा की क़सम जिसने मुझको सच्चा रसूल बना कर भेजा है। अगर तुम्हारी मौत इस हाल में आयी कि तुम्हारे शौहर अली (अ०) तुमसे नाराज़ होते तो मैं तुम्हारे जनाज़े पर नमाज़ न पढ़ता।

ऐ मेरी नूरे-चश्म! अगर कोई औरत मरियम (अ०) की-सी इबादत करे और उसका शौहर उससे नाराज़ हो तो अल्लाहतआला ऐसी औरत की इबादत क़बूल नहीं करता और अल्लाहतआला उस औरत से खुश होता है जो अपने मर्द को खुश रखे और ग़ैर मर्दों से अपने को छुपाये।

फ़ायदा— सुबहान अल्लाह! रहमते आलम आप की शाने अज़ीम कि हम ग़ुलामों को रहने-सहने और बर्ताव करने के भी तरीक़े बतला गये। मियाँ-बीवी के इख़तलाफ और झगड़े मिटाने के क़ायदे भी सिखा गये। उजड़े हुए घर बसा गये।

बीबियों! हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के हाल से सबक़ हासिल करो।
बीबी फ़ात्मा की जब शादी हुई,
तब नबी ने यूँ नसीहत उनको की।

मत अली का दिल दुखाना फ़ात्मा,
रब करेगा नेक तेरा ख़ातिमा।

काम वह करना जो हो उन की रज़ा,
और दिलासा दिलबरी करना सदा।

गर करोगी उन की तुम फरमाँबरी,
आख़िरत में तुम को होगी बेहतरी।

बीबियो ! तुम को भी लाज़िम है यही,
हुक्मे शौहर से न हो बाहर कभी।

दीनदार औरत अपने मर्द को बादशाह बना देती है

मोहसिने आज़म हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जो औरत सात रोज़ तक अपने मर्द की दी हुई तकलीफ़ बर्दाश्त करेगी तो उसको सात सौ बरस की इबादत करने का सवाब मिलता है और दीनदार औरत अपने मर्द को बादशाह बना देती है कि बेजा ख़र्च नहीं करती। हर हालत में साबिर व शाकिर रहती है। जिसकी वजह से मर्द परेशान नहीं होता। दीनदार बीवी का मिल जाना अल्लाहतआला का एक तोहफ़ा है और दुनिया की चीज़ों में से अच्छी चीज़ दीनदार और फरमाबर्दार बीवी का मिलना है।

जब अली (अ०) ने शादी की कुल्सूम की,
वक़्ते रुख़सत बात यह उससे कही।

जा के शौहर के यहाँ करना वे काम,
जिससे हो दुनिया में तेरा नेक नाम।

वह कहे जिस राह तू उसी राह चल,
उस के फरमाँ में न लाना कुछ ख़लल।

हुक़्मे शौहर जो बजा लायेगी तू,
मुस्तहक़ फिरदौस की होवेगी तू।

मियाँ-बीवी की लड़ाई से शैतान ख़ुश होता है

रसूल अल्लाह (स०) से दरयाफ़्त किया गया कि या रसूल अल्लाह ! सबसे अच्छी औरत दुनिया में कौन है ?

इरशाद फ़रमाया—

वह औरत है कि जब उसका शौहर उसकी तरफ़ देखे तो उसको खुश कर दे और उसका कहा माने और जान व माल में कोई बात उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न करे और बग़ैर उसकी इजाज़त के घर से बाहर न जावे।

और इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

शैतान हमेशा रात को समन्दर के ऊपर अपना तख़्त बिछा कर उस पर बैठता है और अपने सिपाहियों से पूछता है कि आज तुमने आदमियों से खुदा

की कौन-कौन-सी नाफ़रमानी करवायी। जवाब में कोई कहता है कि मैंने लोगों की नमाज़ें क़ज़ा करवा दीं। कोई कहता है कि मैंने ख़ून करवा दिया। कोई कहता है मैंने शराब पिलवायी, ग़रज़ अपनी-अपनी कार्यवाही और शरारते बयान करते हैं, तो शैतान ख़फ़ा हो कर कहता है कि दूर हो जाओ! तुमने आदमियों को कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचाया। फिर एक और शैतान कहता है कि मैंने मर्द और बीवी में लड़ाई करा दी, यह बात सुनकर शैतान बहुत खुश होता है और खुशी में ख़ूब नाचता-कूदता है और उस शैतान को गले लगाकर कहता है कि शाबाश! जीते रहो, तुमने ख़ूब काम किया और यह काम सब बुरे कामों से बेहतरीन काम है।

फ़ायदा— मुसलमान भाइयो और बहिनो! इस क़िस्से से सबक़ सीखो और आपस में लड़ाई-झगड़ा करके शैतान को खुश न करो।

एक दिन दुख़्तर के घर हज़रत उमर,
इत्तफ़ाकन जो गये वह खुश सयर।

घर में था दुख़्तर के फ़ाके का ज़हूर,
और थी दो दिन के फ़ाके से वह चूर।

जोशे उल्फ़त से अपने बाद पास,
जा के बेटी दुख़्तरे ख़स्ता हवास।

नागहां शौहर भी आया उसका घर,
वो रही बेटी उसी खुश सयर।

अपने शौहर से न की जब उसने बात,
देखकर नाखुश हुए वह बासिफ़ात।

अपनी दुख़्तर के तमाचा मारकर,
उस से यूँ कहने लगे हज़रत उमर।

जब तलक शौहर न बख़्शेगा तुझे,
खुल्द में मुश्किल है मिलनी जा तुझे।

शौहर अगर हो अपना मोहताजो फ़क़ीर,
ताज सर का उसको जानो और अमीर।

कह के यह घर आये वह आली सिफ़ात,
फिर कई दिन तक न की दुख़्तर से बात।

बीवियों शौहर का रुतबा देखियो,
जानो दिल से उसका कहना मानियो।

औरतों की नाशुक्री

बाज़ औरतें-मर्दों से ख़र्च बहुत माँगती हैं, न हलाल का ख़याल न हराम की परवाह और यही कहती हैं कि हमारी हालत तो दोज़ख़ की-सी है। जैसे उस का पेट नहीं भरता और यही कहती रहती है कि मुझे और ज़्यादा दो। इसी तरह रुपया, कपड़े, ज़ेवर वग़ैरा से हमारा पेट ही नहीं भरता। कितना भी दो, सब ख़र्च हो जाता है। एक लतीफ़ा है कि—

औरतों के पास चाहे कितने ही कपड़े हों मगर यही कहती हैं, क्या है दो चीथड़े और जूतों के ! दो-तीन जोड़े होंगे तो कहेंगी— क्या हैं दो लीतरे, और बर्तन कितने ही हों, क्या हैं दो ठीकरे !

एक हदीस शरीफ़ में है कि तुम औरतों के साथ उम्र भर सलूक और भलाई करते रहो, फिर कोई बात उनकी मर्ज़ी के खिलाफ हो जावे तो साफ़ यह कहेंगी, मैंने तुमसे भलाई नहीं देखी। रोते ही आयी, रोते ही रही और रोते ही रोते मर जाऊँगी। माँ-बाप ने मेरी क़िस्मत फोड़ दी, मुझे ऐसी आग में झोंक दिया। आह अफ़सोस ! मेरी शादी ऐसे घर में की। ग़रज़ कि सारी उम्र के सलूक और एहसान को एक मिनट मे ख़त्म कर देती हैं और अपने शौहर की शिकायत और अल्लाहतआला की नाशुक्री करती हैं।

करती थीं उसमान की दुख़्तर निहा,
अपने शौहर की शिकायत खुद बयां।

उड़ते-उड़ते यह खबर पहुँची वहाँ,
सुन के उसमान आये दुख़्तर के यहाँ।

हो ख़फ़ा उस के तमाचा मारकर,
यह कहा फ़रमाते हैं खैरूल बशर।

अपने शौहर का गिला जो ज़न करे,
हक़ तआला उस को जा दोज़ख में दे।

जब बाप से अपने दुख़्तर ने खबर,
यह सुनी तौबा की इस से सरबसर।

बीबियों तुमको मिले जन्नत में घर,
गर चलो उन बीबियों की चाल पर।

सब्र और शुक्र से बनता है काम,
शौहरों की तुम करो ताअत सदाम।

अपनी आबरू बचाने वाली औरत पर दोज़ख़ हराम है

हादीए बरहक़ मोहसिने आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो औरत अपने मर्द के लिए बनाओ सिंगार करे उसको दो बरस की इबादत करने का सवाब मिलेगा और जो औरत बेइजाज़त अपने शौहर के घर से बाहर जाये तो ज़मीन व आसमान और फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं, जब तक वह वापस न आये। और जो औरत ग़ैर मर्द को अपना बदन दिखाती है तो उसकी हर बद-नज़र के बदले उस औरत पर तीन सौ साठ लानतें बरसती है और जो औरत ग़ैर मर्द से पर्दा करेगी और अपने बदन को छुपायेगी उसको दोज़ख न जलायेगी और जो औरत अपने मर्द के पीछे भी अपनी आबरू बचायेगी उस पर दोज़ख हराम है। और जब कोई औरत अपने मर्द को दुनिया में तकलीफ़ देती है तो जन्नत में जो हूरें मर्द को मिलेंगी वह कहती हैं कि खुदा तुझे ग़ारत करे। यह तो तेरे पास कुछ दिनों का मेहमान है, बहुत जल्दी हमारे पास आ जायेगा।

जब उमर ने ब्याह दुख़तर का किया,
वक़्ते रुख़सत के उससे यह कहा।
दिल दुखाना अपने शौहर का न तू,
याद रखना इसको दिल से माहेरू।

हुज्जतो तकरार की करना न खू,
रूबरू आँखें कभी करना न तू।
हुक्म शौहर का बदिल करना क़बूल,
और कभी होना न तू उससे मलूल।

सब्र करना रंज व मेहनत हो अगर,
ताकि बदले में मिले जन्नत में घर।
गर ख़ता की इसमें तूने महजबीं,
उम्र भर मैं तुझको देखूँगा नहीं।

तलाक़ माँगने का अज़ाब, महर माफ करने का सवाब

रहमते आलम हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो औरत अपनी खुशी से अपना मेहर माफ़ कर देती है, अल्लाहतआला उससे खुश होता है और मैं उसकी शिफ़ाअत करूँगा और वह जन्नत में जायेगी। और जिस औरत का मर्द ग़रीब हो और वह औरत अपने माल से एक दिरहम भी उस पर ख़र्च करेगी तो उसको सात हज़ार दिरहम अल्लाह की राह में ख़र्च करने का सवाब मिलेगा। इस तरह समझो कि अगर कोई औरत अपने ग़रीब शौहर पर अपने माल से एक रुपया ख़र्च करे तो उसको सात हज़ार रुपये ख़र्च करने का सवाब मिलेगा और जब कोई बीवी अपने घर में झाड़ू देती है तो उसको काबे शरीफ़ में झाड़ू देने के बराबर सवाब मिलता है, और—

इरशाद फ़रमाया —

हुज़ूर (स०) ने कि जो औरत बिला सख़्त मजबूरी के तलाक़ माँगे, उस पर जन्नत की खुशबू हराम है। और औरतों को बिला सख़्त मजबूरी के तलाक़ न दी जाये। क्योंकि अल्लाहतआला ऐसे मर्दों और औरतों को पसन्द नहीं करता जो बहुत से मज़े चखने वाले हों।

फ़ायदा— सख़्त मजबूरी यह है कि औरत बदकार हो जाये या कोई और ऐसी बात हो जाये कि जिसकी वजह से इत्तफ़ाक़ और निबाह न हो सके तो तलाक़ देना बहुत अच्छा है। बिला सख़्त मजबूरी के तलाक़ देने से अर्श भी काँप जाता है।

बीवियों इस हाल को सुनो ग़ौर से,
ख़िदमते शौहर करो हर तौर से।
रंज व राहत साथ उसके सब सहो,
जो रज़ा शौहर की हो उस पर चलो।
ज़न रहे दोज़ख़ में वह जलती सदा,
जिससे शौहर का न हक़ होवे अदा।
ताअते शौहर में रहना चाहिए,
दुःख भी हो हासिल तो सहना चाहिए।

हक़ ने दी है मुस्तफ़ा को यह ख़बर,
ज़न मरे शौहर के जो फ़रमान पर।
बादे मुर्दन के मैं जन्नत उसको दूँ,
साथ तेरे मग़फ़िरत उस की करूँ।

शौहरों को जान से जानो अज़ीज़,
जानो दिल कुरबाँ करो ऐ बातमीज़।
नेक ज़न हर शख़्स को अल्लाह दे,
दूर सब को सोहबते बद से रखे।

औरतों की इज़्ज़त और शहादत

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

ऐ औरतो! क्या तुम इस बात पर खुश नहीं हो कि जब तुममें से कोई अपने शौहर से हामला होती है और उसका शौहर उस से राज़ी हो तो उस को ऐसा सवाब मिलता है कि जैसा अल्लाह के वास्ते रोज़ा रखने वाले को और सारी रात इबादत करने वाले को मिलता है। और जब उसको दर्दे-ज़ेह शुरू होता है तो उस की आँखों की ठण्डक के लिए अल्लाहतआला ने ऐसा सामान छुपा कर रक्खा है कि ज़मीन व आसमान के रहने वालों को उसकी ख़बर नहीं। और जब वह बच्चा जनती है और बच्चे को दूध पिलाती है तो बच्चे के एक घूँट दूध पीने पर और हर बार चूसने पर उसको एक नेकी मिलती है और बच्चे की वजह से उसको रात में जागना भी पड़े तो उसको सत्तर ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है। और औरत को शुरू हमल से लेकर बच्चे के जनने और दूध छुड़ाने तक ऐसा दरजा मिलता है जैसा इस्लाम की हिफ़ाज़त करने वाले मुजाहिद को सरहद पर रहने से मिलता है और अगर औरत इस दर्मियान में मर जाये तो उसको शहादत का दरजा मिलता है। (इब्ने माजा)

बाज़ सूरतों में निकाह करना दरुस्त नहीं

हज़रत अबुसईद (रज़ी०) से रिवायत है कि—

एक शख़्स अपनी बेटी को रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमत में लाया और अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह! यह मेरी बेटी निकाह नहीं करती। हुज़ूर ने उस लड़की से फ़रमाया कि निकाह के बारे में अपने बाप का कहना मानो। उस लड़की ने कहा— या रसूल अल्लाह! क़सम है उस ख़ुदा की जिसने आपको